ब्रह्म चेतना

भगवान परशुराम मन्दिर एवम् धर्मशाला,
मंडी गोबिन्दगढ़ (पंजाब) भारत द्वारा
मन्दिर में मूर्ति स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में
दिनांक 11 मई 2005 को प्रकाशित
स्मारिका का ई–संस्करण

संपादन :
वेद प्रकाश सद्दी
मंडी गोबिन्दगढ़।
फोन : निवास 01765–241549
मोबाईल : 94172–41549

संपादन सहयोग :
महेश बातिश
मंडी गोबिन्दगढ़।
फोन : निवास 01765–506521
मोबाईल : 98881 71331
email : maheshbatish@rediffmail.com

अनुक्रमणिका

सम्पादकीय

संदेश

भगवान श्री परशुराम एक संक्षिप्त जीवन–चरित्र

गोवंश का महत्व

गाय का वैज्ञानिक महत्व

चेतावनी

भगवान् परशुराम

वर्तमान दशा तथा ब्राह्मण वर्ग

प्रार्थना

ब्राह्मण से ख़िताब

जीवन क्या है?

अथ स्वास्तिवाचनम्

प्रथम स्वाधीनता संग्राम के नायक वीर शिरोमणि मंगल पांडे

भृगु–परिवार

महान् क्रान्तिकारी पं. रामप्रसाद बिस्मिल

क्रोधी ही नहीं महादानी भी थे परशुराम

मैं कौन हूँ।

इतना असहाय देश?

आरती श्री परशुराम जी की

महामना मदन मोहन मालवीय जी

ब्राह्मण आरक्षण ऐलाने जंग

श्री शिवस्तुति

श्री परशुराम चालीसा

बाबा बन्दा बहादुर जी

एकजुट होना होगा

अमर शहीद भाई मती दास, भाई सती दास, भाई दियाल दास

ब्राह्मण

ब्रह्मचर्य

स्वस्थ जीवन

सत्य उपदेश

महखाना–ए–मारफत

अन्तरात्मा की सच्ची प्रार्थना

भगवत उपदेश – श्री कृष्ण उवाच

भगवान! भगवान!

उन्नति का मूल मन्त्र– ब्रह्मचर्य

उपनिषद् ज्ञान

ब्राह्मणों का कर्त्तव्य

आदर्श सद्वाक्य

सुखी रहने का सुगम साधन

प्रेरणाप्रद दोहे

शरणागति

इन्सान

गज़ल

मेरा देश

ई–संस्करण प्रस्तुति : महेश बातिश, मोबाईल : 0091 98881 71331

गोमूत्र

ब्रह्मा ब्राह्मण्ड ब्राह्मण

व्रतों से अधिक लाभ कैसे लें?

भगवती माता रेणुका जी

मंडी गोबिन्दगढ़ इतिहास की नजर में

गाँव भैरोंपुर (भगवान परशुराम मन्दिर)

ब्राह्मण कौन?

भक्ति–शक्ति के प्रतीक भगवान् श्री परशुराम

सम्पादकीय

भगवान परशुराम चैरीटेबल ट्रस्ट की दिनांक 25.3.2005 की बैठक में मूर्ति स्थापना तथा परशुराम जयन्ती के संदर्भ में एक स्मारिका निकालने का निर्णय लिया गया। इसके लिए मेरे नाम का सर्वसम्मति से अनुमोदन हुआ कि आप इस स्मारिका को निकालने की जिम्मेवारी संभालें। न तो मैं लेखक हूँ, न ही विद्वान इसलिए यह जिम्मेवारी संभालते हुये थोड़ा डर लग रहा था कि जो काम पहले कभी नहीं किया क्या उसे सफलतापूर्वक कर पाऊँगा? खैर, भगवान का स्मरण कर मैनें यह जिम्मेवारी संभाल ली। दिन–रात मेहनत करके पुस्तकों से नोट लिये। कई विद्वानों से चर्चा की, कई धार्मिक ग्रन्थों का सहारा लिया। इसमें कई दिक्कते भी आई। फिर भी भगवान की कृपा से इस कार्य को पूर्ण करने का प्रयत्न किया।

इस स्मारिका में पाठकों के लिए अच्छे लेख देने का प्रयत्न किया है ताकि समाज को, विशेष रुप से ब्राह्मण बन्धुओं को लाभ हो सके तथा उन्हें आत्मचिन्तन का मौका मिले। जहां–जहां से मुझे अच्छे लेख और कवितायें मिली मैनें इसमें शामिल करने की कोशिश की है। पाठकों से नम्र निवेदन है कि लिखते समय या सम्पादन करते समय यदि कोई त्रुटि रह गई हो तो अनजान समझकर क्षमा करें। मैं आपको विश्वास दिलवाता हूँ कि इस स्मारिका से आप निराश नहीं होगें। स्मारिका में श्री महेश बातिश ने मुझे बहुत सहयोग दिया जिसके लिए मैं

मन से उनका आभारी हूँ। इस स्मारिका से ज्यादा से ज्यादा लोग लाभान्वित हो सके इसके लिए श्री महेश बातिश ने मुझे यह स्मारिका इंटरनैट पर भी उपलब्ध करवाने के लिए सहयोग देने का विश्वास दिलवाया है। अंत में मैं भगवान परशुराम चैरीटेबल ट्रस्ट के सभी सदस्यों के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने यह जिम्मेवारी मुझे सौंपी।

– वेद प्रकाश सद्दी
महासचिव
भगवान परशुराम चैरीटेबल ट्रस्ट
मंडी गोबिन्दगढ़।
फोन : निवास 01765–241549
मोबाईल : 94172–41549

श्री श्री 1008 स्वामी बुद्धपुरी जी महाराज
डेरा हरीसर (किला रायपुर वाले)

संदेश

हमारे समस्त शुभ कर्म ईश्वर का ही पूजन हैं। शुभकर्मों में से भी जो कर्म हम विशेषरुप से ईश्वर के लिए ही करते हैं उनकी तो कोई तुलना ही नहीं। भगवान सब ओर, सब कुछ में विद्यमान होकर सर्वव्यापक, सर्वनियन्ता, सर्वाधार, सर्वशक्तिमान तथा अद्वितीय हैं। 'सर्वस्य चाहम् हृदि सन्निविष्टो मतः स्मृतिर्ज्ञानापेहनम् चं। वेदैश्च सर्वेरहमेव वेदो वेदान्तकृतदवेद् विदेम चाऽहम्' भगवान सबके हृदय में स्थित हैं और उनके होने से ही स्मृति, ज्ञान तथा दोषों का नाश होता है। वेदों में एकमात्र ईश्वर ही विद्यमान हैं, वेदों द्वारा ईश्वर के बारे में ही जाना जाता है तथा ईश्वरीय ज्ञान को पूर्णरुप से जानने वाले भी एकमात्र ईश्वर स्वयं ही हैं।

ज्ञान ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ विभूति हैं। श्रेष्ठ ज्ञान से प्रेरित होने पर ही सब कर्म शुभफल देते हैं। ज्ञान की प्रचण्ड अग्नि में निकृष्ट कर्मफल भस्म भी हो जाते हैं। श्रेष्ठ ज्ञान का प्रचार, प्रसार हो इससे अच्छा और क्या हो सकता है। 'सब सुखी रहें, सब स्वस्थ रहें, सब भद्र हों तथा किसी को कोई दुख न हो' इस उद्देश्य की प्राप्ति श्रेष्ठ ज्ञान के प्रचार द्वारा ही संभव है।

भगवान के मंदिर का निर्माण तथा मूर्ति स्थापना अत्यन्त ही पुण्य का

कार्य हैं। जो सर्वत्र विद्यमान हैं उनके लिए प्रतीक रुप से मंदिर का निर्माण करके हम उन ईश्वर के प्रति अपनी आस्था व्यक्त करते हैं। भगवान हमारे ऐसे शुभ प्रयासों द्वारा अवश्य ही प्रसन्न होते हैं। ईश्वर की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए ही तो समस्त सृष्टि प्रयासरत है। भगवान सबका कल्याण करें, यही हमारी मंगलकामना है।

नृत्य गोपाल दास
राम मन्दिर न्यास अध्यक्ष
अयोध्या

संदेश

।। भगवान श्री परशुराम की जय।।

परात्पर पूर्णब्रह्म पुरुषोत्तम निर्गुण–निराकार भगवान धर्म की रक्षा एवम् अधर्म का विनाश सगुण साकार रुप में करते हैं। 'यदा यदा हि धर्मस्य .... संभवामि युगे युगे'' असंख्य भगवान के अवतार हैं। उनमें चौबीस अवतार प्रधान हैं।

भगवान श्री परशुराम जी का अवतार दुष्ट, अत्याचारी, प्रजा पीड़क आततायी राजाओं का एवं आसुरी प्रवृत्ति वाले मनुष्यों का विनाश करने के लिए हुआ।

भगवान ने शास्त्रों के द्वारा धर्म की अभिवृद्धि की एवं शस्त्रों के द्वारा खल एवम् राक्षसी प्रवृत्ति के लोगों का विनाश किया। प्रतिवर्ष भगवान श्री परशुराम जी की जयन्ती मनायें, शस्त्र पूजन करें एवम् शास्त्रीय चर्चा करें। पत्रिका एवम् स्मारिका को सफलता की कामना के साथ–साथ।

डा. चरणदास शास्त्री

अध्यक्ष

श्री ब्राह्मण सभा पंजाब

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यन्त सुखद अनुभूति हुई कि श्री ब्राह्मण सभा पंजाब की उपशाखा श्री ब्राह्मण सभा गोविन्दगढ़ ब्रह्मवर्चस्व के प्रसार हेतु जी.टी. रोड़ गोविन्दगढ़ में नवनिर्मित विशाल भगवान परशुराम मन्दिर में भगवत्प्रतिमा–स्थापना तथा प्रान्तीय परशुराम जयन्ती महोत्सव के शुभावसर पर एक स्मारिका प्रकाशित कर रही है। निःसंदेह परमब्रह्म की प्रथम अभिव्यक्ति ब्राह्मण है जो वर्तमान में अपने वर्चस्व को सुरक्षित रख पाने में असफल रहा है। आवश्यकता है उसका पुनः विकास करने की। गोविन्दगढ़ में स्थापित यह ज्ञान–केन्द्र इस दिशा में अग्रसर होकर मार्गदर्शन करे तथा ''जीविका है जीवन के लिए और जीवन है जगदीश्वर के की प्राप्ति के लिए'' की भावना को अपने जीवन का मूलमंत्र मानकर ब्राह्मण समाज राष्ट्रोत्थान के प्रशस्त कार्य में अमूल्य सहयोग दे। इसी के साथ हार्दिक मंगल कामनायें।

देवी दयाल पराशर

अध्यक्ष

भगवान परशुराम चैरीटेबल ट्रस्ट

संदेश

भारत एक ऐसा देश है जिसका इतिहास गौरवपूर्ण रहा है। बाकी दुनिया जब जंगलों में रहती थी उस समय भारत उन्नति के शिखर पर था। सारे विश्व से लोग शिक्षा प्राप्त करने के लिए यहां आते थे। उस समय भारत को जगद्गुरु का दर्जा प्राप्त था। जो भी भारत में आया यहां की संस्कृति को देखकर प्रभावित हुये बिना नहीं रहा। यह सब ब्राह्मण समाज की देन थी। ब्राह्मण समाज एक ऐसा वृक्ष है जिसकी छाया में बैठकर सब सुख प्राप्त करते हैं।

अपने गौरवमय इतिहास को भूलना अच्छा नहीं। जो अपने इतिहास को भूलता है वह कभी उन्नति नहीं कर सकता। आज हम क्यों पिछड़ रहे हैं, इस पर विचार करना आवश्यक है। दुनियां हमसे बहुत आगे निकल चुकी है। सदियों हम मुसलमानों और अंग्रेजों के गुलाम रहे। ऐसा क्यों हुआ? क्या कभी आपने इस पर विचार किया है? आओ आपसी भेदभाव को मिटाकर एक नये इतिहास की रचना करें। कल हमारा है। आज हर क्षेत्र में ब्राह्मण युवक अपनी प्रतिभा के झंडे गाड़ रहे हैं। आरक्षण से मत घबराओ। बुद्धिमान ही आगे निकल सकता है

जो कि हमारे में है। बस थोड़ी हिम्मत की आवश्यकता है। याद करो अपने पूर्वजों को जिन्होंने हजारों वर्ष पहले दुनियां को रास्ता दिखाया था। मुझे पूर्ण विश्वास है कि मंजिल दूर नहीं। हम आगे बढ़ेंगे। ब्राह्मणों जागो, भारत तुम्हारी ओर देख रहा है। उनके विश्वास को बनाये रखो। ट्रस्ट की ओर से यह स्मारिका निकाली जा रही है। इससे एक नई क्रान्ति आयेगी। समाज में विश्वास के लिए यह प्रथम प्रयास श्री वेद प्रकाश सद्दी द्वारा किया जा रहा है। आशा है इसे सहर्ष स्वीकार किया जायेगा।

जय भगवान परशुराम।

प्रि. तिलकराज शर्मा
महामन्त्री
श्री ब्राह्मण सभा पंजाब

संदेश

श्री ब्राह्मण सभा पंजाब, शाखा मंडी गोबिन्दगढ़, जिला फतेहगढ़ साहिब ने जी. टी. रोड़ पर एक भव्य एवम् सभी सुख–सुविधाओं से सम्पन्न ब्राह्मण भवन का निर्माण कर तथा वहां भगवान परशुराम जयन्ती महोत्सव के शुभावसर पर भगवान परशुराम की मूर्ति प्रतिष्ठा के सफल आयोजन पर जो स्मारिका प्रकाशित करने का निर्णय किया है– वह मेरे लिये हर्ष का विषय है। इसके लिए मण्डी गोबिन्दगढ़ का समस्त ब्राह्मण समुदाय तथा वहां की शाखा के प्रधान श्री देवी दयाल पराशर बधाई के पात्र हैं। निःसंदेह यह प्रयास पंजाब की सभी ब्राह्मण सभाओं के लिए प्रेरणास्रोत सिद्ध होगा।

इस अवसर पर सबको मेरी हार्दिक शुभकामनायें।

श्रीमति परवीन दत्त
अध्यक्ष श्री ब्राह्मण सभा पंजाब
(महिला विंग)

संदेश

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि भगवान परशुराम चैरीटेबल ट्रस्ट परशुराम मन्दिर में मूर्ति स्थापना तथा परशुराम जयन्ती के उपलक्ष्य में एक स्मारिका निकाल रहा है। यह अत्यन्त हर्ष का विषय है, इसके लिए मेरी हार्दिक शुभकामनायें।

समाज में आज कुरीतियों का बोलबाला है। दहेज के नाम पर हजारों बहनें आज मौत को गले लगा रही हैं। बिना कसूर आग में जलाई जा रही हैं। क्या ऐसा कर समाज उन्नति कर सकेगा? कदापि नहीं। आज महिला जाग रही है। जुल्म सहने के बजाय उसका मुकाबला कर रही है। कौन सा ऐसा काम है जो महिलाओं द्वारा नहीं किया जा रहा। समाज को चाहिए कि महिलाओं को पूर्ण सम्मान दे, तभी समाज की सर्वांगीन उन्नति संभव है। मैं ब्राह्मण महिलाओं को बधाई की पात्र मानती हूं जो समाज में अपना नाम पैदा कर रही हैं। महिलाओं को चाहिये कि बच्चों को अच्छे संस्कार दें ताकि आगे चलकर समाज में वे अपना नाम कर सकें तथा देश का नाम रोशन करें। एक बार फिर स्मारिका के लिए शुभकामनायें। जय भगवान परशुराम।

ओऽम् नमो भगवदे वासुदेवाय

बनारसी दास

अध्यक्ष

ब्राह्मण सभा मंडी गोबिन्दगढ़।

संदेश

भगवान परशुराम चैरीटेबल ट्रस्ट मंडी गोबिन्दगढ़ की ओर से मूर्ति स्थापना के पावन अवसर पर स्मारिका प्रकाशन हेतु शुभकामनायें।

इस अवसर पर सभी ब्राह्मण भाईयों से मेरी पुरजोर अपील है कि संगठन को मजबूत बनाने के लिए तन, मन और धन से सहयोग करें और प्रण करें कि हम सच्चे मन से भगवान के दिखाये मार्ग पर चलेंगे। यह ट्रस्ट शहर निवासियों की आवश्यकताओं को भी पूरा करेगा और ब्राह्मण समाज के लिए भी वरदान साबित होगा। ट्रस्ट द्वारा मंदिर एवम् धर्मशाला का समाज के श्रेष्ठ बन्धुओं ने जो पौधा लगाया है वह आज वृक्ष बनकर फल फूल रहा है। ब्राह्मण संगठन बनाकर बहुत कुछ करना शेष है। अनेक कार्यक्रम समाज सेवा तथा उन्नति के लिए किये जा रहे हैं। ब्राह्मण का शब्द सुनते ही एक गौरव का अनुभव होने लगता है। समाज के ऋषि–मुनियों ने एक जिम्मेवारी ब्राह्मणों को सौंपी है कि हम लोग बौद्धिक रुप से समाज को विकसित करके अपनी महान संस्कृति की परम्पराओं

को भौतिकतावाद के दौर से बचाकर रखें। अन्त में ट्रस्ट और ब्राह्मण बन्धुयों ने जो काम किया है उसके लिए शुभकामनायें देता हूं। भगवान करे यह एकता हमेशा के लिए बनी रहे, मेरी यही हार्दिक इच्छा है। जय भगवान परशुराम।

प्रोप.: गणपति सिल्क इम्पोरियम
पोस्ट आफिस रोड़, मंडी गोबिन्दगढ़।
मोबाईल : 98155 55451, कार्यालय 257233
शोरुम 252733 निवास 256451

गायत्री योग संस्थान आश्रम
न्यू शास्त्री नगर, मंडी गोबिन्दगढ़ (पंजाब)
दूरभाष : 01765–257597 मोबाईल : 98152 51702

संदेश

जब जब धरती पर पाप, अत्याचार, अन्याय, अनीति व अधर्म बढ़ता है, तब तब धरती पर अवतारी चेतना आती है और धर्म की नीति की स्थापना करती है। ऐसे ही एक अवतारी चेतना के रुप में भगवान परशुराम जी का आगमन हुआ। उन्होंने अपने फरसे से अन्याय, अत्याचार, अधर्म का समूल नाश कर धर्म की स्थापना की। आज भी समाज में दुष्टचिंतन व दुष्विचार फैला हुआ है। इसे सद्ज्ञान व सद्विचार रुपी फरसे से नष्ट करना हम सभी का परम कर्त्तव्य है, तभी मानव में देवत्व का उदय व धरती पर स्वर्ग अवतरण होगा।

भगवान परशुराम मन्दिर व धर्मशाला व्यक्ति, परिवार व राष्ट्र निर्माण का एक सशक्त केन्द्र बने, यहां से सद्ज्ञान का आलोक चारों तरफ फैले ऐसी हमारी मंगल शुभ कामना है।

स्वामी राजकुमार भारती
गायत्री योग संस्थान ट्रस्ट (रजि.)
मंडी गोबिन्दगढ़

पंडित पुष्कर मल
मुख्य पुजारी
भगवान परशुराम चैरीटेबल ट्रस्ट
(मन्दिर व धर्मशाला)

संदेश

भगवान परशुराम जयन्ती तथा मूर्ति स्थापना के पावन अवसर पर हार्दिक शुभकामनायें। इस उपलक्ष्य में यह अति प्रसन्नता का विषय है कि इस अवसर पर स्मारिका का विमोचन हो रहा है।

सर्वे भवन्तु सुखिनाः सर्व सन्तु निरामया।
सर्व भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुखभाग्भवेत।।

भगवान श्री परशुराम
एक संक्षिप्त जीवन–चरित्र

भगवान श्री परशुराम का जीवन–चरित्र तथा कथा अकथनीय हैं। उन के चरित्र का पूर्ण रूप से वर्णन करना मानव के वश की बात नहीं। उन का चरित्रवृत्त अनुपम है। श्री परशुराम दशावतारों में गिने जाते हैं तथा अष्ट चिरंजीवी ऋषियों में भी इनकी गिनती की जाती है। रामायण, महाभारत तथा अनेक पुराणों में इनका वर्णन मिलता है। परन्तु दुख की बात है कि अधिकांश लोग इनके बारे में भगवान राम के सीता स्वयंवर में शिव धनुष तोड़ने के पश्चात् राम–परशुराम संवाद से अधिक नहीं जानते। इस लेख में इनके जीवन की संक्षिप्त रूप से कुछ घटनाएं दी गई है जो कि महाभारत तथा ब्रह्म वैवर्त्त पुराण पर आधारित है।

महर्षि भृगु जगत् सृष्टा ब्रह्मा जी की त्वचा से उत्त्पन्न हुए थे। वे वेदों के पारगंत विद्वान कर्मकाण्ड के अनुपम ज्ञाता थे। भृगु के पिता च्यवन भी पिता के समान तेजस्वी और मेधावी थे। महर्षि च्यवन के पुत्र उर्व ने भी अपने पिता के यश में वृद्धि की। उर्व के पुत्र महामति रिचिक थे। उन्होनें अपने तप के द्वारा अनेक सिद्धियां प्राप्त की। उन दिनों राजा कुशिक के पुत्र गाधि की कन्या सत्यावती अपनी सादगी, सुन्दरता तथा सरलता के कारण बहुचर्चित थी। महर्षि रिचिक के मन में उस से विवाह करने की इच्छा प्रकट हुई। उन्होनें राजा गाधि के पास जा कर सत्यावती से विवाह करने का अनुरोध किया। राजा गाधि ने

महर्षि रिचिक के तप बल की परीक्षा लेने के पश्चात् अपनी एकमात्र कन्या सत्यावती का विवाह महर्षि रिचिक से कर दिया। कुछ समय के बाद महर्षि ने दो चरू तैयार कर अपनी पत्नी को दिये और कहा कि यह तुम्हारे और तुम्हारी माता के लिए हैं। प्रथम चरू के पान करने से ब्रह्मतेज से युक्त एक परम तेजस्वी पुत्र होगा तथा दूसरे का पान करने से क्षात्रतेज निहित होकर ब्राह्मण परम तेजस्वी क्षात्रधर्म में प्रवीण पुत्र होगा। कुछ समय बाद गाधि अपनी पत्नी को साथ ले तीर्थ यात्रा करके महर्षि रिचिक के आश्रम में आए तो माता ने पुत्री का चरू अज्ञानवश स्वयं ग्रहण कर लिया तथा अपना चरू पुत्री को खिला दिया। उचित समय पर भगवान के आशीर्वाद से महर्षि रिचिक को एक परम तेजस्वी पुत्र हुआ जिसका नाम उन्होंने जमदग्नि रखा। उधर गाधि को विश्वरथ उत्त्पन्न हुए जो अपने तप के प्रभाव से ब्रह्मर्षि पद को प्राप्त हुए। उनका नाम विश्वामित्र हुआ। जमदग्नि का विवाह रेणुका से सम्पन्न हुआ और उनके यहां श्री परशुराम जी उत्पन्न हुए। उनके चार बड़े भाई थे, उनके नाम ववसु, वसुभान, विषदसु, वसुमेण थे।

परशुराम जी के बचपन का नाम राम है। बालक परशुराम अस्त्र–शस्त्र विद्या में बहुत चतुर था। वह बाणों से बादलों को टुकड़े–टुकड़े कर देता था, आकाश से गिरती हुई बिजलियों को खण्ड–खण्ड कर देता था, अपनी शक्तिशाली भुजाओं द्वारा समुन्द्र की ऊँची–ऊँची लहरों को पीछे धकेल देता तथा सूर्य को

थाम लेता।एक दिन जमदग्नि जी ने कहा कि पुत्र ब्राह्मण के लिए तप करना धर्म है। आप भी तप किया करो। राम देवाधिदेव महादेव की आराधना करने के लिए कैलाश पर्वत पर चले गये। इनके तप से प्रसन्न होकर शंकर जी ने अनेक अस्त्र–शस्त्रों के साथ एक दिव्य परशु भी राम को प्रदान किया जो शंकर जी के तेज से बना हुआ था। इसे धारण करने के कारण इनका नाम राम से परशुराम हो गया।

जमदग्नि उनके पिता भी थे और गुरू भी। इसलिए वह उनकी आज्ञा का पालन करने तथा सेवा में सदैव तत्पर रहते। पिता जी उनके आज्ञा पालक स्वभाव के कारण उनसे अति प्रसन्न रहते। माता भी उनसे अधिक प्रेम करती थी।

एक बार माता रेणुका स्नान करने हेतु यमुना तट पर गई। जब वह आश्रम आ ही रही थी तभी दैवयोग से उनकी दृष्टि जलक्रीड़ा करते चित्ररथ पर पड़ी। उस ऐश्वर्यशाली राजा को देख देवी रेणुका का मन चंचल हो उठा। इस मानसिक विकार के कारण उनके मुख की कान्ति नष्ट हो गई। श्रीहीन होकर उद्विग्न मन से वे आश्रम में लौटी। महर्षि जमदग्नि उनकी दशा को देखकर चकित हुए और स्माधिस्थ होकर उनकी दशा का वास्तविक कारण उन्होंने जान लिया। उनका मन रोष से भर गया। उन्होनें अपने पुत्रों को बुलाया और बारी–बारी आज्ञा दी कि अपनी माता का वध कर दो। परन्तु किसी ने भी ऐसा

नहीं किया। जमदग्नि इसे सहन न कर सके और शाप दिया कि उनकी विचार शक्ति नष्ट हो जाये और वह खग–मृग की भांति जड़ हो जायें। इसी बीच परशुराम वन से लौटे। आश्रम मे स्थिति को देखकर वह परिस्थिति का आंकलन कर रहे थे कि क्रुद्ध पिता ने उन्हें अपनी मां को मार डालने की आज्ञा दी। उन्होंने तुरन्त ही आज्ञा का पालन किया। अपने तीव्र धार वाले परशु से अपनी मां का सिर काट दिया। जिस जगह उन्होंने अपनी माता का सिर काटा उसका नाम रूण्ड कटा पड़ने के पश्चात् एनकुटा हो गया।

पिता की आज्ञा पालन के पश्चात् हाथ जोड़कर खड़े देख पिता का क्रोध शांत हो गया और वे बोले, 'पुत्र ! तुमने मेरी आज्ञा का पालन करते हुए कठिन कार्य किया है, जिससे मैं अति प्रसन्न हूँ। मैं तुम्हारी सब इच्छाएं पूर्ण करना चाहता हूँ, तुम मुझसे वर मांगो।' परशुराम ने पिता को प्रसन्नचित देखकर उनकी जय बुलाई तथा वर मांगा, 'आपकी कृपा से मेरी माता जीवित हो जाये तथा उनका मानसिक पाप नष्ट हो जाये। माता को इस काण्ड का पता न चले और मेरे साथ पहले की तरह प्यार करे। मेरे चारों भाई चेतन हो जायें और ब्रह्मतेज से युक्त हों। आपकी अनुकम्पा से मैं युद्ध में अजय रहूँ, कालजयी बनूं तथा दीर्घायु प्राप्त करूं।' इन वरों के मांगने पर जमदग्नि ने सारी इच्छाएं पूर्ण की। माता पुनः जीवित हो गई, सभी भाई स्वस्थ हो गये। माता वे सब पुत्रों को प्रसन्न मन से गले लगाया।

ऐसी लोमहर्षक घटना से सम्पूर्ण कुल का नाश हो सकता था, परन्तु परशुराम जी की श्रेष्ठ बुद्धि से सब कुछ होकर भी पुनः पूर्ववत हो गया। आश्रम में पुनः शान्ति आ गई।

उन्हीं दिनों अनूप देश के राजा कृतवीर्य का पुत्र सम्राट कार्तवीर्य जमदग्नि आश्रम के निकट वन मे शिकार खेलने आया और वन्य पशुओं के आखेट से थक कर सूर्यास्त के समय ऋषि के आश्रम के निकट पड़ाव डाला तथा बिना कुछ खाये पीये रात्रि व्यतीत की। अगले दिन वह सरोवर में स्नान करने के पश्चात् महर्षि के आश्रम में गया। रेणुका ने कांतिमति कपिला गौ की कृपा से राजा और उसकी सेना का अनुपम सत्कार किया। राजा को बड़ा विस्मय हुआ कि ऋषि के आश्रम में ऐसे स्वादिष्ट पदार्थ कहां से आये? उसने अपने मंत्री को उसकी खोज करने के लिए भेजा। मंत्री ने खोज की तथा राजा को बतलाया कि आश्रम में तो अग्निकुंड, अन्न, पुष्प, फल, समिधा, कृष्णचर्म तथा शिष्य समुदाय के अतिरिक्ति धन सम्पति कुछ नहीं, परन्तु आश्रम में एक कपिला गौ है जो साक्षात् लक्ष्मी के सदृश है। यह स्वादिष्ट पदार्थ उसकी कृपा से प्राप्त होते है। राजा ने कृतघ्नता प्रदर्शित करते हुए कपिला गौ को साथ ले जाने का प्रयत्न किया। असफल होने पर उसने बछड़े का हरण कर लिया। परशुराम जी के आश्रम लौटने पर माता ने सारी घटना बतलाई। परशुराम जी को बहुत क्रोध आया। उन्होंने राजा को युद्ध के लिए ललकारा तथा भीष्ण युद्ध के पश्चात्

उसकी दोनों भुजाएं काट दी तथा बछड़े को साथ ले आये। कार्तवीर्य के पुत्रों को पिता का वध सहन न हुआ और परशुराम की अनुपस्थिति में उसने आश्रम पर आक्रमण कर जमदग्नि का वध कर दिया।

आश्रम में कोहराम मच गया, परशुराम की माता दुखी हो कर विलाप करने लगी। परशुराम जी जो उस समय पुष्कर की घोर तपस्या मे मग्न थे। अपने पिता के वध का समाचार सुन कर आश्रम लौटे तथा उन्होनें प्रतिज्ञा की कि कार्तवीर्य तथा स्वेच्छाधारी राजाओं का वध कर देगें यद्यपि अन्य ऋषियों, मुनियों तथा इनकी माता ने समझाया कि आप ऐसा न करें, क्योंकि एक व्यक्ति के अपराध से उस जाति के निर्दोष व्यक्तियों का वध करना ठीक नहीं। परन्तु उन्होनें कहा कि आग लगाने वाले तथा बन्धुओं की हिंसा करने वाले आदि अत्याचारी का वध करना उचित है। अत्याचार करना उतना ही पाप है जितना अत्याचार सहना।

उन्होंने घोर तपस्या करके शिव को प्रसन्न किया तथा उनसे दिव्य अस्त्र प्राप्त करके अत्यन्त परिश्रम तथा अभ्यास से धनुर्विद्या में निपुण हुए। अपने पिता के शिष्य भाईयों, बन्धुओं, मित्रों तथा अपने शिष्यों से परामर्श करके विजय यात्रा के लिए चल पड़े। कार्तवीर्य के पास दूत भेजकर उसे युद्ध के लिए आमन्त्रित किया।

जब कार्तवीर्य युद्ध के निमन्त्रण को स्वीकार कर युद्धक्षेत्र में जाने की

तैयारी करने लगा तो उसकी पत्नी ने उसको परशुराम जी से युद्ध न करने की सलाह दी तथा कहा कि जिसके पिता ने तुम्हारा आतिथ्य सत्कार किया उसकी तुमने हत्या कर दी, अतः इस युद्ध में तुम्हारी विजय नहीं हो सकती। परन्तु राजा ने पत्नी की बात पर तनिक ध्यान नही दिया। राजा की पत्नी ने भय के मारे प्राण त्याग दिये, परन्तु उसकी मृत्यु भी राजा के निश्चय को न बदल सकी। अपनी पत्नी की अन्तिम क्रिया से निवृत होकर वह परशुराम से युद्ध करने के लिए युद्ध भूमि में पहुंच गया।

परशुराम जी ने राजा को स्मरण करवाया कि राजा ने अतिथि सत्कार का पुरस्कार पिता जी को उनके वध के रूप में दिया। राजा ने परशुराम जी से कहा कि आप ने शांतिपारायण ब्राह्मण कुल में जन्म लिया है तथा आप के लिए यह उचित नहीं कि आप अपने धर्म का त्याग करके सभी क्षत्रिय राजाओं का नाश करने की भयानक प्रतिज्ञा लें। इसके पश्चात् दोनों में भयंकर युद्ध हुआ। युद्ध में युचंद, पुस्कराक्ष, सहस्त्राक्ष मारे गये तथा अनेक व्यक्ति हताहत हुए। अंत में कार्तवीर्य भी वीरगति को प्राप्त हुआ। इस प्रकार अनेक क्षत्रिय राजाओं का अंत करके परशुराम जी ने अपना संकल्प पूरा किया। फिर वह शिव, पार्वती और गणेश की स्तुति करने के लिए कैलाश पर्वत चले गये तथा महेन्द्र पर्वत पर तपस्या करने लग गये।

परशुराम जी एक लम्बे समय तक महेन्द्र पर्वत पर तपस्या करते रहे।

एक बार उन्हें वृष, दर्ब, सुवीर, मुद्र, अंग, बंग, कलिंग आदि जनपदों के वासियों से, जो वन प्रदेश में रहा करते थे, पता चला कि रघुवंशीय राम ने भगवान शिव के धनुष को तोड़ कर सीता से विवाह किया है। परशुराम जी यह जानना चाहते थे कि सूर्यवंशी श्री रामचन्द्र यदुवंशी सहस्त्रार्जुन जैसे मदान्ध क्षत्रिय तो नहीं। रामचन्द्र जी जो लक्ष्मण आदि बंधुओं के साथ सीता को लेकर लौट रहे थे, उनका रास्ता उन्होंने रोक लिया। परशुराम जी को देखते ही सब भयभीत हो गये। भार्गव उन्हें कहने लगे कि हे रघुनन्दन! मैं तुम्हारी परीक्षा लेना चाहता हूं। पता चला है कि तुम शिव धनुष तोड़ कर आये हो। लो, मेरे इस धनुष पर चिल्ला चढ़ायो और उसके बाद द्वन्द युद्ध के लिए तैयार हो जाओ।

रघुकुल केतू राम ने प्रार्थना की कि महाराज धनुष लाईये मैं आप की आज्ञा का पालन करता हूं। इतना कह कर रघुवंशीय राम ने धनुष पर चिल्ला चढ़ा दिया। परशुराम जी उनकी शील और मर्यादा को देखते हुए कहने लगे कि तुम रघुराम नहीं, मर्यादा पुरूषोत्तम राम हो तुम्हारा यश सब ओर फैलेगा। उसके पश्चात् परशुराम जी तपस्या करने के लिए महेन्द्र पर्वत पर चले गये।

महाभारत के दो प्रमुख महारथी देवव्रत भीष्म तथा कर्ण उनके शिष्य थे। जब देवव्रत अपनी माता के सरंक्षण में थे तो उन्होनें परशुराम जी से शिक्षा प्राप्त की थी। वह शस्त्रों और शास्त्रों के पारंगत अद्वितीय योद्धा थे। यद्यिप परशुराम जी ने कश्यप को पृथ्वी दान देने के पश्चात् शस्त्रों का त्याग कर दिया था।

परन्तु शरणागत् की रक्षा तथा परोपकार के लिए और ऋषियों की प्रेरणा से शस्त्र संभाल लेते थे। एक बार भीष्म काशी के राजा की तीन कन्यायों का अपने भाई के साथ विवाह करने के लिए अपहरण कर लाये और सबसे बड़ी अम्बा को उसकी इच्छा के अनुसार शाल्वराज के पास भेज दिया गया। परन्तु शाल्वराज ने आर्यपुरुष द्वारा अपहरण की गई स्त्री को पत्नी के रूप में ग्रहण करना अस्वीकार कर दिया। वह अपमानित और निराश होकर वन में ऋषियों के आश्रम में चली गई। जब परशुराम जी इस वन में आये तो उसने अपनी सारी व्यथा उन्हें सुनाई। वह इस सारी विपत्ति का कारण भीष्म को समझती थी। उसने भीष्म को दण्ड देने की प्रार्थना की। इस पर कुरुक्षेत्र में भीष्म से कई दिनों तक भयानक युद्ध हुआ। इन्होनें एक शरणागत असहाय अबला के लिए भीष्म जैसे महान योद्धा से युद्ध करने में भी सकोंच नहीं किया।

धरती पर यदुवंशियों में भगवान कृष्ण और बलराम जरासंध के अत्याचारों से दुःखी अपनी प्रजा का पालन करने में कठिनाई अनुभव करने लगे। अतः भगवान परशुराम जी के चरणों में जाकर नए ढंग से युद्ध कौशल सीखे। नीति की शिक्षा के लिए वह महेन्द्र पर्वत की ओर जाने लगे। वहां बरगद के वृक्ष के नीचे भगवान परशुराम विराज रहे थे। दोनों ने परशुराम जी के चरणों में नमस्कार किया। परशुराम जी ने उन्हें अभय किया और कहने लगे कि आप दोनों के बारे में मुझे पूरा ज्ञान मिल गया है। जन्म से ही अन्याय के विरुद्ध

आपकी लड़ाई हो रही है। कंस आदि अधर्मियों को आप ने मार दिया है। जरासंध को मारने के लिए आप विद्या सीखना चाहते है। इसलिए मैं महेन्द्र पर्वत से चल कर यहां आया हूँ। परशुराम जी के आशीर्वाद से उन्होनें युद्ध में विजय प्राप्त की।

द्वापर युग मे सूतपुत्र कर्ण सर्वत्र निराश हो गया तो एक दिन उसने एकान्त में गुरू द्रोणाचार्य से प्रार्थना की कि मुझे ब्रह्मास्त्र छोड़ने और लौटाने की विद्या सिखा दो। द्रोणाचार्य को पता था कि यह अर्जुन से द्वेष रखता है। गुरु का अर्जुन के साथ विशेष प्रेम था। इसलिए उन्होनें उसकी प्रार्थना अस्वीकार कर दी। इसके पश्चात् वह अस्त्र विद्या प्राप्त करने के लिए कपट वेष धारण करके परशुराम के जी के चरणों में पहुंचा और कहने लगा कि मैं श्रेष्ठ कुल ब्राह्मण हूं। परशुराम जी ने दया करके उसे शिष्य बना लिया और अस्त्र विद्या देने के लिए शिक्षा आरम्भ कर दी। एक दिन उपवास के कारण थके हुए परशुराम जी कर्ण की जंघा की गोद में सिर रख कर लेट गये तथा शीघ्र ही गहरी निद्रा में निमग्न हो गये। कर्ण की जंघा में एक भयानक कीट ने गहरा घाव कर दिया जिससे रक्त की धारा बहने लगी। वह गुरु सेवाभाव में स्थिर बैठा रहा तथा धैर्य से दुख व दर्द को सहन करता रहा। जब गर्म–गर्म रक्त परशुराम जी के शरीर को लगा तो वह उठे और सारी बात भांप गये तथा कर्ण से कहने लगे, तुम धोखेवाज हो ऐसी पीड़ा एक ब्राह्मण सहन नहीं कर सकता। कर्ण ने

भयभीत होकर कहा कि मैं सूत जाति से उत्त्पन्न राधा का पुत्र हूँ। ब्राह्मस्त्र प्राप्त करने हेतु मैनें झूठ बोला। आप मेरे गुरु हाने के नाते मेरे पिता के समान है । आप मुझे क्षमा करें। परशुराम जी ने कहा ,'मूर्ख तुमने ब्राह्मस्त्र पाने के लिए मुझे झुठ बोल कर मेरे साथ धोखा किया है। जितनी विद्या तुमने सीख ली है, ठीक है, अब तू यहां से चला जा, धोखेबाजों के लिए यहां कोई स्थान नहीं है। तुम ने यहां इतनी देर रहकर मेरी सेवा की है, उससे मैं संतुष्ट हूँ और आशीर्वाद देता हूं कि युद्ध में कोई क्षत्रिय वीर तेरी समानता नहीं कर सकेगा।' कर्ण पश्चाताप करता हुआ गुरु चरणों में नमस्कार करके दुर्योधन के पास लौट आया।

महाभारत युद्ध के समय श्रीकृष्ण दूत बनकर कौरव सभा में युद्ध को टालने के लिए शान्ति का सन्देश जब लेकर गए थे, तब परशुराम जी वहां उपस्थित थे। श्रीकृष्ण ने वहां सन्धि का प्रस्ताव रखा। जिसे दुर्योधन ने मानने से इन्कार कर दिया। परशुराम जी ने उसको कहा, 'हे दुर्योधन तुम्हारा अभिमान इस प्रकार नहीं रह पाएगा। जिस प्रकार दम्भोद्रव नामक सार्वभोम का मानमर्दन भगवान नर ने किया था। यह अर्जुन वही नर है तथा श्रीकृष्ण नारायण हैं। मेरा परामर्श है कि इन दोनों को सर्वप्राणियों में श्रेष्ठ समझते हुए तब तक युद्ध का विचार छोड़ दो जब तक ये दोनों अपने गाण्डीव पर बाण नहीं चढा लेते। यदि तुम मेरा परामर्श लेते हो या बात ठीक लगती हो तो तुम अपनी सद्बुद्धि का

प्रयोग करके पांडवों के साथ सन्धि कर लो।' तब कर्ण ने परशुराम के परामर्श को मानने के लिए दुर्योधन से कहा। परन्तु विनाशकाले विपरीत बुद्धि'। दुर्योधन त्यौरी चढा कर बोला कि होनी को कोई नहीं टाल सकता। इस प्रकार परशुराम जी ने अन्तिम समय तक महाभारत के युद्ध को टालने का प्रयत्न किया। परन्तु नियति के चक्र को वह भी जानते थे। महाभारत का अन्त हुआ। युधिष्ठिर का राज्याभिषेक होने लगा तो परशुराम जी के चरों ने उनको महेन्द्र पर्वत पर सूचित किया। परशुराम जी युधिष्ठिर को आशीर्वाद देने के लिए ऋषियों के साथ वहां पहुंचे और युधिष्ठिर को न्यायपूर्वक वात्सल्य भाव से धर्मानुकूल प्रजा पालन के लिए आशीर्वाद देकर महेन्द्र पर पुनः चले गए।

परम्परायें वर्तमान के धरातल पर भविष्य की पताकायें हैं। भारतीय संस्कृति और सभ्यता के दिग्गज़ों में महान तेजस्वी, तपस्वी, प्रकाण्ड योद्धा, कर्त्तव्यनिष्ठ व्यक्तित्व वाले श्री परशुराम जी एक ऐसे प्रकाश पुंज हैं जो भारतीय क्षितिज पर आज भी ध्रुव के तारे की तरह चमक रहे हैं। श्री परशुराम जी को भगवान की उपाधि इन्हीं गुणों के कारण दी जाती है। योगानिष्ठ महान तेजस्वी ब्राह्मण द्वारा किया गया प्रत्येक कार्य हमारे समाज के लिए आज भी प्रेरणास्रोत है।

'जय श्री भगवान परशुराम'

गोवंश का महत्व

हिन्दू गाय को परम्परा से माता मानते है, परन्तु गौ केवल हिन्दुओं की माता ही नहीं है अपितु 'गावो विश्वस्य मातर':' गायें समस्त विश्व की माता हैं। गाय समान रूप से विश्व के मानव मात्र का पालन करने वाली माँ है। गो के शरीर में तैतीस करोड़ देवता निवास करते हैं। एक गाय की पूजा करने से स्वयंमेव करोड़ों देवताओं की पूजा हो जाती है। 'माता सर्वभूतानाम् गावः सर्वसुखप्रदाः'– भाव गाय सब प्रणियों की माता है और प्राणियों को सुख प्रदान करती है।

भगवान कृष्ण को सारा ज्ञानकोष गोचरण से ही प्राप्त हुआ। जिससे आगे चलकर संसार का उद्धार करने वाली गीता का ज्ञान निकला। श्री कृष्ण गोसेवा से जितना शीघ्र प्रसन्न होते हैं, उतना अन्य किसी की सेवा से नहीं। गणेश भगवान का सिर कटने पर महादेव का दान एक गाय रखा गया और वही पार्वती को देनी पड़ी।

गोस्वामी तुलसीदास के अनुसार धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष में चारों फल गाय के चार थन हैं। सन्त एकनाथ भागवत् धर्म में गोसेवा का विशेष स्थान बताते हैं। महात्मा नामदेव ने दिल्ली के बादशह के आह्वान पर मृत गाय को जीवन दिया। शिवाजी महाराज को समर्थ रामदास की कृपा से 'गो ब्राह्मण प्रतिपालक' उपाधि प्राप्त हुई। दशम गुरू गोबिन्द सिंह ने 'चन्डी दी वार' में दुर्गा भवानी से

गोरक्षा की माँग की है:– 'यही देहु आज्ञा तुर्क गायै खपाऊँ। गऊघात का दोष जग सिउ मिटाऊँ।' उन्होंने यह भी कहा :– 'यही आस पूरन करी तु हमारा, मिटे कष्ट गौअन, छटै खेद भारी।'

आधुनिक महापुरूषों ने भी गौ के संबंध में अपने विचार व्यक्त किए है। स्वामी दयानन्द सरस्वती 'गो करूणा निधि' में कहते हैं,' एक गाय अपने जीवनकाल में 4,10,440 मनुष्यों हेतु एक समय अपना पेट भर सकती है। गाँधी जी ने कहा है कि, 'गोरक्षा का प्रश्न स्वराज्य के प्रश्न से भी अधिक महत्त्वपूर्ण है।' उनका कहना है, 'गोवंश की रक्षा ईश्वर की सारी मूक सृष्टि की रक्षा करना है।' भारत की सुख–समृद्धि गौ के साथ जुड़ी है।' गाय उन्नति और प्रसन्नता की जननी है। गाय कई प्रकार से अपनी जननी से भी श्रेष्ठ है।

लोकमान्य बालगंगाधर तिलक ने कहा था कि 'स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद कलम की एक नोक से पूर्ण गोहत्या बन्द कर दी जाएगी। चाहे तुम मुझे मार डालो, पर गाय पर हाथ ना उठाओ।' प्रथम राष्ट्रपति डा. राजेन्द्र प्रसाद ने कहा था ,'भारत में गोपालन सनातन धर्म है।' पूज्य देवराहा बाबा कहते थे, 'जब तक गोमाता का रूधिर भूमि पर गिरता रहेगा, कोई भी धार्मिक तथा सामाजिक अनुष्ठान सफल नहीं होगा।' भाई हनुमान प्रसाद पोद्दार कहते थे, 'जब तक भारत की भूमि पर गोरक्त गिरेगा, तब तक देश सुख शान्त और धन धान्य से वंचित रहेगा।'

गाय का वैज्ञानिक महत्व

• गाय के दूध में रेडियो विकिरण (एटामिक रेडिएशन) से रक्षा करने की सर्वाधिक शक्ति होती है ऐसा रूसी वैज्ञानिक शिरोविच कहते है।

• गाय कैसा भी तृण पद्वार्थ यहाँ तक कि विषैला खाये उसका दूध तब भी निरापद एवं शुद्ध होता है।

• जिन घरों में गाय के गोबर से लिपाई–पुताई होती है, वे घर रेडियो विकिरण से सुरक्षित रहते है।

• गाय का दूध हृदय रोग से बचाता है।

• गाय का दूध शरीर में स्फूर्ति, आलस्यहीनता तथा चुस्ती लाता है।

• गाय का दूध स्मरणशक्ति बढ़ाता है।

• गाय के घी को अग्नि में डाल कर धुँआ करने अथवा इससे हवन करने से वातावरण एटामिक रेडिएशन से बचता है।

• गाय एवं उसकी सन्तान के रंभाने की आवाज से मनुष्य की अनेक मानसिक विकृतियाँ एवं रोग स्वमेव दूर हो जाते हैं।

• मद्रास के डा. किंग के अनुसंधान के अनुसार गाय के गोबर में हैजे के कीटाणुओं को नष्ट करने की शक्ति है।

चेतावनी

'तुलसी दुनिया बावरी बहिरैच पूजन जाय'—मध्य युग मे क्षुद्र स्वार्थ की कामना से सर्वान्तर्यामी, सर्वशक्तिमान् परमात्मा की शक्ति पर अविश्वास करके कब्रों तथा मज़ारों के आगे नतमस्तक होकर दीनता प्रदर्शित करने वाले अज्ञानी हिन्दुओं की मनोवृत्ति की भर्त्सना करते हुए गोस्वामी तुलसीदास ने उक्त पद कहा था। आज स्वतन्त्र भारत में वही प्रवृत्ति पुनः उभर कर सामने आई है। जगह जगह पर बनी मज़ारों के आगे गिड़गिड़ा कर आर्त्त पुकार करते हिन्दू भाइयों—बहनों की इसी मनोवृत्ति से पीड़ित हो कर श्री के. आर. चिन्तक ने निम्न पद लिखें हैं।

सावधान

देखिए, यह हिन्दू मुस्लमान हो गया
मस्तिष्क में विचार कैसा घूमता,
मन्दिरों को छोड कबरें पूजता।
बुद्धिमान होकर भी अनजान हो गया,
देखिए, यह हिन्दू मुस्लमान हो गया।
अत्याचार करके थे जनेऊ उतारते
पढ़ कलमा थे गऊओं को मारते।

यातना दे हिन्दुओं को तड़फाया था
गऊ मांस खिला कर मुस्लमान बनाया था
वे ही तो इन कबरों में गले–सड़े हैं,
या घोर नरक में गढे–पड़े हैं।
आश्चर्य? ये कबरें पूजास्थान हो गई।
देखिए, यह हिन्दू मुस्लमान हो गया।
सुनिए, यह उद्घोष गीता धर्म का
निर्णय जो करे उस परम धर्म का।
देव पूजक देवता को पायेगा।
कबर पूजक कबरों में ही जायेगा।
मानव जन्म का हाय नुकसान हो गया
देखिए, यह हिन्दू मुस्लमान हो गया।

भगवान् परशुराम

कमल लोचन भगवान परशुराम शक्ति एवं भक्ति के अवतार पिता जगदग्नि एव माता रेणुका के विशेष स्नेह पात्र थे। इन का शैशव का नाम राम था। इन्होंने अपने पिता के समक्ष वेद, वेदांग एवं अन्य ग्रन्थों का पूर्ण अध्ययन किया। क्षत्रिय प्रवृत्ति होने के कारण शस्त्र विद्या सीखने के लिए भगवान शिव की शरण में गए। युद्ध कौशल में पूर्ण दक्षता प्राप्त करने के पश्चात् अपने गुरू भगवान आशुतोष द्वारा प्रदत्त शक्तिशाली परशु के द्वारा अलंकृत होकर भगवान परशुराम कहलाए।

इन के द्वारा स्थापित पितृभक्ति का उदाहरण सम्भवतः पूर्ण वांड़मय में खोजने पर भी नहीं मिल सकता। इनके अन्य चारों अग्रज अपने पिता के इतने संसर्ग में नहीं रहे जितने परशुराम जी। वह विद्या अध्ययन के समय अपने पिता की अलौकिक एवं आध्यात्मिक शक्ति को जान चुके थे। वह जान चुके थे कि उनके पिता इतने समर्थ हैं कि मृत प्राणी को जीवन प्रदान कर सकते हैं एवं वह जो वचन कहे वह सत्य का रूप धारण कर लेता है। अपनी बुद्धिमता के कारण इन्होनें अपनी माता को पुनः जीवित भी करवा लिया। अपने भाइयों को जड़ स्थिति से मुक्ति दिलवाई और अपने लिए दीर्घायु एवं सदैव विजयी रहने का आशीर्वाद भी अपने पिता से प्राप्त कर लिया। बाद में वात्सल्यमयी मां पार्वती से

अमरता का वरदान प्राप्त कर लिया जिस कारण जमदग्नि नन्दन आज भी अमर हैं, अमर जीवी हैं।

भगवान परशुराम प्रवेशावतार थे। प्रत्येक अवतार का किसी न किसी ध्येय के कारण पृथ्वी पर अवतरण होता है। जिस समय जमदग्नि का अवतरण हुआ, उस समय निरंकुश एवं आततायी राजा कार्तवीर्य का राज्य था। ऋषि दत्तात्रेय से वरदान पाकर उसने ऋषि वर्ग को ही संतप्त करना आरम्भ कर दिया। जनता को यातना देना उसका मनोरंजन बन चुका था। वह अपने आप को प्राणियों की उत्पत्ति उवं संहार करने में समर्थ समझने लगा। ऐश्वर्य एवं अपरिमित बल पाकर वह पूर्ण अत्याचारी बन बैठा। एक बार जमदग्नि ऋषि के आश्रम में पहुँच कर वह धृष्टता की सब सीमाओं का उल्लंघन कर बैठा। आश्रम से कामधेनु बलात अपहरण कर अपनी राजधानी महिष्मती की ओर ले चला। परशुराम जी ने इस दुष्कृत्य का प्रतिशोध कार्तवीर्य को युद्ध में परास्त कर उसका वध करके लिया। कार्तवीर्य के पुत्रों ने पुनः जघन्य पाप कर्म किया। तपलीन ऋषि जमदग्नि का वध कर डाला। इस ह्रदय विदारक कृत्य को देखकर माता रेणुका ने अपने पुत्र परशुराम को पुकारा। किवंदन्ती है कि उन्होंने इक्कीस बार अपने पुत्र को पुकारा। भगवान् परशुराम ने उग्र रूप धारण कर महिष्मति नगरी में पहुँच कर अत्याचारी का संहार करना आरम्भ कर दिया। उन्होनें इक्कीस बार पृथ्वी को इन आतंकियों से विहीन किया।

पृथ्वी को अत्याचारियों से मुक्त कर वह महेन्द्र पर्वत पर तपलीन हो गए। द्वापर युग में उन्होनें एक महान गुरू का उत्तरदायित्व निभाते हुए भीष्म पितामह, द्रोणाचार्य एवं कर्ण को धनुर्विद्या एवं युद्ध कौशल में प्रवीण कर दिया। भगवान कृष्ण एवं बलराम ने भी इनके चरणकमलों में बैठ कर नए ढंग से युद्ध कला को सीखा। इन्होनें भी भविष्यवाणी की थी कि सत्य और असत्य का एक महान संग्राम होने जा रहा है जो महाभारत के नाम से विख्यात होगा।

न्यायप्रिय जमदग्निनंदन अम्बा को न्याय प्रदान करवाने के लिए अपने प्रिय शिष्य भीष्म पितामह को भी युद्ध के लिए आमन्त्रित करते हैं। भीष्म के युद्ध कौशल से गद्‌गद् होकर उन्होंने उसे यह आशीर्वाद दिया कि तुम्हारे समान पृथ्वी पर अन्य योद्धा नहीं होगा।

महान योद्धा, महा तेजस्वी, महादानी, तपस्वी, कर्तव्यनिष्ठ व्यक्तित्व धारण किए भगवान परशुराम जी ऐसे प्रकाश पुंज हैं जो भारतीय क्षितिज पर आज भी ध्रुव तारें की तरह दैदीप्यमान हैं। पूर्ण, श्री, यश, ऐश्वर्य, धर्म, ज्ञान रूपी छः भग (गुणों) को धारण कर विष्णु के छठे अवतार जमदग्नि नन्दन परशुराम भगवान् की उपाधि से अलंकृत हो विश्व में ख्यातिमान हैं। वे अब भी महेन्द्र पर्वत पर तपस्या लीन हैं तथा आगामी मन्वन्तर में सप्त ऋषियों के मंडल में रह कर वे वेदों का विस्तार करेंगे।

वर्तमान दशा तथा ब्राह्मण वर्ग

जो राष्ट्र अपनी संस्कृति, अस्मिता, श्रेष्ठ जीवन मूल्य तथा गौरवपूर्ण इतिहास को विस्मृत कर देता है, वह मानवता का नेतृत्व कभी नहीं कर सकता और जगत् में तो सम्मान पा ही नहीं सकता। आज सारा विश्व एक स्वर से यह मान बैठा है कि मानव सभ्यता, ज्ञान व विज्ञान का जो भी विकास हुआ, वह सबका सब यूरोपियन सभ्यता और संस्कृति की देन है। निःसन्देह यूरोप द्वारा प्रतिपादित भौतिकवाद तथा स्वार्थपरक आक्रामक संस्कृति और सभ्यता ने यदि विश्व को दिया है, तो भी भूला नहीं जा सकता कि इस सभ्यता ने अपनी बर्बरता और आक्रामकता से गत लगभग हजार वर्षो में मानवता का क्रूरतम शोषण भी किया है। इसी के परिणामस्वरूप अनेक पुरातन संस्कृतियां सदा के लिए लुप्तप्रायः हो गई तथा नृवंश की जो भारी क्षति इस सभ्यता से जुड़े बर्बर आतंकवादियों ने की है, उसकी भरपाई असम्भव प्रायः हो गई है।

आज विश्व की लगभग अस्सी प्रतिशत समृद्धि उनके हाथ में है जो अपने आप को यूरोपिन सभ्यता की उपज मानते है। उनके शोषण से अभिशप्त विश्व की दो तिहाई से अधिक जनता आज भी घोर विषमता, अभाव और कुपोषण में जीवन यापन करने को विवश है। इसी प्रवृत्ति के कारण आने वाले समय में सब से बड़ा खतरा आज वह आर्थिक असमानता है जिसे जबरन दो तिहाई मानवता

पर थोप दिया गया है। विश्व में परिवार भाव कैसे जागृत हो, आर्थिक तथा राजनीतिक समानता विश्व में मानव मात्र को प्राप्त हो, लोकतान्त्रिक मूल्य और वास्तविक सद्भाव सभी ओर दिखाई दे और समानता के सिद्धातों पर आधारित नई विश्व अर्थव्यवस्था का निर्माण कैसे हो?

ये वे चुनौतियां है जिन से वर्तमान में हमें जूझना ही होगा। इनके अतिरिक धर्मान्धता पर आधारित आतंकवाद की भयावह चुनौती भी मुहँबाये खडी है। धर्मान्धता, ऐसी जिसका विश्वास सह–अस्तित्व के मूलभूत सिद्धात पर विल्कुल नहीं है। धार्मिक उन्माद से ग्रस्त यह आतंकवाद कितने रूप लेगा, यह तो भविष्य के गर्भ में है, परन्तु वर्तमान में, विशेषतः भारत के संदर्भ में इस्लामी आतंकवाद अपने वीभत्स रूप में सामने आ चुका है। इस से कैसे निपटा जाय तथा भारत को पुनः विश्वगुरू की पदवी कैसे दिलाई जाए–यही आज प्रत्येक भारतीय की आकांक्षा है।

यद्यपि ऊपर निर्दिष्ट समस्या के समाधान को लक्षित कर प्रत्येक प्रबुद्ध नेता चाहता है कि भारत एक बौद्धिक महाशक्ति बन जाए तथा अपने उज्जवल अतीत के गौरवपूर्ण उच्चादर्शो पर आधारित अस्मिता पुनः अक्षुण बनाये रखने में सफल हो, पर क्या ऐसा हो पाना सम्भव होगा? जिस राष्ट्र में प्रबुद्धता को सम्मान न मिलता हो , जहां योग्यता, दक्षता, क्षमता एवं प्रतिभा निरन्तर तिरस्कृत होती चली आ रही हो, प्रतिभा का पालायन जिस राष्ट्र में एक समस्या बन चुका

हो , वह कैसे बनेगा बौद्धिक महाशक्ति? ऐसा राष्ट्र जिसकी राजनीति माफिया तन्त्र के शिंकजे में जकड़ी जा चुकी हो, जहां राजनीतिक नेतृत्व का एक बड़ा वर्ग धीरे–धीरे अपराध जगत् से जुडता चला जा रहा हो, ऐसा राष्ट्र बौधिक महाशक्ति कभी नही बन सकता। बौधिक महाशक्ति बनने के लिए एक ओर जहां प्रतिभा को सम्मान देना होगा, वही सारे राष्ट्र में ऐसा आत्म विश्वास भी जागृत करना होगा जो व्यक्ति को चरित्रवान् बना सके। स्वतन्त्र भारत में सभी दिशाओं में आगे बढ़ने के अनेक प्रयास हुए पर श्रेष्ठ नागरिकों का निर्माण कैसे हो इसके लिए अल्प मात्र भी प्रयास नहीं हुआ। इसी का परिणाम है आज की दयनीय दशा जिसमें ईर्ष्या, द्वेष, असमानता, अर्थ–लिप्सा, अधिकार–लिप्सा, परशोषण तथा अनुशासनहीनता का क्रूर ताण्डवनृत्य प्रत्यक्ष दृष्टिगोचर हो रहा है। आज आचारवान् व्यक्तियों का अभाव ही इस दुर्दशा का मूल कारण है।

भारत की संस्कृति आचार मूलक रही है– 'आचारः परमो धर्मः' ही इसका क्रियात्मक रूप है। वाल्मीकि रामायण का मुख्य प्रश्न, 'चारित्रयेण हि को युक्तः' ही था, जिसका निदर्शन भगवान राम के आर्दश जीवन में उपलब्ध है, उन्हीं के रामालय के स्वप्न की कल्पना राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने की थी जिसका स्वरूप गोस्वामी तुलसीदास की इन पंक्तियों में व्यक्त हुआ है– 'दैहिक दैविक भौतिक तापा, राम राज काहुँ नाहिं व्यापा, वैर न करि काहु सन कोई, राम प्रताप विषमता खोई।' परन्तु वर्तमान में तो ' ईर्ष्या परुषाक्षर लौलुपता, चहुँ ओर व्याप रही

विष्मता' का दृश्य ही दृष्टिगोचर हो रहा है। अतः आवश्यकता है आज पुनः चरित्र प्रधान, रामराज्य की प्राण–भारतीय संस्कृति के महत्त्व को पहचान पुनर्जीवित करने की।

इस वर्तमान दुर्दशा का मूल कारण है भारतीय संस्कृति के आधार वेद वाङ्मय के आदर्श की अवमानना। प्रत्येक प्राणी में ईश्वरीय चेतना की झलक का प्रत्यक्षीकरण करते हुए जहाँ विराट् मानव की कल्पना करते हुए वेदों में यह कहा गया है कि– 'ब्राह्मणेऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्यःउरूस्तद् वैश्यः पद्भ्यां शूद्रोऽजायत्' (इस विराट पुरूष का मुख ब्राह्मण, बाहु क्षत्रिय, उरू वैश्य तथा पैर शूद्र है) तो इस का आधार गीता के आदर्श 'गुण तथा कर्म' को मानते हुए अखण्ड व्यक्तित्व का ही निदर्शन है। ब्राह्मणत्व में स्वाभाविक गुण–

शमो दमस्तमः शैचं क्षान्तिरार्जवमेव च।
ज्ञान विज्ञानमास्तिक्यं ब्रह्म कर्म स्वभावजम्

(मन इन्द्रियों का निग्रह, तप, ब्राह्य– आभ्यान्तरिक पवित्रता, निच्छलता परलोक, धर्म तथा ईश्वर में विश्वास, ज्ञान–विज्ञान– ये ब्राह्मण के स्वाभाविक कर्म हैं)– ब्राह्मण का शरीर तुच्छ भोगों के लिए नहीं बल्कि उस तप के लिए है जिससे लोक–परलोक का सुख सिद्ध है।

ब्राह्मणस्य तु देहाऽडयं क्षुद्र कामाय नेष्यते।
कृच्छ्राय तपसे चैव प्रेत्यानन्त सुखाय वै।।

इस प्रकार के कर्मो में 'युगनेतृत्व' के अन्य गुण भी स्वंय ही आ जाते हैं– जैसे शास्त्र–ज्ञान, पवित्र आचरण, प्रेम, सत्य, अहिंसा, शान्ति, करूणा, त्याग, सेवा, सहानुभूति तथा परिस्थितिवश राज, तेज तथा बल आदि भी सम्मिलित है। वेदवाणी में ब्राह्मण– मुख से निकाला यह उद्‌घोष मुख्य है–'सहृदयं सौमनस्यं अविद्वेष कृणोमि वः' :–

हे संसारी लोगो ! मैं तुम्हें सहृदय बनाता हूँ , ऐसा सहृदय जो सब के सुख दुख को अपना सुख दुख माने ऐसा उदारहृदय कि 'वसुधैव कुटुम्बकम् अर्थात् जिसे सारा संसार अपना कुटुम्ब ही दिखाई दे, मैं तुझे सोमनस्य बनाता हूँ अर्थात् तेरे मन को सौजन्य अर्थात् सद्‌भाव सहित करता हूँ और तुम्हें अविद्वेषम् अर्थात् तुम्हारे हृदयों को राग–द्वेष से दूर करता हूँ। क्योंकि संसार की समस्त समस्याओं का मूल कारण राग–द्वेष ही हैं। इस प्रकार के त्यागी, तपस्वी, परहित के लिए तत्पर, वेदज्ञ तथा नीति–निष्णात् ब्राह्मण के नेत्त्व में ही सदाचारी क्षत्रियत्व समाज में सुव्यवस्था, शान्ति, समृद्धि आदि को पनपने में समर्थ होता है–

नाब्रह्म क्षत्रंमृधन ति नाक्षत्रं ब्रहम् बर्घते।
ब्रह्म क्षत्रज्ञा संपृक्तंमिहामुत्र च बध्रते।।

चरित्रवान् नागरिक ही राष्ट्र के अभ्युदय का हेतु होते हैं। चरित्र के अन्तर्गत मन, वाणी और कर्म का सदा समन्वय रहता है। मन में जो सद्‌भाव

उत्पन्न हुआ, वाणी ने उसे ही शब्दों में प्रकट किया और कर्मेन्द्रियों ने तदनुसार आचरण कर उसे क्रियान्वित किया। यह एकता ही चरित्र का मुख्य कारण है। यह समता उसी मनुष्य को प्राप्त होती है जिसकी ज्ञानेन्द्रियां और कर्मेन्द्रियां मन के अनुकूल रहती हैं और मन भी सदसद् विवेकशीला बुद्धि की शुभ प्रेरणा को लेकर सदा सन्मार्ग का अनुगामी रहता है। ऐसा मनुष्य सदा पवित्र तथा यशस्वी बना रहता है।

राष्ट्र के अभ्युत्थान के लिए चरित्र की पवित्रता नितान्त आवश्यक है। जिस राष्ट्र का मानवीय जीवन सच्चरित्र, सदाचारी और संयमी होगा, वह राष्ट्र विश्व में सूर्य के समान तेजस्वी और प्रतापी होगा। भारत का अतीत इस दृष्टि से स्पृहणीय है। महाराजा मनु के वचन इस तथ्य का निदर्शन हैं:–

एतद्देश प्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः।
स्वं–स्वं चरित्र शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्व मानवाः।।

अर्थात् विश्व के मानवों ने भारत के अग्रजन्मा ऋषियों से ही समस्त विप्र चरित्र की शिक्षा ली तथा उसी का अपने यहां प्रचार–प्रसार किया। भारत के ऐसे उज्जवल चरित्र का ही परिणाम था कि महाराजा अश्वपति ने बडे गर्व के साथ घोषणा की थी कि उनके राज्य मे न तो कोई चोर है, न कंजूस और न ही मद्यप (मदिरा पीने वाला) और ऐसा व्यक्ति भी उनके राज्य में कोई नहीं जो प्रतिदिन अग्निहोत्र न करता हो तथा जो अशिक्षित और मूर्ख हो। व्यभिचारी भी उनके

राज्य में नहीं है, तब व्यभिचारिणी की कल्पना ही कैसे की जा सकती है? उनका यह उद्घोष इस प्रकार हैः–

न में स्तेनो जनपदे, न कदर्यः न मद्यपः।
नानाहिताग्निर्नाविद्वान् न स्वैरी स्वैरिणी कुतः।।

क्या हमारे कर्णधार राजनेता वर्तमान भारत में इस कथन को दुहरा सकते है? उन्हीं का अनुकरण सामान्य जन कर रहा है। परिणामतः भारत की चारित्रिक दशा नैतिक उत्थान की अपेक्षा विपरीत दिशा की ओर जा रही है जिसका परिणाम है घोर अशान्ति, असमानता, अविश्वास तथा संघर्ष। जब इस प्रकार के ब्रह्म तेज तथा क्षत्रिय बल का समन्वय होगा तभी समाज में उस समरसता का विकास होगा जिसका उल्लेख अथर्ववेद में इस प्रकार हुआ हैः–

मा भ्राता भ्रातर द्विक्षन् मा स्वसारमुत स्वसा।
सम्यञ्च सव्रताः भूत्वा वांच वदत भद्रया।।

अर्थात् सभी भाई–बहन परस्पर प्रीतिपूर्वक रहें, कोई एक दूसरे से द्वेष न करे। इस प्रकार समान गति, समान कर्म, समान ज्ञान और समान व्रत– नियम वाले बन कर परस्पर कल्याणी एवं मधुर वाणी से सम्भाषण करें। इसी संकल्प को समक्ष रखकर प्रत्येक भारतवासी ईश्वर से प्रार्थना करता है :–

प्रियं मा कृणु देवेषु प्रिय राजसु मा कृणु।
प्रिय सर्वस्य पश्यत उत शूद्र उतार्ये।।

हे परमात्मन्! हमें देवताओं का प्रिय बना, हमे राजा तथा अधिकारी वर्ग में प्रिय बना, साथ ही हमें लोकप्रिय बना कि हम विश्व में समस्त प्रजा (चारों वर्णों की) के प्रिय बन सकें। इसी ध्येय से वह राष्ट्रीय पुरुषों को सम्बोधित भी करता हैः–

समानी व आकूति : समाना ह्यदयासनि व :।
समानमस्तु वो मनो यथा व : सुसहासति।।

हे राष्ट्रीय पुरूषों! तुम्हारा सत्य संकल्प होना चाहिए, तुम्हारा मन और ध्येय एक समान ध्येय की ओर अभिलक्षित होना चाहिए जिससे तुम सब परस्पर प्रेमपूर्वक रहो।

इस प्रकार एकत्व तथा समरसता की भावना से प्रेरित तप और त्याग के धनी अग्रजन्मा ब्राह्मण वर्ग के नेतृत्व में समाज के सभी वर्ग सर्वथा समृद्ध, सन्तुष्ट एवं प्रसन्न थे। उस अतीत की कान्ति और गौरव को पुनः अर्जित करने के लिए समस्त वर्गो के व्यक्तियों, विशेषतः विप्रबन्धुओं को सयमं, ब्रह्मचर्य तथा तपपूर्वक शास्त्रीय मर्यादा को अपना कर जीवन यापन करने का प्रयास करना चाहिए। यही वे गुण हैं जिन से राष्ट्र सुरक्षित रहता हैः– ब्राह्मचर्येण तपसा राजा राष्ट्र विरक्षित। यदि पूर्वोक्त चारित्रिक गुणों का आज के मानव में विकास हो जाए तो निस्सन्देह पुनः शान्ति स्थापना में भारत नेतृत्व देने में समर्थ हो सकेगा। अर्थववेद में शान्ति–स्थापना के सम्बन्ध में ईश्वर की आज्ञा हैः–

सत्य बृहत् ऋतयुग्र दीक्षातपो,
ब्रह्म यज्ञः पृथ्वी धारयन्ति।

अर्थात सत्य 1. व्यापक एवं सामूहिक रूप से सत्य का व्यवहार
2. कठोर अनुशासन के साथ राजकीय नियमों का पालन
3. संस्कारों का विधिवत् अनुष्ठान
4. व्रत, तप और संयम के साथ दैनिक कार्यक्रम
5. वैदिक स्वध्याय और ब्रह्म भक्ति तथा
6. यज्ञ अर्थात् देव पूजा, सत्पुरूषों का संग एवं दान,

अग्निहोत्र आदि छः शुभ कर्म करने चाहिए। इन कर्मो को आचरण द्वारा क्रियान्वित करके विप्र समाज को सामाजिक, राष्ट्रीय उत्थान में सहायक बन कर अपने खोए हुए वर्चस्व को पुनः अधिगृहित करने का प्रयास करना चाहिए।

—डा. चरण दास शास्त्री

प्रार्थना

ओ३म् स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः
स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु।।

–यजुर्वेद २५/

ओ३म् स्वस्ति मात्र उत पित्रे नो अस्तु स्वास्ति गोभ्यः जगते पुरूषेभ्यः।
वियवं सुभूतं सुविदंत्र नो अस्तु ज्योगेव दृशेम सूर्यम्।।

अर्थ – हे परमब्रह्म, परमात्मन्, इन्द्रदेव! आप हमें धन धान्य से समृद्ध कर हम सब का कल्याण करें। हे विश्वज्ञानी, विश्वेश्वर देव! आप हमें ज्ञान–विज्ञान के सुपथ पर अग्रसर कर हमारा कल्याण करें। हे सुखस्वरूप परम तेजस्वी विष्णो! आप हमें सुख–शान्ति और आनन्द देकर हमारा कल्याण करें। हे देवाधिपति गुरूदेव बृहस्पति! आप हमें सुबुद्वि प्रदान कर हमारा कल्याण करें।

हे सर्व मंगलमय, सर्वानन्दप्रद, परम सुखदायक जगदीश! आप हमारे माता पिता तथा सन्तानों को स्वस्थ, निरोग एवं बलिष्ठ बनाइये। आप हमारी गायों को दुधारू करें, अखिल जगत् और उसकी समस्त जनता को वैभवशाली और समृद्ध बनाइए तथा समस्त संसार को ऐश्वर्य–सम्पन्न एवं मंगल कामना से ओतप्रोत तथा उत्तम ज्ञानी बनाइए। हे सनातन सच्चिदानन्द स्वरूप परमेश्वर! आप हमें ऐसा चिरंजीवी करें कि हम अनन्त काल तक आपके सूर्य के प्रकाश को देखते रहें। आप से हमारी बारबार प्रार्थना है।

ब्राह्मण से ख़िताब

क्या हुआ तेरा उरूजे फिक्रोफन।
तेरी हालत पर मैं आँखें खूंफशाँ।
पाँव पड़ते थे तिरे शाह–ओ–फकीर।
इल्मों हिकमत में तिरा सानी न था।
तुझ से कायम था जलाल–ए–जिन्दगी।
फ़न कोई भी हो तू उसमें ताक था।
फ़िक्रोफन तदरीस तेरा काम था।
ज़िन्दगी का तू ही देता था प्याम।
तू बदल देता था लोगों के नसीब।
क्या तेरे सीने में अब वह दिल नहीं।
क्यों नही उठता पसे दीवार से?
होश कर ऐ बरहमण हुश्यार हो।
तेरे तांबे हैं अभी इलमो हुनर।
तेरी रग रग में लहू ऋषियों का है।
तू द्रोणाचार्य बन कर अब दिखा।
यूँ न बैठ अब हाथ रख कर हाथ पर।
कुछ बता ऐ वाली–ए–गंगो जमन।।

तू कभी था अज़मत–ए– हिन्दोस्ताँ।।
चश्मा–ए–अनवार था तेरा ज़मीर।।
तू कभी मरहून–ए–सुलतानी ना था।।
तु ने मुर्दो को अता की जिन्दगी।।
खाक तेरे हाथ की तिरयाक़ था।।
दहर मे मशहूर तेरा नाम था।।
मौत करती थी तुझे सौ सौ सलाम।।
आज कोई भी नहीं तेरा हबीब।।
क्या तेरा दिल अब किसी काबिल नही।।
क्यों तुझे लगता है डर तलवार से।।
ख्वाबे ग़फलत से बस अब बेदार हो।।
तुझ को है मालूम खुशहाली का गुर।।
ब्राह्मण तू अब नहीं सदियों का।।
और परशुराम का मन्तर सुना।।
अपनी राहों से हटा खैफो–खतर।।
अपनी तदबीरों से तक़दीरें बदल।।

• अर्थ :

उरूज़े	–	शिखर पर
फिक्रोफन	–	चिन्तन + कला
खुंफशां	–	खून के आंसू रोना
अजमत	–	शान
अनवार	–	प्रकाश
ज़मीर	–	अस्मिता
मरहून	–	आश्रित
अता की	–	प्रदान की
तिरायक	–	संजीवनी
तदरीस	–	शिक्षण
दहर में	–	संसार भर में
प्याम	–	संदेश
हबीब	–	हमदर्द
पसे दीवार	–	दीवार के पीछे
ताबे	–	अधीन
अज़्मो–इस्तक़लाल		दृढ़ संकल्प

जीवन क्या है?

जीवन एक सुअवसर है	इसका सदुपयोग करो।
जीवन एक सौन्दर्य है	इसके प्रशंसक बनो।
जीवन एक आनन्द है	इसका उपयोग करो।
जीवन एक चुनौती है	इसका सामना करो।
जीवन एक स्वप्न है	इसे साकार करो।
जीवन एक कर्त्तव्य है	इसका निर्वाह करो।
जीवन एक खेल है	निर्लिप्तभाव से इसे खेलो।
जीवन एक यात्रा है	इसे पूर्ण करो।
जीवन अमूल्य सम्पत्ति है	इसका संरक्षण करो।
जीवन प्रेम है	इसे क्रिया में उतारो।
जीवन एक रहस्य है	इसका अनावरण करो।
जीवन एक प्रण है	इसे पूर्ण करो।
जीवन एक गीत है	इसका सस्वर गान करो।
जीवन एक संघर्ष है	साहसी बन कर इसे सहन करो।

जीवन दुःखान्त है	इसका सामना करो।
जीवन सहायक घटना है	दृढ़तापूर्वक इसको निष्पन्न करो।
जीवन वस्तुतः भाग्य है	इसे स्वीकार करो

इस बहुमूल्य जीवन को नष्ट होने से बचाओ क्योंकि यह देवों के लिए भी दुर्लभ है।

– संजय शर्मा

अथ स्वास्तिवाचनम्

स्वस्ति व इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति न पूषा विश्ववेदाः
स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु।।
पयः पथिष्यां पय ओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे
पयोधाः पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम्।।
विष्णोरराटमसि विष्णोः श्नप्त्रेस्थो
विष्णोः स्यूरति विष्णोर्ध्रुवोसि वैष्णवमसि विष्णवे त्वा।।
अग्निर्देवता वातोदेवता सूर्यो देवता चन्द्रमा देवता
वसवो देवता रूद्रा देवता दित्या देवता मरूती देवता विश्वेदेवा
देवता बृहस्पतिर्देवतेन्द्रो देवता वरूणो देवता
द्यौः शान्तिरन्तरिक्षँ शान्तिः पृथ्वी शान्तिरापः
शान्तिरौषधयः, शान्ति वनस्पतपः शान्तिर्विश्वेदेवाः,

प्रथम स्वाधीनता संग्राम के नायक
वीर शिरोमणि मंगल पांडे

अंग्रेज कौम जैसी कूटनीतिज्ञ, दूरदर्शी, परिश्रमी और लगनशील कौम विश्व में दूसरी कोई नहीं है। ये लोग व्यापारी बनकर भारत आए और धीरे–धीरे एक छत्र, चक्रवर्ती सम्राट बन गए। ये भारतीयों से रंगरूप, धर्म, भाषा तथा आचार–विचार से सर्वथा भिन्न थे। ये भारत के शासक बनकर ही रहना चाहते थे–' फूट डालो और शासन करो ' तथा उच्चकुलीन व्यक्तियों को सुविधायें देकर शेष आम जनता को ठोकर मारो। इसका प्रमाण यह है कि तत्कालीन सेना में विशेषकर बंगला सेना का 3/5 भाग उच्चजातीय ब्राह्मण तथा राजपूतों के सदस्यों का था। ये भारतीय सैनिक निम्न जातीय सैनिकों के साथ समानता के व्यवहार से मुंह मोड़े रहते थे। 1857 ई. को प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम से पूर्व भारतीय कुलीनतंत्र को अधिकार तथा पदवी से वंचित कर दिया गया था। इसी कारण बहुत से इतिहासकार इस संग्राम को राष्ट्रवाद से प्रेरित होकर लड़ा जाना नहीं मानते। श्री. के. एम. मुंशी ने अत्यंत बुद्धिमत्ता से इसे स्वतन्त्रता संग्राम का प्रथम चरण वर्णित किया है तथा 'भारत का ब्रिटिश इतिहास' के लेखकों ने लिखा है– 'अधिकांश नेताओं ने विद्रोह में केवल स्वार्थ सिद्धि के लिए भाग लिया, परन्तु ऐसे व्यक्ति नगण्य थे, जिन्होनें निःस्वार्थभाव से राष्ट्रहित के लिए किए गए

आन्दोलन में भाग लिया हो। इनमें अहमद उला तथा तांत्या टोपे का नाम उल्लेखनीय है। इनके नाम स्वर्णाक्षरों में लिखे जाने योग्य हैं।

वीर शिरोमणि मंगल पांडे

मंगल पांडे का नाम लेते ही हर भारतीय की छाती गर्व से फूली नहीं समाती। भारत के प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम की चिंगारी के रूप में तथा मातृभूमि पर बलिदान होने वाले वीर रणबांकुरों में मंगल पांडे पहले योद्धा थे। सन् 1857 की क्रान्ति का सूत्रपात करने वालों में मंगल पांडे ने अग्रणी एवं महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

क्रान्ति का बिगुल बजाते हुए परेड के बाद मंगल पांडे ने अपने साथियों के बीच इस प्रकार सिंह गर्जना की थी :–

'भाइयो! आज भारत माता गुलामी की जंजीरों में जकडी हुई है। ये फिरंगी गोरे गाय की चर्बी कारतूसों में लगाकर हमारा धर्म भ्रष्ट करना चाहते हैं। हम उस भारत भूमि पर जन्में हैं, जहां महाराणा प्रताप, गुरू गोबिन्द सिंह, छत्रपति शिवाजी जैसे बलिदानी वीरों ने जन्म लिया है। हम वीरों की सन्तान हैं, अपना धर्म कदापि भ्रष्ट नहीं होने देंगे। चाहे फांसी के तख्ते पर ही क्यों न झूलना पड़े' मंगल पांडे की गर्जना सुनकर समस्त भारतीय सैनिकों की भुजाएं फड़क उठीं।

29 मार्च 1857 रविवार को बारकपुर छावनी में भारतीय सैनिक प्रतिदिन की भांति परेड के मैदान गए। मंगल पांडे अपने आप पर नियन्त्रण न रख सका। उसने अपने साथियों को संबोधित करते हुए कहाः–

'भाईयों! उठो किस चिन्ता में पड़े हो? मैं आप सबको धर्म की सौगन्ध दिलाता हूँ। स्वाधीनता के लिए इन विधर्मी, अत्याचारी गोरों पर टूट पड़ो।'

अंग्रेज़ सार्जेंट मेजर हडसन ने वीर मंगल पांडे का रौद्र रूप देखा तो कांप उठा। कांपते स्वर से उसने अन्य सैनिकों को पांडे को गिरफ्तार करने की आज्ञा दी। किन्तु कोई भी सैनिक मंगल पांडे को हाथ लगाने को तैयार न था, इसी बीच मंगल पांडे ने अंग्रेज अधिकारी पर अपनी राइफल से गोली दाग दी। गोली की आवाज सुनकर ज्योंही लेफ्टिनेंट बाग अफसर घटना स्थल पर पहुंचा और मंगल पांडे पर गोली दागने का प्रयास किया, मंगल पांडे ने वहीं तलवार के वार से उसे ढ़ेर कर दिया।

जब मंगल पांडे ने अपने आपको चारों ओर से घिरा देखा तो उसने अपनी बन्दूक से स्वयं को गोली मार ली और घायल होकर जमीन पर गिर पड़ा। उसे गिरफ्तार कर अस्पताल भेजा गया, उस पर मुकद्दमा चलाया गया। सैनिक अदालत ने मंगल पांडे को फांसी की सजा सुनाई। 13 अप्रैल 1857 के दिन मंगल पांडे प्रथम भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम में प्राणों की आहुति देकर हंसते हंसते फांसी के तख्ते पर झूल गए।

भृगु–परिवार

वैदिक काल में भृगुवंश एक महाप्रचण्ड शक्ति था। इस कुल में निम्नलिखित ऋषि एवं उनकी पत्नियां मुख्य रूप से प्रसिद्ध हैः– शुक्राचार्य, देवयानी, च्यवन, सुकन्या, ऋचीक , सत्यवती, जमदिग्न, रेणुका, शुनःशेप, परशुराम, कवि, चायमान, और्व और मार्कण्डेय।

श्रीमद्भागवत के अनुसार ऋषि ऋचीक ने गाधि राजा को एक हजार श्याम वर्ण वाले घोड़े देकर उनसे उनकी पुत्री सत्यवती को भार्या रूप में ग्रहण किया। उन दोनों के कोई संतान नहीं हुई। एक दिन भृगु ऋषि आए और उनसे उनका कुशलक्षेम पूछा। सत्यवती ने उनसे प्रार्थना की और कहा कि न तो मेरे कोई पुत्र है, और न मेरे कोई भाई है। ऋषि ने मंत्रो द्वारा दो चरूओ को तैयार किया। एक में क्षात्र तेज तथा दूसरे में ब्राह्म तेज डाला और कहा कि ब्राह्म तेज वाला तुम खा लेना तथा क्षात्र तेज वाला तुम अपनी माता को दे देना। किन्तु चरुओं में व्यतिक्रम हो गया। प्रार्थना करने पर ऋषि ने कहा कि मैं इतनी व्यवस्था कर देता हूं कि तुम्हारा पुत्र तो सात्विक वृति का होगा किन्तु उसके आगे जाकर पुत्र राजसिक वृति का होगा। परिणाम स्वरूप गाधि राजा का पुत्र विश्वामित्र सौम्यप्रकृति का हुआ और उसी प्रकार सत्यवती के भी जमदग्नि सतोगुणी पुत्र उत्पन्न हुआ। जमदग्नि का विवाह इक्ष्वाकु वंशी राजा रेणु की पुत्री

रेणुका के साथ हुआ। जमदग्नि के वसुमद आदि पांच पुत्र उत्पन्न हुए, जिसमें सबसे छोटा राम (परशुराम) था।

कार्तवीर्य अर्जुन (सहस्त्रार्जुन) कृतवीर्य का पुत्र था। उनकी नगरी 'महिष्मती–रेवा (नर्मदा) के किनारे थी। एक बार उसने नर्मदा नदी में अपनी पत्नियों के साथ क्रिड़ा करते हुए नदी के प्रवाह को रोक लिया था। इससे रावण का शिविर जलाप्लावित हो गया। रावण ने सहस्त्रार्जुन को पकड़ लिया तथा बाद में उसे छोड़ दिया। वह एक बार घूमता हुआ जमदग्नि के आश्रम में आ गया। मुनि ने उसका राजोचित आदर–सत्कार किया। राजा यह सब देख आश्चर्यचकित हो गया। मुनि ने उसकी जिज्ञासा को शान्त करते हुए बताया कि यह सब कुछ कामधेनु की कृपा से किया गया है। राजा ने मुनि से उस कामधेनु को बलपूर्वक छीन लिया।

राजा के चले जाने के पश्चात् आश्रम में परशुराम आए और उन्होनें सारी बातें सुनी। तदनन्तर वे धनुषवाण लेकर महिष्मती पहुंचे। सहस्त्रार्जुन ने सत्रह अक्षौहिणी सेना के साथ परशुराम का मुकाबला किया। परशुराम ने सेनाओं के संहार के साथ सहस्त्रार्जुन को मार गिराया और कामधेनु को वापिस आश्रम में लौटा लाए।

जमदग्नि ने सहस्त्रार्जुन के वध को सुनकर कहा हे पुत्र! हम क्षमाशील ब्राह्मण है। राजा का वध ब्रह्मवध से भी बुरा होता है। अतः तीर्थो की यात्रा करो।

पिता की आज्ञा मानकर परशुराम एक वर्ष तक तीर्थाटन करते रहे।

एक समय रेणुका पति के लिए जल लाने हेतु गंगा पर गई। वहां पर उसने अप्सराओं के साथ क्रीडा करते हुए गन्धर्व राजा चित्ररथ को देखा। उसे वहां काफी देर हो गई। वापिस आने पर उसे विकृत मानसा जान कर जमदग्नि क्रोधित हो गए और अपन पुत्रों से कहा कि इसका सिर काट डालो। पुत्रों ने वैसा नहीं किया। जब परशुराम से वैसा करने को कहा गया तो उन्होनें उसी क्षण अपनी माता का सिर काट दिया। पिता ने प्रसन्न होकर परशुराम से वर मांगने को कहा, परशुराम ने अपने वर में अपनी माता को जीवित करा लिया।

कुछ दिन बाद सहस्त्रार्जुन के पुत्रों ने परशुराम की अनुपस्थिति में यज्ञशाला में बैठे जमदग्नि को मार डाला और जाते हुए वे ऋषि के सिर को भी ले गए। जब परशुराम वन से आश्रम आए तो उन्होनें पिता को सिरविहीन देखा तथा करूण क्रन्दन करती हुई अपनी माता को देखा। परशुराम सीधे महिष्मती पहुंचे। वहां उनहोनें आततायी हैहय वंशी सहस्त्रार्जुन के पुत्रों को मौत के घाट उतारा। पिता का सिर उठाया। आश्रम में आकर उन्होनें उस सिर को कबन्ध से जोड़ दिया। फिर उसने एक यज्ञ किया। यज्ञ के आचार्य कश्यप थे। परशुराम ने विजित सारी भूमि व सारा धन गुरू कश्यप को दान में दे दिया। कश्यप ने उस भूमि को पुनः क्षत्रियों को वापिस कर दिया। परशुराम ने ब्रह्मनदी सरस्वती में अवभृथ स्नान किया और महेन्द्र पर्वत पर जाकर तपस्या की। ऋषि जमदग्नि

सप्तर्षि मण्डल में सुशोभित हुए। परशुराम भी पिता से स्वेच्छामृत्यु का वर प्राप्त कर चिरंजीवी हो गए। इस संबध में निम्न श्लोक भी प्रचलित हैः–

अश्वत्थामा बलि र्व्यासो–हनुमांश्च विभीषणः।
कृपः परशुरामश्च सप्तैते चिर जीविनः।।

महान् क्रान्तिकारी पं. रामप्रसाद बिस्मिल

पं. रामप्रसाद बिस्मिल के पिता शाहजहाँपुर में कचहरी के अन्दर स्टाम्प बेचते थे। वे बहुत अच्छे पहलवान थे। फलस्वरूप रामप्रसाद का शरीर उनके पिता के ही समान सुगठित और बलवान् था। रामप्रसाद पर आर्य समाज का बड़ा प्रभाव था। उन्होने आर्य कुमार सभा में भाग लेकर व्याख्यान देना सीखा।

अध्ययन काल में रामप्रसाद ने कुछ स्वदेश सम्बन्धी पुस्तकों का अध्ययन किया। उस समय लखनऊ में कांग्रेस का अधिवेशन हुआ, रामप्रसाद ने भी उसमें भाग लिया। वहीं से उनके मन में देश सेवा की भावना जागृत हुई और अंग्रेज सरकार को उलटने की भावना पैदा हुई।

रामप्रसाद पर तिलक जी का बडा प्रभाव था। उन्होनें युवकों को एकत्रित करके लोकमान्य तिलक को एक किराये की गाड़ी में बिठाकर धूमधाम से जुलूस निकाला। लखनऊ में ही रामप्रसाद को क्रान्तिकारी दल का ज्ञान हुआ। वे उस दल की कार्यकारिणी के सदस्य बन गए। रामप्रसाद ने अनेक पुस्तकें लिखीं –अमेरिका को स्वाधीनता कैसे मिली, देशवासियों के नाम संदेश, क्रान्तिकारी जीवन , बोलशेविक कारतूस, मन की लहर आदि।

उन्होंने राजनैतिक डकैती करने के लिए चन्द्रशेखर आजाद, अशफाकुल्ला खां, मन्मथनाथ गुप्त, बनवारी लाल, सतीश, चन्द्रनाथ बख्शी, मुरारीलाल, केशव चक्रवर्ती, राजेन्द्रनाथ लाहड़ी और मुकन्दी लाल नामक दस देशभक्तों को

एकत्रित किया।

9 अगस्त सन् 1925 को आठ डाउन डाक गाड़ी को काकोरी स्थान पर लूटा गया। लूट का धन सभी देशभक्तों को बांट दिया गया। इस डकैती के समय एक व्यक्ति की मौत हो गई थी, ब्रिटिश सरकार ने इसी अपराध के लिए 19 दिसम्बर को काकोरी केस के वीरों को फांसी के तख्तों पर लटका दिया।

जब रामप्रसाद को फांसी के तख्ते पर ले जाया गया तो उन्होने ' वन्दे मातरम्' और ' भारत माता की जय' के नारे बुलन्द किए। चलते समय उन्होनें कहा :–

मालिक तेरी रजा रहे और तू ही तू रहे,
बाकी न मैं रहूँ, न मेरी आरजू रहे।
जब तक कि तन में जान, रगों में लहू रहे,
तेरा ही जिक्र या तेरी जुस्तजु रहे।

रामप्रसाद बिस्मिल ने देशप्रेम और उस पर बलिदान होने की वह ज्वाला प्रज्वलित की, जिसकी लपटों में ब्रिटिश साम्राज्यवाद झुलस कर भस्म हो गया। भारतीय स्वतन्त्रता की दीपशिखा पर जलने वाले इस परवाने को भारत की जनता सदा सदा श्रद्धा सम्मान के साथ पूजती रहेगी और उन्हीं की पंक्तियों को गुनगुनाती रहेगी। ''शहीदों की चिताओं पर लगेंगे हर बरस मेले। वतन पर मरने वालों का यही बाकी निशां होगा।''

क्रोधी ही नहीं महादानी भी थे परशुराम

विश्वामित्र ने वशिष्ठाश्रम से नंदिनी गाय को बलपूर्वक हरने का प्रयत्न किया परन्तु ब्रह्मतेज के सम्मुख उसे पराजित होना पड़ा। अपने शान्त स्वभाव के कारण वशिष्ट ने विश्वामित्र का अपराध क्षमा कर दिया। यही अपराध आगे चलकर कार्तवीर्य ने भी किया परन्तु इस बार सामना शान्त स्वभाव के मुनि से नहीं अपितु उग्र स्वभावी वीर परशुराम से था। जमदग्नि आश्रम से सुरभि गाय चुराकर कार्तवीर्य अपनी राजधानी महिष्मती पहुंच भी नहीं पाया था कि परशुराम ने अपने परशु से दत्तात्रेय से वरदान पा कर उत्पन्न हुए कार्तवीर्य की पहले एक हजार भुजायें काट डाली तत्पश्चात् उसका सिर काट डाला। रावण को अपनी कोख में दबा कर रखने वाले अविजित योद्धा सहस्त्रार्जुन का वध कोई साधारण घटना नहीं थी। यह घटना उसके कुल के मदान्ध नेत्रों को खोलने के लिए पर्याप्त थी। परन्तु दुर्दिन में बुद्धि उचित कार्य नहीं करती। कार्तवीर्य के पुत्रों ने सीख को अपनाने के स्थान पर उद्दण्डता को अपनाया। समाधिस्थ परशुराम के पिता जमदग्नि को कपट से मार डाला। असहाय रेणुका ने परशुराम को आर्तवाणी मे इक्कीस बार सहायता के लिए पुकारा। अपने पिता के वध एवं माता के अपमान को वह सहन नहीं कर सके एवं इक्कीस बार अपने परशु को शत्रुओ के रक्त से नहला दिया परन्तु अपनी माता के आदेश से इक्ष्वाकु वंशीय क्षत्रियों

का संहार नहीं किया। सम्पूर्ण पृथ्वी पर उनका अधिकार हो गया।

विजयोपरान्त वह अपने इष्टदेव एवं गुरु भगवान शंकर से आशीष लेने कैलाश पर्वत पहुंचे। वहां इनका गौरीनन्दन गणेश से झगडा हो गया, भयानक युद्ध छिड़ गया। अंत में परशुराम ने शंकर द्वारा प्रदत परशु का प्रहार किया। गणेश ने अपने पिता के शस्त्र का मान रखने के लिए सम्मान सहित इस प्रहार को अपने दांत पर सहन कर लिया। तब से गौरी नन्दन एकदंत कहलाये। रक्तरंजित गणेश को देखकर गौरी परशुराम पर क्रोधित हो उठी। परन्तु परशुराम की क्षमा याचना से एवं स्तुति से वात्सल्यमयी माता गौरी द्रवित हो गई। प्रसन्न होकर उन्होनें परशुराम को केवल क्षमा ही नही किया अपितु अमरता का वरदान भी दिया। भार्गव परशुराम के पिता ने तो इनको दीर्घायु का वरदान ही दिया था परन्तु गौरी मैया ने तो इनको अमरता ही प्रदान कर दी।

तदनन्तर वह अपने गुरू के आदेशानुसार महेन्द्र पर्वत पर तपस्या करने चले गए। उन्होने अश्वमेघ नामक महायज्ञ का विधिवत् अनुष्ठान किया और यज्ञ में पूर्व दिशा 'होता' को, दक्षिण दिशा ब्राह्मण को, पश्चिम दिशा 'अध्वर्यु' को उत्तर दिशा सामगान करने वाले 'उद्गाता' को दे दी। अग्निकोण आदि विदिशायें ऋत्विजों को दे कश्यप जी को मध्य भूमि उपद्रष्टा को आर्यवर्त एवं अन्य को अन्यान्य दिशायें प्रदान की। जब द्रोणाचार्य पहुंचे और अपरिमित धन की याचना की। परन्तु वह तो पहले ही सब कुछ दान कर चुके थे। याचक को निराश कैसे

कर सकते थे वह महादानी? बड़ी नम्रता से द्रोण को कहा ,' मेरे पास केवल यह शरीर अथवा अस्त्र शस्त्र है। आप जो चाहे ले सकते है। द्रोण ने प्रयोग, उपसंहार एवं रहस्य सहित सब अस्त्र शस्त्र विद्या सीख ली और प्रसन्नचित वापिस लौट आए। सब कुछ दान करने के पश्चात् भी इन्होने भीष्म, अर्जुन एवं कर्ण को युद्धकला से मालामाल का दिया।

प्रायः परशुराम को क्रोधी एवं उग्रकर्मा की संज्ञा दी जाती है, परन्तु इनका दूसरा सौम्य, शान्त एवं दानी रूप श्रद्धा एवं पूजा के याग्य है, कमललोचन जमदग्निनंदन अब भी महेन्द्र पर्वत पर तपस्यालीन है। वह अगामी मन्वन्तर में सप्तर्षियों के मंडल में रहकर वेदों का विस्तार करेंगे।

– डा. दर्शन त्रिपाठी

मैं कौन हूँ।

क्या आपने ख्याल किया है कि 'जिसको अपने अस्तित्व का भी बोध न हो वह कौन होता है? उसकी संज्ञा है पत्थर, जड़ पदार्थ

जो दिन रात क्रियाशील हो किन्तु उसको यह न पता हो वह कौन है, उसके बनाने वाला कौन है, उसका लक्ष्य क्या है? आप उसको क्या संज्ञा देंगे। यह है मशीन। जिसमें क्रिया शक्ति तो है किन्तु चिन्तन शक्ति नहीं।

जो क्रियाशील भी हो, अपनी क्रिया के प्रति सजग भी हो किन्तु उसको यह न पता हो वस्तुतः वह कौन है? यह है भाग दौड़ करने वाला साधारण मानव। जो खाना, कमाना, परिवार पालना तथा सोना भी जानता है।

किन्तु जो क्रियाशील भी हो, अपनी क्रिया के प्रति पूरा सावधान और सजग भी हो, उसने यह भी धारणा पक्की कर रखी हो कि मैं अमुक कारीगर, किसान, अध्यापक, नेता, विद्वान, कलाकार आदि हूँ। किन्तु उसको यह कभी ध्यान न आया हो कि मेरा वास्तविक स्वरूप क्या है। क्या मैं मरने जन्मने वाला, रोगी, वृद्ध होने वाला शरीर हूँ? जो यह सोचता है कि मेरी आयु 50, 60, 70, 80 की हो गई है। मैं बूढ़ा हो गया हूँ, मैं कभी जवान था। यह है वर्तमान सभ्य मानव।

कोई व्यक्ति ऐसा है जिसने कहीं से पढ़ सुन लिया कि प्राणी हड्डी मांस

वाला मरणधर्मा शरीर नहीं है, वह तो सच्चिदानन्द ब्रह्म का अंश वस्तुतः ब्रह्मरूप ही है। उसके दिमाग की तीक्ष्णता व सूक्ष्म अहम् वा किसी गुरुजन व शास्त्र में श्रद्धावृद्धि के कारण उसको यह बात बड़ी जँच जाती है। वह अपने आपको ब्रह्म मान बैठता है। उसका दिमागी चिन्तन इसी दिशा में चलता रहता है। वह सोचता है मुझे तो निश्चय हो गया 'मैं ब्रह्म हूँ। जव तक यह शरीर है तब तक सुख–दुख, रोग व्याधि चाहे कुछ भी हो, यह तो प्रारब्ध कर्म है। इनका भुगतान तो करना ही होगा। शरीर छूटने के बाद मैं ब्रह्म रूप हो जाऊँगा क्या, वस्तुतः तो अभी भी हूँ। वह इसी धारणा में मस्त है तथा दुनिया के काम काजों में साधारण मानव की तरह रमा रहता है।

ऐसे प्राणी की संज्ञा है? यह है वन्ध्या ज्ञानी। इसका ज्ञान केवल जीभ के सिरे तथा दिमाग की ऊपरी परत पर जमा रहता है। कही आप भी इनमें से या इन जैसे कोई प्राणी तो नहीं हैं? ये सब मानव हैं जिनकी तुलना एक भिखारी से की जा सकती है जो पुरानी झोंपडी में रहता है। झोंपडी के दरवाजे पर पक्की सड़क है, जिसमें लोगों का आना जाना लगा ही रहता है। भिखारी दरवाजे पर बैठा, भिक्षापात्र लिये लोगों से भिक्षा मांगता रहता है। प्यार, फटकार या सिक्के की झनकार ये सब मिलता रहता है। भिखारी को खाना, पीना, सोना यह है उसकी अतिरिक्त दिनचर्या । झोंपडी के अन्दर उसने कूडा कर्कट भर रखा है। एक कोने में रात को सो जाता है। ऐसा जीवन भी क्या जीवन। समय

आने पर उसका शरीर छूट जाता है।

इस भिखारी का दुर्भाग्य तो देखिये झोंपड़ी के अन्दर धरती की गहराई में अथाह धन राशि दबी पड़ी है। यह सब उसके पुरखों की जायदाद है। इस सबका उत्तराधिकारी वह भिखारी है। अथाह दौलत का मालिक होते हुये भी भिखमंगा।

यह हाल प्रायः प्रत्येक प्राणी का भी है। यह स्थूल मरणधर्मा शरीर ही तो झोंपड़ी है। गतिशील संसार ही वह सड़क है जिस पर चलते हुये प्राणियों से स्थूल शरीर में मैं बुद्धि वाले प्राणी का संबंध होता है। राग–द्वेष, सुख–दुख, हानि–लाभ के चक्कर में जीवन व्यतीत होता है। प्राणी शरीर स्थित मुँह, नाक, आँख आदि नौ इन्द्रिय छिद्रों के द्वारा संसार के प्राणियों पद्वार्थों के साथ सम्बन्ध जोड़ता उम्र समाप्त कर देता है।

किन्तु आश्चर्य इस साढे तीन हाथ के शरीर के अन्दर ही हृदयरूपी गगन गुहा में वह परमानन्दमयी अखण्ड दौलत स्थित है जिसका मालिक, शरीरधारी जीव है। अनजाने में गहरी नींद की स्थिति में अथवा किसी भौतिक इच्छा की क्षणभर की शांति की अवस्था में इसी सच्ची दौलत के साथ जीव का सम्बन्ध होता है। जीवन में मिल रही थोडी बहुत शान्ति तथा शक्ति इसी दौलत के कारण है।

हृदयरूपी गगन गुहा में अपनी चेतना का स्थित होना ही परमानन्द की

प्राप्ति है। वहां स्थित हाने पर ही अनुभव होता है कि मैं स्वयं सच्चिदानन्द स्वरूप हूँ। वहीं इस प्रश्न का पूरा उत्तर मिलता है कि मैं कौन हूँ।

इतना असहाय देश?

राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री क्या इतने असहाय है कि एक हिन्दु धर्माचार्य पर बिना कारण प्रहार चुपचाप देखते जायें?

यह एक विडम्वना ही है कि हमारे राष्ट्रपति जी जो देश में नैतिकता, उच्च जीवन मूल्यों तथा भारत की महान आध्यात्मिक परम्परा से प्रेरित भविष्य की बात करते है, इस मामले में स्वयं को विवश पा रहे है और मनमोहन सिंह ने देश के मुख्य कार्यकारी होने का अपना दायित्व सिर्फ जयललिता को चिट्ठियां लिखने तक सीमित किया हुआ है।

सर्वोच्च न्यायालय द्वारा तमिलनाडु सरकार को फटकार लगाते हुए शंकराचार्य जी की जमानत स्वीकार किए जाने के बाद किसी सभ्य मनुष्य से अपेक्षा की जा सकती थी कि वह अपनी गलती मानेगा और अपना व्यवहार संयत करेगा। पर जयललिता ने तुरन्त शाम को ही बालपेरिवा विजयेन्द्र सरस्वती जी को गिरफ्तार कर लिया इसके साथ ही ऐसे कदम उठाए जो ऐसे व्यक्ति की मनोदशा दर्शाते हैं जो झल्लाहट और खीझ में अपने बाल नोच रहा हो। जैसे

1. कांची मठ के 173 बैंक खाते सील कर दिये।
2. पूज्य शंकराचार्य जयेन्द्र सरस्वती जी को 12 जनवरी के दिन फिर से विशेष जांच दल के सामने सवालों के जबाब देने के सम्मन जारी किए गए। जब

शंकराचार्य जी के वकील ए. षण्मुगम ने विशेष जांच दल को बताया कि यह सम्मन गैरकानूनी हैं तो उन्होनें कहा कि ठीक है, अभी वे मौखिक रूप से सम्मन वापस लेते है, पर इसके बारे में कल बताएगें

3. सर्वोच्च न्यायालय द्वारा शंकराचार्य जी को जमानत देने के बाद फिर गैर कानूनी ढंग से शंकराचार्य जी को वेल्लोर जेल में तथाकथित पूछताछ की संदिग्ध 10 मिनट की फिल्म सन टी.वी. चैनल को पहुंचाई गयी। सन टी. वी चैनल ने लिखित रूप से शहर के पुलिस आयुक्तों से इस सी.डी. को प्रसारित करने की अनुमति मांगी तो कोई आपति नही की गई।

कहा जाता है कि जयललिता ने सर्वोच्च न्यायालय द्वारा दी गई जमानत का गुस्सा पुलिस महानिदेशक और गृह आयुक्त पर उतारा और अब एलेक्जेंडर नामक पुलिस अधिकारी को महानिदेशक नियुक्त किया है।

ऐसा लगता है कि शायद जयललिता खुद को ईदी अमीन मानती है। जिस प्रकार से सर्वोच्च न्यायालय द्वारा शंकराचार्य को दी गई जमानत के बाद उन्होनें सर्वोच्च न्यायालय के सामने यह आवेदन दिया है कि वह श्री जयेन्द्र सरस्वती जी को केरल, कर्नाटक , तमिलनाडु और आन्ध्र प्रदेश में कहीं भी रहने की अनुमति न दें बल्कि उन्हें उत्तर भारत में ही रहने के निर्देश दें, यह मानसिक संतुलन खो चुके व्यक्ति का ही परिचारक है।

यह एक आजाद देश है, इसे इतना बेबस, इतना लाचार तो नहीं

होना चाहिए।

क्या शंकराचार्य जी की अवमानना केवल भाजपा और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के लिए चिन्ता का विषय होना चाहिए? क्या कांग्रेस तथा अन्य दलों में हिन्दु संवेदनाओं के बारे सोचने वाला आज एक भी व्यक्ति नहीं रह गया है? उससे भी परे एक और प्रश्न है – एक धर्माचार्य के विरूद्व राजसत्ता के पागलपन भरे दुरूपयोग पर क्या भारत के सिर्फ हिन्दुओं को ही चिन्ता होनी चाहिए? और बाकी का इस अवैध गोरखधंधे से कोई सरोकार नही।

–तरुण विजय
सम्पादक पांचजन्य

ओम् भगवते परशुरामाय नमः

आरती श्री परशुराम जी की

श्री भगवान् परशुराम जी की आरती
ऋषि जमदग्नि का पुत्र प्यारा।
माता रेणुका की अंखियों का तारा।।
सारे जगत का पालनहारा।
दया दृष्टि प्रभु हम पर कीजे – आरती श्री परशुराम जी की कीजे

धनुष बाण की शोभा न्यारी।
माथे तिलक विशाल भुजा धारी।।
हाथ में फरसा है अति भारी।
सब दुष्टन का दमन कर दीजे – आरती श्री परशुराम जी की कीजे

सहस्रबाहु को मार मुकाया।
कामधेनु को मुक्त कराया।।
ऐसा अपना प्रभाव दिखाया।
सारी पृथ्वी दान कर दीजे – आरती श्री परशुराम जी की कीजे

पिता श्री के आज्ञाकारी।
जिसको जाने दुनिया सारी।।
ब्रह्म तेज की शोभा न्यारी।
शरण पड़े की रक्षा कीजे – आरती श्री परशुराम जी की कीजे

जो कोई परशुराम जी की आरती गावे।
बसे बैकुंठ परम पद पावे।
दया दृष्टि प्रभु सब पर कीजे – आरती श्री परशुराम जी की कीजे

हिन्दू महासभा के अधिवेशन में मालवीय जी ने अध्यक्षीय भाषण में कहा, 'जो लोग भूल से बलात्कार से या प्रतोभन से विधर्मी हो गए हैं, उन्हें मंत्रदीक्षा के द्वारा हिन्दू समाज में ग्रहण कर लिया जाए। हिन्दू नर–नारियों की गुण्डों से रक्षा के लिए प्रत्येक हिन्दू को स्वयं शक्तिशाली व निर्भीक होना पड़ेगा। प्रत्येक हिन्दू युवक को सैनिक शिक्षा दी जानी चाहिए।'

हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना

मालवीय जी सन् 1905 ई. में वकालत छोड़कर हिन्दू विश्वविद्यालय की योजना में लग गए। 1906 को कुंभ के अवसर पर प्रयाग में जगद्गुरू शंकराचार्य की अध्यक्षता में सम्पन्न धार्मिक समारोह में हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना की घोषणा की गई। फलस्वरूप मालवीय जी ने त्यागमय जीवन तथा उनकी विद्वत्ता से प्रभावित सभी देशवासियों ने उन्हें अपार धन प्रदान किया और थोड़े ही दिनो में हिन्दू विश्वविद्यालय देश के प्रमुख शिक्षण संस्थान के रूप में खड़ा हो गया।

राष्ट्रीय कांग्रेस में भाग लेना

1 अगस्त 1930 ई. को बम्बई में सरदार पटेल आदि नेताओं के साथ मालवीय जी को गिरफ्तार कर जेल में डाला गया। 1931 ई. को मालवीय जी गांधी जी

के साथ गोलमेज सम्मेलन में भाग लेने के लिए लन्दन गए। मालवीय जी ने सन् 1928 ई. में एक 'सर्व–ब्राह्मण सम्मेलन' का आयोजन किया, जिसमें काशी के तत्कालीन महाराज सर प्रभु नारायण सिंह को स्वागताध्यक्ष बनाया गया।

मालवीय जी नोआखाली व ढाका के लोमहर्षक हत्याकाण्डों तथा हिन्दू महिलाओं पर किए गए अत्याचारों की घटनाएं सुनकर दहाड़ मारकर रो पड़े और कहने लगे :– 'मैं अनुभव करता हूँ कि मानवता संकट में है। हिन्दू संस्कृति और धर्म भी खतरे में है। आज एक असाधारण वस्तुस्थिति उत्त्पन्न हो गई है। हिन्दूओं को चाहिए कि सर्वसाधन सम्पन्न होकर वे संगठित हो जाएं और अपनी रक्षा की समुचित व्यवस्था कर लें। आत्मरक्षा और आत्मसंयम ही हमारा व्रत होना चाहिए।'

महामना मालवीय जी इन्ही घटनाओं के आघात में घुलते रहे तथा 12 नवम्बर 1946 को गोधामवासी हुए।

ब्राह्मण आरक्षण ऐलाने जंग

मंजूर करो ब्राह्मण आरक्षण, यह ऐलाने जंग है।
संगठित ब्राह्मण वर्ग समूचा, नूतन जोश–उमंग है।।

जो सरकारें, बहरी–अन्धी, हमें नही मंजूर है।
कफन बांध जब कूच करें हम, क्या जयपुर दिल्ली दूर है।।

आरक्षण की भीख ना मांगें, यह अधिकार हमारा है।
उतिष्ठ–जागृत उद्घोष गर्जना, भारत प्राणों – प्यारा है।।

सत्ताधीशों आंखे खोलो सैलाब उमड़ता आया है।
आरक्षण मंजूर करो तुम, यह महाकाल की छाया है।।

केन्द्र राज्य सरकारें सुन लें, दुर्वासा को शांत करो।
नहीं अन्यथा अपना जीवन, अपने हाथों क्लांत करो।।

आरक्षण दो या गद्दी छोडो यही हमारी मांग है।
पसन्द नहीं इन नेताओं का क्या नाटक – सवांग है।।

बूढ़ों में भी राम आज जब नूतन जोश – जवानी है।
उत्तिष्ठ – जाग्रत युवा वाहिनी, किसको मुंह की खानी है।

परशुराम – गौतम – दधीची की गूंजी अम्बर वाणी है।
ब्राह्मण राष्टभक्त है त्यागी, सर्वश्रेष्ठ बलिदानी है।।

आरक्षण आधार आर्थिक, प्रतिभा गुण – सम्मान हो ।
सुशिक्षित – कर्तव्यनिष्ठ सब, जब मेरा देश महान हो।।

जिस बलबूते नेताओं ने अपनी रोटी सेकी है।
वोटर को फुसलाने हेतु, टुकड़ा रोटी फेंकी है।।

भेद भाव की फूट नीतियां, राम नहीं चल पायेगी।
अन्याय – अनीति – शोषण होली, निश्चित ही जल जायेंगी।।

श्री शिवस्तुति

ऊँकार बिन्दु संयुक्त नित्यं ध्यायन्ति यागिनः।
कामदं मोक्षदं चैव ऊँकारास नमो नमः।।

"अ" कार "उ" कार और "म" कार से संयुक्त बिन्दु स्वरूप जिस नारद स्वरूप को योगीगण और साधक नित्य ध्यान करते है
वह शंकर इच्चछाओं और कामनाओं की पूर्ति करने वाले और मोक्षदायक हैं, उस "ऊँ" कार स्वरूप शिव को मेरा प्रणाम है।

नमन्ति ऋषियो देवा नमन्त्यप्सरसा गणाः।
नरा नमन्ति देवेशं नकारय नमो नमः।।

ऋषि, देवतागण, यक्ष–गन्धर्व और अप्सराओं के साथ मनुष्य जिन शिवजी को गार गार नमन करते है। उस "न" कार स्वरूप शिव को मेरा प्रणाम है।

महादेव महात्मानं महाध्यान परायणम्।
महापापहरं देव मकाराय नमो नमः।।

देवाधिदेव महादेव महान आत्मा है, महाध्यानी है और ये ऐसे देव हे, जो भक्तो के महान से पापों का हरण कर लेते हैं ऐसे "म" कार स्वरूप शिव को मेरा प्रणाम है।

शिवं शान्तं जबन्नाथं लोकानुग्रहकारकम्।
शिवमेकपंद नित्य शिकारास नमो नमः

वह कल्याणकारक, शान्त और जगत के स्वामी हैं उनका स्वभाव ही लोगों पर सदा कृपा करना है। अन्त में एक ही अविनाशी तत्व रह जाता है, वह शिव हैं उस "शि" कार स्वरूप को मेरा प्रणाम है।

वाहनं वृषभो यस्य वासुकिः कण्ठ भूषणम्ः।
वामे शक्ति धरं देवं वकाराय नमो नमः।।

जिनका वाहन धर्मरूपी बैल अर्थात धर्म पर ही शिवरूपी सत्य आरूढ, जिनके गले का आभूषण वासूकि नाम का नाग है, वाम भाग में शक्ति स्वरूपा पार्वती को धारण किये हुवे है ऐसी शक्ति से युक्त "व" कार स्वरूप शिव कसे मेरा प्रणाम है।

यत्रयत्र स्थितो देवः सर्वव्यापी महेश्वरः।
यो गुरूः सर्वदेवना यकाराय नमो नमः।।

जहां कहीं भी कोई देवी देवता प्रतिष्ठित है वहां व्यापी शंकर ही विराजमान है, जो सब देवताओं के गुरू है ऐसे "य" कार स्वरूप शिव को मेरा कोटि कोटि प्रणाम है।

श्री शिवापणमस्तु श्री स्वम्भू लिंग रणकेश्वर महादेव शिव मन्दिक रणीके

श्री परशुराम चालीसा

दोहा

श्री शिव उमा महेश्वर, मात शारदा ध्येय
वरणाहु परशुराम चरति, यश गाथा मन लाये।।
हरो कलेश विकार सब, शुभ बल वुद्वि दात
लाल रेणुका के सुनो, इन दीनन की वात।।

चौपाई

जय जय भृगुकुल आन्नद कारी। जय जय ऋषि कुल विपदा हारी।।
अतुलित बल ज्ञान गुण सागर। विप्र वंश जग कीन उजागर।।
ऋषि जमदग्नि तात तुम्हारे। मात रेणुका के तुम तारे।।
शीश जटा मुख तेज विराजै। त्रिपुण्ड माथे पर साजे।।
गले में सोहे रुद्र की माला। सुन्दर दिखत वक्ष विशाला।।
ब्रह्म सूत्र काँधे पर साजे। कटि मृगछाल मेखला राजे।।
तुम हो वार पिताम्बर धारी। भक्त जनन के संकट हारी।।
कर में थारे वेद संहिता। शर धनुराखो पीठ विधाता।।
शस्त्र शास्त्र अधिकार समाना। ब्रह्म क्षात्र तुम कृपा निधाना।।
–प– कहकर पाप मिटत झट सारे। –र– रमते जग के रखवारे।।

–शु– में शुभ पावें सब प्राणी । –रा– राकेश शुभ सब जानी।।
–म– मंगलदाता हर्षाता। परशुराम जय जय भृगुरामा।।
अजर अमर तुम हे भगवाना। चारों युग प्रताप समाना।।
कार्तवीर्य अर्जुन जब आया। जमदग्नि आश्रम नसाया।।
महर्षि बैठे ध्यान लगाई। काम धेनु तब लाई चुराई।।
खल पुत्रों ने जमदग्नि मारा। परशुराम ने उन्हें संहारा।।
त्रेता युग में हे भगवाना। शिव धनु भंग भया तुम जाना।।
छोड़ तपस्या भागे आये। मन में क्रोध बड़ावह लाये।।
कहां राम धनु भंजन हारा। दशरथ पुत्र मैं दास तुम्हारा।।
राम विनय सुन तुम हर्षाये। खिंचवा धनुष राम पतियाये।।
पुरुषोत्तम अब भारी चीना। वैष्णव धनुष राम को दीना।।
चिरंजीव! तुम द्वापर आके। योग्य शिष्य द्रोणादि पाके।।
परशु! तुम ही ने शिक्षा दीनी। भीष्म, कर्ण सभी ने लीनी।।
जब जरासंघ ने कृष्ण को सताया। युद्ध कौशल उन्हें सिखाया।।
इक्कीस बार मार तारा । दुष्ट और पापी को संहारा।।
सज्जन से नहीं वैर तुम्हारे। दशरथ जनक समान उबारे।।
जीति भूमि ऋषि कश्यप दीना। श्रेष्ठ दानी यश जग मे लीना।।
कश्यप ऋषि के आश्रम आके। महेन्द्र गिरी के ऊपर जाके।।

कलियुग में सिद्धासन पाके। बैठे शिव का ध्यान लगाके।।
विप्र, सन्त सुर के रखवारे। जनरक्षक जनता के प्यारे।।
धेनु, द्विज, भू के दुख टारे। हिंसक अद्यम नरेश मारे।।
पावहि विजय युद्ध में वीरा। पाठ करहिं शांत जो धर धीरा।।
भूत– प्रेत का भय सब भागत। परशुराम पद के अनुरागत।।
पाप रोग नाशक सुखकारी। परशुराम की कीरति भारी।।
पावहि निर्धन धन यश भारी। परशुराम जप कर नर नारी।।
नाम लेत भागहिं सब पीरा। जय जय परशुराम भृगु वीरा।।
चिंरजीवी जनमंगलकारी। कण कण व्यापत सब दुख हारी।।
प्रभु दे निर्मल, ज्ञान प्रकाशा। आवहिं उर श्रद्धा विश्वासा।।
ब्राह्मनन्द ने स्तवन कीना। अल्प मत से यह रच दीना।।
जो पढ़े परशुराम चालीसा। पावहि सुख धर्म आशीषा।
तेज–वदन, कर परशु है, शोभित तीर कमान।।
भकृ ज्ञास सब हरत हैं, परशुराम भगवान।।

बाबा बन्दा बहादुर जी

भारतवर्ष में समय समय पर अनेक गुरूओं, संत, महात्माओं व शहीदों ने जन्म लिया है जिन्होंने समाज की भलाई हेतु अनेक रचनात्मक कार्य किए। बाबा बन्दा बहादुर जी भी उन शहीदों में से एक हैं जिन्होंने हिन्दू धर्म की रक्षा हेतु अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया तथा तत्कालीन मुगल साम्राज्य का डटकर मुकाबला किया।

बाबा बन्दा बहादुर जी का जन्म 16 अक्तूबर सन् 1670 ई. को राजौरी में तच्छल ग्राम में श्री रामदेव भारद्वाज के घर मे हुआ। बचपन का नाम लक्ष्मण देव था। 14 वर्ष की अल्पायु में शिकार खेलते हुए गर्भवती हिरणी के नन्हें नन्हें बच्चों को तड़प कर प्राण देते देख सुकुमार बालक का कोमल हृदय विरक्त हो गया। वे बैरागी बन गये। मगर सच्ची शान्ति प्राप्त नही हो सकी। 1708 ई. में गोदावरी के किनारे नादेड़ नामक स्थान पर जहां आप एक कुटिया में रहते थे, दशम पातशाह श्री गुरू गोबिन्द सिंह जी से मिलाप हुआ, जिसके परिणाम स्वरुप आप संत से सिपाही बने तथा बन्दा बहादुर नाम से विख्यात हुए।

हिरणी के नन्हें नन्हें बच्चों को मरता देख जो कोमल हृदय बैरागी बन गया था, वही हृदय गुरू गोबिन्द सिंह जी के नन्हें नन्हें बच्चों को दीवारों में चिनवाये जाने की गाथा सुनकर एक बार फिर शस्त्र उठाने पर मजबूर हो गया। दशमेश पिता के आशीर्वाद से पंजाब की ओर कूच किया। सिख सेना की कमान

संभाली तथा सिख कौम के प्रथम जरनैल बने।

अन्त में 9 जून 1716 ई. में यह महान योद्धा महरौली में अपने 4 वर्षीय पुत्र अजय सिंह व लगभग 800 साथियों के साथ अत्यंत कष्ट सहते हुए शहीद हो गये।

आपकी स्थापित प्रमुख ऐतिहासिक यादगार, जिसे डेरा बाबा बन्दा बहादुर के नाम से जाना जाता है, वह जम्मू कश्मीर राज्य में तहसील रियासी चन्द्रभागा (चिनाब) दरिया के किनारे पर स्थित है। वैसाखी के पावन पर्व पर यहाँ एक जोड़ मेला लगता है।

एकजुट होना होगा

• वहां बहुत अच्छा माहौल था। हमारा बहुत स्वागत हुआ। लोगों में बहुत प्यार–मोहब्बत दिखाई दी। जब हम वहां से रवाना होने लगे तो लोगों की आंखें भर आई, कहने लगे, जल्दी जल्दी आया करें। वहां लोगों के मन में अध्यात्म और हिन्दू धर्म के प्रति गलतफहमियां थी, वे दूर हुई। वे समझते थे कि हिन्दू धर्म यानी मंदिरों में जाना, अनेक देवी–देवताओं की पूजा करना, जिनमें काली जैसी भयानक स्वरूप वाली देवी है। दरअसल, उन्हें धर्म के बारे में सही ज्ञान नहीं था।

• दोनों देशों के बीच दोस्ती बढ़ाने में आप जैसे आध्यात्मिक संतों की क्या भूमिका है?

• हम संतो के पास ज्ञान का खजाना है, जिसका दुनिया में प्रचार करना हमारा धर्म है। ऐसा न करें तो प्रमाद होगा। जहां तक राजनीतिज्ञों की बात है, वे भी तो मनुष्य ही हैं और हर मनुष्य को अध्यात्मिकता की गहराई में जाने की जरूरत है।

• सही बात है। नहीं तो क्या कारण है कि इतनी पंथनिरपेक्षता की बातें करने वाले नेता चुनाव के समय यह कहते हैं कि फलां पंथ का ध्यान नहीं रखते तो फिर चुनाव के समय जाति पंथ की बात नहीं होनी चाहिए।

• मंदिरों पर शासन का अतिक्रमण और नियंत्रण कहां तक ठीक है?

यह सही नहीं है। अगर देखना है तो सभी धर्म स्थानों को एक ही नजर से देखें। अगर सरकार मंदिरों के अलावा चर्चों मस्जिदों को भी अपने नियंत्रण में ले तो ठीक है। मगर केवल मंदिरों पर नियत्रण करेंगे तो उसका उल्टा असर पडेगा। इससे कट्टरपन बढ़ जाएगा। लोगों के बीच तनाव होने लगेगा। यह नही होना चाहिए।

• आपकी दृष्टि में पंथनिरपेक्षता क्या है?

• पंथनिरपेक्षता यानी सभी मत–पंथो को समान रूप से प्रेम करना, उन्हें समान रूप से देखना।

• भारतवर्ष के चिन्तन में पुनर्जन्म पर गहन आस्था है। हमारे यहां प्राचीन काल से ही मान्यता रही है कि मनुष्य पुराने वस्त्र की तरह शरीर छोड़कर नया शरीर धारण करता है। लेकिन दुनिया की अन्य सभ्यताएं पुनर्जन्म को नहीं मानती। सवाल यह है कि अगर पुनर्जन्म होता है तो सबका ही होता है, चाहे वह किसी मत–पंथ को मानने वाला हो और अगर पुनर्जन्म नहीं होता तो नहीं होता। दुनिया के लोग इसको लेकर जिस अज्ञान मे जी रहे है, उसको कैसे खत्म किया जाए?

आज विज्ञान ने इस बात को हल कर दिया है। अगर आप 'थर्मोडाइनामिक्स' के पहले सिद्धान्त पर यकीन करते हैं कि 'तत्व और ऊर्जा न तो पैदा किए जा सकते हैं, न खत्म तो आप स्वतः ही पुनर्जन्म को मान रहे

होते हैं। क्योंकि भौतिक शरीर का कण कण तो मिट्टी मे मिल जाता है। लेकिन मन यानी ऊर्जा का क्या होता है? आप भौतिक शास्त्र के आधार पर इसे देखेंगे तो आपको पुनर्जन्म पर विश्वास करना ही पड़ेगा। यह तो हुई एक बात । दूसरी बात, अगर आप मनोचिकित्सा अथवा मनोविज्ञान के आधार पर देखेगे तो हर 'साइकिएट्री क्लीनिक (मनोचिकित्सालय) में पास्ट लाइफ थैरेपी (पूर्वजन्म चिकित्सा), रिग्रेशन थैरपी (पुनरागमन चिकित्सा) की जा रही है। इसे चिकित्सकीय दृष्टि से देखा जा रहा है। आज एक तरह से चिकित्सा विज्ञान ने पुनर्जन्म को मान लिया है, तो भौतिक शास्त्र ने भी माना है। हिन्दू, सिख, बौद्ध सभी इसे मानते है। हमारी संस्कृति मे इस पर विश्वास किया जाता है। दुनिया ने भी व्यावहारिक अनुभव के आधार पर इसे स्वीकार किया है। जैसा कि मैने बताया, विदेशों के मनोचिकित्सालयों में 'रिग्रेशन थैरेपी' बहुत प्रचलित हो चुकी है। इसमें व्यक्ति को उसके पहले के जन्म की ओर लौटाया जाता है।

• पुनर्जन्म से ही जुड़ी हमारे यहां मान्यता है कि मनुष्य तब तक फिर–फिर जन्म लेता है जब तक कि मोक्ष की प्राप्ति नहीं हो जाती। इस पर कुछ कहें।

• यह बहुत गहरा सिद्धांत है। पुनर्जन्म की बात करें तो हर विज्ञान उसे स्वीकार करता है। चिकित्सा विज्ञान भी इसको गंभीरता से लेता है । अमरीका में वहां के मनोचिकित्सकों के एक सम्मेलन जो न्यूयार्क में हुआ उसमें 20 हजार लोग आए थे। वहां भी 'रिग्रेशन थैरेपी– बहुत प्रचलित है। हमें सिद्ध

करने की भी जरूरत नहीं पड़ती। जब किसी व्यक्ति को मानसिक –परेशानी होती है तो उसे उसकी स्मृतियों मे पीछे लौटाया जाता है और पूर्व की घटनाओं की उलझन से उसे मुक्त किया जाता है।

• हिन्दूत्व के प्रति दस तरह के आघात हमें बार बार ध्यान दिलाते हैं कि हिन्दु समाज एक होना चाहिए। हिन्दू समाज में एकजुटता हो तो इस तरह के हमले संभव नही होगें। हम मूल्यों को भूलते जा रहे हैं। हमें समाज को सचेत करना होगा।

अमर शहीद भाई मती दास, भाई सती दास, भाई दियाल दास

पंजाब में अनगिनत खूनी घटनायें हुई हैं। जिन्हें विभिन्न साहित्यकारों एवम् इतिहासकारों ने अपनी कलम से लिखा है। उनमें से एक घटना श्री गुरु तेग बहादुर की शहीदी की भी है। अगर इस घटना का ध्यान से अध्ययन किया जाये तो पता लगता है कि गुरुजी के सामने बलिदान देने वाले शहीदों का किसी लेखक ने जिक्र तक नहीं किया। किसी ने एक का, किसी ने दो, तो किसी ने तीन का जिक्र किया है। यदि विद्वान और खोजी इतिहासकारों की खोज की ओर देखें तो बात स्पष्ट हो जाती है कि इन शहीदों की गिनती तीन थी। ये थे – भाई मतिदास, भाई सती दास तथा भाई दियाल दास।

उस समय का हाल भट्ट वही मुल्तानी सिद्धी में इन शहीदों का जिक्र मिलता है। दियाल दास बेटा माई दास, पोता बालू का, पड़पोता मूले का गुरु के साथ मघर सुदी संवत 1732 (1675 ई.) दिल्ली चांदनी चौंक में मारा गया। साथ ही मतिदास, सती दास बेटे हीरा नन्द के, पोते लखी दास, पड़पौते पराग के वंश गौतम का, सरस्वती भागवत गौत्र ब्राह्मण छिबर गोत शाही हुक्म से मारे गये। (सेनापति, कवि श्री गुरु शोभा, आनन्दपुर 1701 और रतन सिंह भंगू का प्राचीन पंथ प्रकाश)

कनिंघम और डा. फोजा सिंह के अनुसार सबसे पहले जाम–ए–शहादत पाने वालों में भाई मतिदास को मान प्राप्त है। उसके बाद भाई दियाल दास तथा उसके पश्चात भाई सती दास को शहीदी प्राप्त करने का गौरव प्राप्त है। सतीदास गुरुजी के दीवान, दियाल दास भाई जी और मती दास दरबारी लेखाकार और इतिहासकार थे। यह तीनों कोई वक्ती मित्र नहीं थे अपितु गुरुजी के प्रसिद्ध सिद्धकी और अच्छे खाते–पीते घरों के होनहार पुत्र थे। यह परिवार कई पीढ़ियों से गुरुघर से जुड़ा हुआ था। यह तीनों बहुत विद्वान, नीतिवान और बलवान, थे। इस बात की पुष्टि करते हुये डा. गण्डा सिंह ने अपनी पुस्तक A Short History of Sikhs Vol-I Bombay Page 57 में की है। उन्होंने लिखा है कि मतीदास और सतीदास भाई हीरानंद के सुपुत्र थे। यह जिला जेलम के गांव कड़ियाल के निवासी और छिब्बड़ गोत के ब्राह्मण थे। इनके बुजुर्ग गौतम दास अपने समय के एक महान विद्वान थे। जो गुरु अर्जुन देव के श्रद्धालु थे और गुरु अर्जुन देव जी ने ही इनको भाई साहिब की पदवी से सम्मानित किया था। जो आज तक इनके वंश नाम के साथ जुड़ी हुई है। भाई हीरा नंद के भाई दुर्गा दास सातवें और आठवें गुरु साहिबान के मुख्य दीवान थे।

6 नवम्बर 1675 को गुरुजी को तीन साथियों के साथ देहली लाया गया। देहली के सूबेदार और काजी ने उनको मुसलमान बनाने के लिए पूरा जोर लगाया और पांच दिन तक लगातार उनको कष्ट देते रहे और मनाते रहे पर वह

अपने फैसले पर दृढ़ रहे। उन्होंने दुख सहते हुए भी अपना धर्म नहीं छोड़ा। मरना मन्जूर लेकिन धर्म नहीं बदलेंगे।

11 नवम्बर 1675 को चारों को कत्लगाह में लाया गया। सरकारी अधिकारियों ने मशवरा किया कि अगर तीनों श्रद्धालुओं को गुरु जी के सामने शहीद कर दिया जाये तो गुरु जी डर के मारे अपना धर्म बदल कर मुसलमान हो जायेंगे और सारा काम ठीक हो जायेगा। इसके साथ ही पहले मतिदास को दो खम्भों के साथ बांधकर आरे से दो टुकड़ों में चीर दिया गया। इसके बाद भाई दियाल दास को उबलती देग में उबाला गया और फिर भाई सती दास को रुई के साथ लपेटकर आग लगाकर शहीद कर दिया गया। इन बहादुरों ने नाम जपते–जपते हंसते हुये शहीदी दे दी मगर धर्म नहीं छोड़ा। इसके बाद गुरु जी को कहा कि जो सलूक इनके साथ हुआ वह आपके साथ भी होगा नहीं तो धर्म बदल लो। मगर गुरु जी ने साफ इन्कार कर दिया। इसके बाद गुरु जी को भी शहीद कर दिया गया। शाबास ब्राह्मण भाईयो धर्म के लिए जो शहादत आपने दी उसके लिए आने वाली नसलें आप का नाम हमेशा याद रखेंगी। जबर और जुल्म सहते हुये आपकी कुर्बानी सुनहरी अक्षरों में इतिहास में लिखी जायेगी।

लगेंगे हर वर्ष शहीदों की चिताओं पर मेले।
वतन पे मरने वालों का यही बाकी निशां होगा।।

–वेद प्रकाश सद्दी

ब्राह्मण

ब्राह्मणोऽस्य मुख मासीद बाहुराजन्यः कृतः।
उरु तदस्य यद् वैश्यः पदभ्या शूद्रोऽजायत।। ऋग्वेद (10–90–12)

अर्थात् उस विराट पुरुष के मुख से ब्राह्मण पैदा हुआ। उसकी भुजाओं से क्षत्रिय पैदा हुये। उसकी जांघों से वैश्य तथा पैरों से शूद्र पैदा हुये। यह प्रतीकात्मक वर्णन है। इसका अभिप्राय यह है कि प्रारम्भ में चारों वर्णों का चुनाव गुण, कर्म और स्वभाव के अनुसार हुआ। ब्राह्मण बौद्धिक कर्म करने वाला, क्षत्रिय सैनिक तथा प्रशासकीय कार्य करने वाला, वैश्य उत्पादन, सामान्य प्रजा का भरण–पोषण करने वाला तथा शूद्र श्रम के कार्य करने वाला– उस युग के समाज के अंग थे। यह व्यवस्था वर्णों (वर्गों) के आधार पर थी। पहले यह वर्ण विभाजन व्यक्तिगत और मुक्त था। आपस में वर्ग परिवर्तन होता रहता था। इसमें सरलता और लचीलापन था। आगे चलकर कुछ कठिनाईयां आई। समाज में कट्टरता तथा संकीर्णता आ गई। वर्ण पैतृक हो गये, क्योंकि व्यवसाय पैतृक हो गए थे। इन पैतृक व्यवसायों में गुणात्मक स्थायित्व अधिक था। दूसरा कारण प्रजातिय भेद हो सकता है। प्रारम्भ में जातियों, उपजातियों को चार पूरक और परस्पर सहकारी वर्गों में विभक्त करने का प्रयास किया गया प्रतीत होता है। यह जाति प्रथा से भिन्न संस्थागत प्रथा थी। वर्ग और जाति में बहुत अन्तर है। वर्ण सैद्धान्तिक एवं वैचारिक संस्था है, जबकि जाति का आधार जन्म अथवा प्रजाति

है। वर्ण संयोजक है और जाति विभाजक है।

जब ब्राह्मण एक जाति बन गई तो उनकी पहचान के लिए वेद, शाखा, सूत्र, गौत्र, प्रवर पहचान कारक माने गये। यह क्रम मध्यकाल तक चलता रहा है। तदन्तर ब्राह्मणों के भेद उनके प्रदेशों के आधार पर किये गये। जैसे गौड़, सारस्वत, कान्यकुब्ज, मैथल, उत्कल, कर्णाटक, द्रविड़, महाराष्ट्र और गुर्जर।

समाज में जहां तक वर्णों के स्थान और मान का प्रश्न है– ब्राह्मण सर्वोपरि था, किन्तु वही ब्राह्मण पूज्य और गुरु माना जाता था जो समस्त विद्याओं का ज्ञाता हो, अनपढ़ केवल जाति से गुरु नहीं हो सकता। अनपढ़ ब्राह्मण ब्राह्मबन्धु (ब्राह्मण का भाई) था, ब्राह्मण नहीं। अयोग्य वेश धारण करने, निषिद्ध स्थान में रहने से ब्राह्मण का आदर घट जाता था। प्राचीन ग्रन्थों तथा शिला उत्कीर्ण शिलालेखों से प्रकट है कि उस युग में ब्राह्मणों की कमी नहीं थी।

–वेद प्रकाश सद्दी

ब्रह्मचर्य

ब्रह्मचर्य का अर्थ है शरीर, मन, वाणी तथा इन्द्रियों द्वारा मैथुन का त्याग। शास्त्रों में कहा गया है :

कर्मणा मनसा वाचा सर्वावस्थासु सर्वदा। सर्वत्र मैथुनत्यागी ब्रह्मचर्यं प्रचक्षते।।

(यानि कर्म, मन और वाणी द्वारा सब स्थानों में, सदैव, सब तरह के मैथुन का त्याग ब्रह्मचर्य है।) ब्रह्मचर्य से तेज, बल, बुद्धि तथा सामर्थ्य का विकास होता है। इस बारे में किसी के मन में शंका आ सकती है कि जो व्यक्ति ब्रह्मचर्य का बिल्कुल भी पालन नहीं करते उनके शरीर भी मजबूत तथा अच्छे होते हैं। आमतौर पर ब्रह्मचर्य को शारीरिक आकार–प्रकार से जोड़ दिया जाता है जिससे कि साधारण जन इसका महत्व नहीं समझ पाते। पहले एक बात समझ लें कि ब्रह्मचर्य का जो सबसे साधारण प्रभाव है वह शारीरिक है। एक ब्रह्मचारी का शरीर निर्बल भी हो सकता है तथा रोगी भी, ठीक वैसे ही जैसे किसी ब्रह्मचर्य का पालन न करने वाले का हो सकता है। अगर किसी के शरीर में जन्म से ही विकृति या रोग है अथवा प्रारब्धवश किसी उत्कट् कर्मफलभोग के कारण उसका शरीर रोगी हो गया है तो ऐसी स्थिति को स्वीकार करना ही पड़ता है। ब्रह्मचर्य से जो शक्ति व्यक्ति को प्राप्त होती है वह मात्र शारीरिक न होकर मानसिक तथा आध्यात्मिक होती है। उसमें गर्मी–सर्दी, सुख–दुख आदि को सहने का सामर्थ्य आ जाता है। वह सदैव उत्साही रहता है तथा किसी भी कार्य को अपेक्षाकृत

अच्छे ढ़ंग से कर सकता है। ब्रह्मचारी की आध्यात्मिक प्रगति अति शीघ्र होती है। उसके तेज का प्रभाव जीव–जन्तुओं तथा मनुष्यों पर स्वयं ही पड़ता रहता है।

–महेश बातिश

स्वस्थ जीवन

डाक्टर के पास न भागें– जरा अपनी रसोई में भी झांकें

एक दवाखाना है आपकी रसोई

आज के दूषित वातावरण में रोगों से बचना मुश्किल होता जा रहा है। डाक्टरों की फीस व दवाई के खर्च परिवार के बजट को हिलाकर रख देते हैं। ऐसे में छोटी–मोटी बीमारियों में डाक्टर की ओर भागने से पहले जरा अपनी रसोई में झांककर तो देखें। कई रोगों की दवा हमें अपनी रसोई में ही मिल जायेगी।

भूख की कमी : यदि भूख कम लगती है तो अदरक में नींबू का रस व नमक मिलाकर भोजन के पहले लेना चाहिए।

अजीर्ण : अजवायन को थोड़ा सा भूनकर , पीसकर उसमें सेंधा नमक मिलाकर भोजन के बाद एक–एक ग्राम की मात्रा खाने से अजीर्ण दूर हो जाती है।

पेट की गैस : एक ग्राम हींग को देसी घी में भूनकर खाने से लाभ होता है या चार काली मिर्च और चार लौंग एवं थोड़ा सा नमक लेकर बारीक पीसकर एक कप पानी में उबालकर लेने से पेट की गैस से मुक्ति मिलती है।

पेटदर्द : सौंठ का चूर्ण व थोड़ा सेंधा नमक मिलाकर एक–एक ग्राम की मात्रा में खायें।

कब्ज : रात को सोते समय दूध में मुनक्का उबालकर लेने से कब्ज टूटती है या

ईसबगोल की भूसी गर्म दूध में डालकर लें।

पेचिश या मरोड़ : यदि कुछ खाने के बाद तुरन्त शौच के लिए जाना पड़ता हो तो भूना हुआ जीरा, सौंठ, लौंग और अनारदाना समान मात्रा में मिलाकर थोड़ा सा सेंधा नमक भी मिला लें। तीन–तीन ग्राम की मात्रा में दिन में तीन–चार बार छाछ के साथ लें।

पेशाब में जलन होने पर : धनिया चूर्ण पानी में भिगोकर लेने से जलन दूर हो जाती है।

पेट में जलन : जीरा व धनिया बराबर मिलाकर तीन–तीन ग्राम की मात्रा मिश्री के साथ लेने से लाभ होता है।

खांसी : मुलट्ठी चूर्ण शहद मिलाकर खाने से लाभ होता है या काली मिर्च, सौंठ, पीपल, सेंधा नमक मिलाकर गर्म पानी के साथ खाने से खांसी दूर होती है।

मुंह के छाले : कत्था बारीक पीसकर उसमें शहद मिलाकर छालों पर लगायें, फटकरी के पानी से कुल्ला करें।

जोड़ों का दर्द : लहसुन की एक–दो कलियों को दूध में उबालकर खायें तथा फिर दूध पी लें।

सर्दी–जुकाम : यदि सर्दी हो, सिरदर्द व नाक से पानी आता हो तो लौंग का तेल (दो बूंद) शक्कर या पताशे में डालकर खायें तथा वही तेल माथे पर लगायें, आराम मिलेगा।

अंत में यह भी कर देखिये :–

निम्नलिखित पांच चीज़ों को बारीक पीसकर शीशी में भर लें। खाना खाते समय सलाद पर छिड़कें। दही में मिलाकर खायें। इसका प्रयोग फलों के साथ भी कर सकते हैं। गर्मियों में शिकंजी में मिलाकर पी सकते हैं। अच्छे स्वाद के साथ–साथ यह पेट को भी ठीक रखता है। जूस में मिला सकते हैं। पेट की गैस से परेशान हैं या पेट की कोई और बीमारी है यह सबके लिए लाभदायक है। लस्सी में इसे मिलाने से अच्छा स्वाद बन जाता है।

जीरा सफेद–50 ग्राम, काली मिर्च–50 ग्राम, सौंठ–50 ग्राम, पाकिस्तानी नमक–300 ग्राम, काला नमक–100 ग्राम।

यदि छोटे बच्चे दूध पीते ही बाहर निकाल देते हों तो जीरा सफेद 10 ग्राम, काली मिर्च 10 ग्राम, सूंड 10 ग्राम, बारीक कूट पीसकर इसकी एक चुटकी दूध में मिला दें। बच्चा दूध बाहर नहीं निकालेगा।

–वेद प्रकाश सद्दी

सत्य उपदेश

जब तक कमा–कमा धन धरता।
प्रेम कुटुम्ब तभी तक करता।।

जब होगा तन बूढ़ा जर्जर।
कोई बात न पूछेगा घर।।

जब तक रहते प्राण देह में।
तब तक पूछे कुसल गेह में।।

तन से स्वास निकल जब जाते।
पत्नी पुत्र सभी भय खाते।।

काया अपनी है नहीं, माया कहां से होये।
चरण कमल में ध्यान रख, इन दोनों को खोये।।

कहां भरोसो देह को विनसि जाये छिन माही।
स्वास–स्वास सिमरन करो और जतन कछु नाहीं।।

जाना है रहना नहीं, मरना विश्वा बीस।
दो दिन दुनिया के लिए मत भूलो जगदीश।।

आये तब क्या लाये थे, जाते क्या ले जायेंगे।
खाली हाथ आये और खाली हाथ जायेंगे।

एक न भूला दो न भूला, भूला सब संसार।
जानबूझ कर जो नर भूला ताको वार न पार।।

मेरा मेरा कर मरे, मेरा रहे न कोय।
सबसे नाता तोड़कर, कूच जगत से होय।।

जो बीत गई उसे याद न कर।
बाकी जो बची उसे बर्बाद न कर।।

दारा मीत पूत सम्बन्धी, सगरे धन सो लागे।
जब ही निर्धन देखियो नर को, संग छोड़ सब भागे।।

पल भर पहले जो कहता था, ये धन मेरा ये घर मेरा।
तन ते होत प्राण जब न्यारे, उसको लाकर बाहर गेरा।।

छोड़ मन तू मेरा–मेरा, कोई नहीं अंत में तेरा।
एक दिन मरघट पड़ा रहेगा, होकर राख का ढ़ेरा।।

मेरा–मेरा करता डोले, माया देख लुभाना रे।
तन का तनिक भरोसा नाहीं, काहे करत गुमाना रे।।

दुनियां दौलत माल खजाना, भाई बहन लुगाई।
हम जानें सब संग चलेंगी, सब यही रह जाई।

धन–दौलत यह रुप जवानी, आज रहे कल जानी।
उड़ा सांस का पंछी जब हो गई खत्म कहानी।।

क्या पता किस वक्त पंछी जाये पिंजरा छोड़कर।
इस जहां फानी से सारे रिश्ते तोड़कर।।

सुमरिन, भजन, दया नहीं कीनी, तो मुख चाँटे खायेगा।
धर्मराज जब लेखा माँगे कैसे मुँह दिखलायेगा।।

कर्ता वही धर्ता वही सब में वही सब में वही।
सर्वत्र उसको देख तू उपदेश सच्चा है यही।।

—संग्रहकर्त्ता : विरिन्द्र शर्मा

महखाना–ए–मारफत

हर घर में तुम्हारे चर्चे हैं, हर लब पे तुम्हारे अफसाने।
शोहरत सुन तेरी भगवन, हम भी आये तेरे मयखाने।।
बंटती है सदा बादा–ए–इश्क, यह हम ने सुना है लोगों से।
इक बार भी जो पी लेते हैं, वह रहते हमेशा मस्ताने।।
इस मय में भरी तासीर अजब, उतरे न जिसका खुमार कभी।
तेरी याद में रहके महव सदा, हो जाते हैं जग से बेगाने।।
यह आस लिये हम भी भगवन, आयें हैं दरे दौलत पे तेरे।
दो घूँट हमें भी मिल जाये, हम भी तो हैं तेरे दीवाने।।
हम तो हैं फकत तेरे शैदाई, नहीं गरज जमाने से हमको।
तेरे जलवों की मय पीते ही रहें, आंखों को बनाकर पैमाने।।
तेरी महफिल में आने के लिए, माना कि 'दा' नहीं काबिल।
पर छोड़ के शमा–ए–महफिल को, जायें कहां तेरे परवाने।।

– संग्रहकर्त्ता : संजय शर्मा

अन्तरात्मा की सच्ची प्रार्थना

प्रार्थना मनुष्य जीवन का ध्रुव तारा है। उसे नितान्त आवश्यक नित्यकर्मों में भी सबसे आवश्यक समझना चाहिये। भोजन न मिलने से तो शरीर को ही भूखा रहना पड़ेगा पर प्रार्थना का अभाव रहने से तो आत्मा की प्रगति ही रुक जायेगी। हम शरीर नहीं आत्मा हैं इसलिए शरीर की आवश्यकताओं की उपेक्षा करके भी आत्मा की आवश्यकताओं को प्राथमिकता मिलनी चाहिए। शरीर की शुद्धि के लिए साबुन जितना आवश्यक है उससे भी ज्यादा महत्व आत्मा की शुद्धि के लिए प्रार्थना का है। इसमें न तो आलस्य करना चाहिए और न प्रमाद। प्रार्थना की उपेक्षा जीवन के सर्वोत्कृष्ठ पद्वार्थ का तिरस्कार करने जैसी भूल है। इस भूल के लिए जितना पश्चाताप करना होता है उतना किसी अन्य भूल के लिए नहीं।

निर्धारित समय पर शरीर, वस्त्र और स्थान शुद्धि के साथ पूजा उपकरणों की सहायता से विधिवत् पूजा की जा सके तो सबसे अच्छा है। यदि किसी कारणवश ऐसा न हो सके तो प्रातः नींद खुलने से लेकर शैया त्यागने तक जो समय मिलता है उसमें पूजा की जा सकती है। व्यस्तता का बहाना इन क्षणों में तो बनाया ही नहीं जा सकता। मानसिक पूजा बिना किसी पूजा उपकरण एवम् शुद्धि के भी, चारपाई पर पड़े–पड़े हो सकती है। जिनसे विधिवत् प्रार्थना बन

पड़े वे उसे ही करें।

प्रार्थना में भावना का मुख्य स्थान है। भावना जितनी सच्ची, गहरी और श्रद्धापूर्ण होगी, उतना ही उसका सत्यपरिणाम भी होगा। इसलिए शब्दों में रटने की बजाय श्रद्धा भावनाओं में होनी चाहिए, क्योंकि भगवान के निकट भावनाओं का महत्व सबसे ज्यादा है। नियमित उपासना का महत्व कम करने की बात किसी भी हालत में नहीं सोचनी चाहिए। इसे प्रातः, सांय, उठते, सोते, बैठते जब भी समय मिले करना चाहिए।

हम प्रार्थना करें : हे भगवान! आप सर्वत्र समाये हुये हैं। कोई स्थान आपकी उपस्थिति से रिक्त नहीं। जड़–चेतन में आपकी सत्ता ही प्रकाशमान हो रही है। अन्य प्राणियों की भांति आप मेरे भी कण–कण में समाये हुये हैं। संसार में जो कुछ भी हो रहा है उससे आप परिचित हैं अन्तःकरण में बैठे हुये आप सबकी भावनाओं से परिचित हैं। इस विश्व में ऐसा कुछ भी नहीं है जो आपसे छिपा हो। सत्कर्म ही आपकी सबसे बड़ी पूजा हैं। आप सत्य हैं, आप शिव हैं, आप सुन्दर हैं। आपकी किरणें जिसके अन्दर प्रभासित होगीं वह सबको प्रेम की, मैत्री की, उदारता की दृष्टि से देखेगा। दूसरों के दुख–सुख उसे अपने दुख–सुख प्रतीत होगें।

– पं. श्रीराम शर्मा आचार्य

भगवत उपदेश – श्री कृष्ण उवाच

न किसी का नातादार कोई, न किसी से कोई मरता है।
है अमर आत्मा मरे नहीं, देह वक्र पे धारण करता है।
जिस तरह पुराने कपड़े को, इन्सान बदलता रहता है।
ऐसे आत्मा देह बदलता, यूँ चक्कर चलता रहता है।

अभिप्रायः यह कि आत्मा अमर है और नश्वर है, वह कभी नहीं मरता। जिस प्रकार मनुष्य पुराने कपड़े उतारकर नये कपड़े पहन लेता है, उसी प्रकार आत्मा एक शरीर को त्यागकर दूसरा शरीर धारण कर लेता है। शरीर तो अनेक बार मिले और बिछड़ गये, परन्तु आत्मा कभी विनाश को प्राप्त नहीं होता।

सन्तों, सत्पुरुषों का कथन है कि ऐ मनुष्य! तुम वास्तव में आत्मा हो, शरीर नहीं। यह शरीर तो तुम्हारा नौकर है और तुम इसके मालिक हो। मालिक का काम है कि नौकर को रोटी, कपड़ा आदि आवश्यकता के अनुसार दे और उससे अपना काम ले। नियमानुसार नौकर मालिक की सेवा करता है, मालिक नौकर की नहीं। किन्तु आजकल संसार में प्रायः यही देखने में आता है कि आत्मारुपी मालिक शरीररुपी नौकर की सेवा में व्यस्त है। जो मालिक नौकर का दास बनकर उसकी सेवा में जुट जाये, तो उसकी स्थिति क्या होगी इसके बारे में सहज ही विचार किया जा सकता है। शरीर रुपी नौकर को नौकर समझकर

उससे आत्मा की उन्नति का काम लेना चाहिए। इसके लिए शरीर को स्वस्थ रखना भी आवश्यक है इसलिए शरीर को खाना आदि अवश्य देना है। परन्तु अपने वास्तविक काम को यानि परमात्मा के भजन–सुमिरन को भूल कर शरीर की सेवा में अर्थात् उसे खिलाने–पिलाने और सजाने–संवारने में लगे रहना कहां की बुद्धिमता है? जीवन का उद्देश्य केवल खाना–पीना नहीं है, बल्कि मालिक की भक्ति है। संतों का कथन है कि

खुर्दन बराये जीस्तन व जिक्र कर्दन अस्त।
तू मोती किद कि जीस्तन अज बहरे खुर्दन अस्त।। (शेख सादी साहिब)

अर्थात् खाना–पीना इसलिए आवश्यक है कि जीवन निर्वाह हो सके और मालिक का सुमिरन किया जा सके, परन्तु मनुष्य ने भूल से यह समझ लिया है कि जीवन केवल खाने–पीने के लिए मिला है।

–वेद प्रकाश सद्दी

भगवान! भगवान!

कुरुक्षेत्र का युद्ध शुरु होने जा रहा था। दोनों ओर से युद्धघोष करने के लिए शंख बजाने की तैयारियां चल रही थी। धनुर्धारी अपने धनुषों को संभाल रहे थे, मदमस्त हाथी युद्ध में खलबली मचाने को आतुर हो रहे थे। झण्डे फहरा रहे थे तथा रथी रथों कों हांकने की तैयारी में थे। बड़ा ही विकट क्षण था।

अचानक ही एक टिटहरी ने अपनी आवाज द्वारा श्रीकृष्ण का ध्यान अपनी ओर खींच लिया। उसकी आवाज में करुणा तथा भय था। उस टिटहरी ने युद्धक्षेत्र के बीचोबीच अपना घौंसला बनाया हुआ था तथा उसके छोटे–छोटे बच्चे उस घौंसले में थे। अपने बच्चों के मारे जाने की आशंका से टिटहरी व्याकुल थी। श्रीकृष्ण ने उसे देखा तथा अत्यन्त करुणा से कहा,''चिन्ता मत करो, मैं तुम्हारी रक्षा करुंगा।'' ऐसा कहकर श्रीकृष्ण ने एक हाथी के गले से बड़ी सी घण्टी लेकर उसके घौंसले के ऊपर डाल दी। 18 दिनों तथा कुरुक्षेत्र के मैदान में अति भयंकर युद्ध चलता रहा। लेकिन प्रभु की कृपा वह टिटहरी युद्ध क्षेत्र के बीचो–बीच अपने बच्चों सहित सुरक्षित बैठी रही। प्रभु की ऐसी ही माया है। प्रभु जिसकी रक्षा करने पर आ जायें उसका एक बाल भी बांका नहीं हो सकता। प्रभु हमारी भी जीवन में समय–समय पर रक्षा करते रहते हैं। घर में, बाहर सड़क पर जाते हुये, किसी अप्रिय घटना के समय कई बार चमत्कारिक रुप से हमारी रक्षा होती है। प्रभु ही हमारी ऐसी रक्षा करते हैं। – महेश बातिश

उन्नति का मूल मन्त्र– ब्रह्मचर्य

न तपस्तय इत्याहु ब्रह्मचर्य तपोत्तमम। उर्ध्वरेता–मवेद्यस्तु स देवो न तु मानुषः।।
अर्थात् : जननेन्द्रिय–संयम द्वारा मनुष्य देवताओं के गुण को पा लेता है। उसकी दैहिक, मानसिक, अध्यात्मिक शक्तियों का पूर्ण विकास होता है।

ब्रह्मचर्य का अर्थ है– ब्रह्म (अर्थात् परमात्म तत्व) में विचरण करना। अर्थात् अपने मन का संयम, निग्रह, शुद्धाचरण द्वारा उसकी ओर मन, वचन, कर्म द्वारा अग्रसर होना। आज हम जीवन की उच्च भूमिका में तो उठ नहीं पाते इसलिए ब्रह्मचर्य का अर्थ है वीर्य रक्षा, जननेन्द्रिय का संयम, आत्मिक बल की वृद्धि। वीर्य की रक्षा करते हुये वेदाध्ययन पूर्वक ईश्वर चिन्तन करने का नाम ब्रह्मचर्य है। ब्रह्मचर्य वह तप है जिसके द्वारा ब्रह्म तक पहुंचा जा सकता है। यह एक प्रकार का व्रत है जिसके द्वारा मनुष्य को अपने वीर्य की रक्षा कर उच्च ईश्वरीय जीवन की साधना और बुद्धि का विकास करना पड़ता है। शुद्ध आचरण द्वारा वीर्य की मन, वचन, कर्म द्वारा रक्षा करते हुये शास्त्रों में वर्णित सात्विक जीवन व्यतीत करना ब्रह्मचर्य है।

भगवान शंकर कहते हैं ''ब्रह्मचर्य अर्थात् वीर्य धारण करना, उसकी रक्षा करना ही उत्कृष्ट तप है। इससे बढ़कर तप तीनों लोकों में कोई दूसरा नहीं हो सकता। अखण्ड वीर्य को धारण करने वाला पुरुष इस लोक में प्रत्यक्ष देवता है। ब्रह्मचर्य से बुद्धि प्रखर होती है, स्मरणशक्ति तीव्र होती है, मनन शक्ति बढ़ जाती

है, चित्त में एकाग्रता आती है, आत्मिक बल बढ़ता है, आत्म निर्भरता, साहस आदि देव दुर्लभ गुण स्वयं ही प्राप्त हो जाते हैं। विद्यार्थी जीवन में ब्रह्मचर्य पालन से शरीर, मन, आत्मा सुदृढ़ होते हैं। ऋषियों के अनुसार सांसारिक–पारमार्थिक उन्नति का मूल ब्रह्मचर्य है। ब्रह्मचर्य पालन से सुख, आरोग्य और तेज बढ़ता है। बल और वीर्य में वृद्धि होती है, स्वास्थय और दीर्घायु मिलती है। हमारा सुख, तेज, विद्या, बल सब ब्रह्मचर्य पर आश्रित है।

शास्त्र कहता है, 'जिस प्रकार समुद्र को पार करने का नौका उत्तम उपाय है उसी प्रकार इस संसार को पार करने का उत्कृष्ट साधन ब्रह्मचर्य है। महान परिश्रमपूर्वक वीर्य का साधन करने वाले ब्रह्मचारी के लिए इस पृथ्वी पर भला किस कार्य में सफलता नहीं। ब्रह्मचर्य के प्रताप से मनुष्य ईश्वर के तुल्य हो जाता है। सबसे बड़ा तप ब्रह्मचर्य है। एक ओर चारों वेदों का फल और दूसरी ओर ब्रह्मचर्य का फल विशेष है। ईश्वर वीर्यवान हैं। इसी के प्रताप से भीष्म में इच्छा–मृत्यु की शक्ति थी। संसार में वीर्य वाली जाति ही अपना साम्राज्य स्थापित कर सकती है।

–श्री राम शर्मा आचार्य

उपनिषद् ज्ञान

ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किन्च जगत्यां जगत्।
तेन त्यक्तेन भुन्जीथा मा गृधः कस्य स्विद् धनम्।।

–श्री ईशोपनिषद्/1

अर्थ : जगत् में जो कुछ भी है ईश्वर उस सबमें स्थित हैं। जगत् की सब वस्तुओं का त्याग भावना से उपभोग करते रहें क्योंकि धन कभी किसी का नहीं हुआ।

समझें : ईश्वर जगत् के कण–कण में विद्यमान हैं, यह हम जानते तो हैं लेकिन इसे समझकर मानने का प्रयत्न नहीं करते। सब कुछ ईश्वर से ही ओत–प्रोत है। ईश्वर से समस्त वस्तुयें, पद्वार्थ तथा जीव उत्पन्न होते हैं तथा उन्हीं में समा जाते हैं। ईश्वर हमें देते हैं तथा वापिस भी ले लेते हैं। इस जगत् की वस्तुओं का उपयोग हमें करना ही पड़ता हैं, क्योंकि वस्तुओं का उपयोग किये बिना जीवन कठिन हो जाता है। लेकिन फिर भी वस्तुओं का उपयोग इस तरह से करना है कि हम वस्तुयें से जुड़े बिना मात्र उनका अपने कल्याण के लिए उपयोग करते रहें। संसार में जो भी सुख के साधन प्राप्त होते हैं उनका उपयोग हर कोई करता है। उन साधनों का उपयोग करते हुये भी त्यागबुद्धि का होना परमावश्यक है। लेकिन ज्यादातर हम वस्तुओं के आकर्षण में पड़ जाते हैं तथा

उन ईश्वर को भूल जाते हैं जिनके सामर्थ्य का आश्रय पाकर समस्त वस्तुयें तथा स्वयं हम भी स्थित हैं।

एक दूसरा मार्ग सर्वथा त्याग का भी है। इसमें वस्तुओं का ही त्याग कर दिया जाता है। लेकिन वास्तव में हमें वस्तुओं का नहीं अपितु उनसे जुड़ी अपनी इच्छायों का त्याग करना होता है। संसार में ईश्वर की कृपा से भोग करने योग्य जो सामग्री मिल जाये, जिसका भोग करने से न ही स्वयं के आध्यात्मिक विकास में और न ही ईश्वर की प्राप्ति में कोई बाधा पहुंचती है, उसका त्याग करने का कोई औचित्य नहीं। हमें जो कुछ मिल रहा है ईश्वर की कृपा से ही मिल रहा है, यह सोचकर सदैव समता में ही स्थित रहें, इसके साथ ही हमसे जो कुछ छीन रहा है वह भी ईश्वर की इच्छा से ही है, सोचकर समता का पालन करते रहें।

— महेश बातिश

ब्राह्मणों का कर्त्तव्य

तीक्ष्णीयांसः परशोरग्नेस्तीक्ष्णतरा उत।
इन्द्रस्य वज्रात तीक्ष्णीयांसो येषामस्मि पुरोहिता।।

(अर्थववेद 3/11/4)

भावार्थ : हम पुरोहित अपने यजमानों को क्रियाशील, तेजस्वी, परोपकारी और शक्तिमान बनाये रखेंगे। उन्हें कभी भी अधोगामी नहीं होने देंगे।

संदेश : ब्राह्मण को समाज व राष्ट्र की सभी शक्तियों का प्रेरणा स्रोत माना गया है। सभी नागरिक चाहे वे क्षत्रिय हैं, वैश्य या शूद्र उसके यजमान होते हैं। अपने यजमानों की शारीरिक, मानसिक, चारित्रिक उन्नति का उत्तरदायित्व उन पर होता है। प्रत्येक व्यक्ति कर्मयोगी बने और कर्त्तव्यभावना से सत्कर्म में लगा रहे। आशाओं, लालसाओं, तृष्णायों और कामनाओं में फंसकर असंयमित व अनियंत्रित जीवनशैली को न अपनाये। वह सदैव आगे बढ़ने, उन्नति करने, अधिक उत्तम स्थिति प्राप्त करने, ऊपर उठने, विकसित होने के पुरुषार्थ में स्वाभाविक रुप से लगा रहे। इस प्रक्रिया में आपसी स्वार्थ भाव का टकराव न होने पाये तथा सभी एक–दूसरे को सहयोग व सहकार से उन्नति करने में सहायता करते रहें, इस भावना की अभिवृद्धि करने का दायित्व ब्राह्मणों पर ही है।

ब्राह्मण इस बात को भी सुनिश्चित करें कि समाज में ज्ञान, कर्म व भक्ति

की अजस्त्र धारा प्रवाहित होती रहे। विद्या व शिक्षा सभी को समान रुप से उपलब्ध हो। स्वाध्याय व सत्संग की व्यवस्था बनी रहे जिससे लोग कुविचारों से बचे रहें। सत्य असत्य में, नीति अनीति में भेद करने की विवेक बुद्धि हर व्यक्ति में रहे और वे सदैव चारो ओर मधुरता, सादगी, स्वच्छता एवम् सज्जनता का वातावरण बनाये रखें।

ब्राह्मणों का यह भी कर्त्तव्य है कि समाज के प्रत्येक व्यक्ति में भक्ति भावना कूट–कूट कर भर दी जाये। भक्ति से तात्पर्य केवल दिखावटी पूजा–पाठ करना नहीं वरन् संसार के कण–कण में, रोम–रोम में ईश्वरीय सत्ता की उपस्थिति का दृढ़ विश्वास जागृत होना है। इस महत्वपूर्ण तत्वज्ञान को जान–समझकर अपने आचरण में लाने से ही समाज व राष्ट्र की उन्नति होती है।

कभी भारतवर्ष का स्वर्णिम युग था जब ब्राह्मण अपने इन कर्त्तव्यों को पूरी श्रद्धा व निष्ठा से निभाते थे। तब यह देश जगद्गुरु कहलाता था और सारे संसार को अपने ज्ञान के प्रकाश से आलौकित करता था। आज जो लोग अपने को ब्राह्मण कहते हैं, वे जरा अपने अन्तरमन में झांक कर स्वयं ही देखें कि उनमें ब्राह्मणत्व का कितना अंश है। इस महान देश की आजकल जो दुर्दशा हो रही है उसका मूल कारण ब्राह्मणत्व का पतन ही है। अधिकांश ने तो ब्राह्मणत्व को अपने धंधे का आधार बना दिया है। उनका यह व्यापार चलता रहे इसी उद्देश्य से वह दो–चार उल्टे–सीधे मंत्र रट कर लोगों को मूर्ख बनाते हैं तथा अपना

स्वार्थ सिद्ध करते हैं। जनसामान्य भी उनकी बातों में आकर मुसीबत से छुटकारा पाने का यही आसान मार्ग समझ लेते हैं। जब ब्राह्मण ही इस प्रकार पतित हो जायेंगे तो वह दूसरों का उत्थान कैसे कर सकेंगे।

सच्चे ब्राह्मण ही ब्राह्मणत्व के इस पतन को रोक सकते हैं।

अनुवाद : वेद प्रकाश सद्दी

आदर्श सद्वाक्य

1. अध्यात्म और विज्ञान परस्पर विरोधी नहीं, एक दूसरे के पूरक हैं।
2. अधूरे ज्ञान का अहंकार अपेक्षाकृत अधिक खतरनाक है।
3. अपनी राह आप बनायें ताकि सफलता के लक्ष्य तक पहुंचें।
4. अविश्वासी होना बुरा है पर अंधविश्वासी होना उससे भी बुरी बात है।
5. अग्नि वृक्ष को जलाती है, चिंता जीव को।
6. अपने को मनुष्य बनाने का प्रयत्न करो, यदि इसमें सफल हो गये तो हर काम में सफलता मिलेगी।
7. असफलता केवल यह सिद्ध करती है कि सफलता का प्रयत्न पूरे मन से नहीं हुआ।
8. अपनी रोटी मिल बांटकर खाओ ताकि तुम्हारे सभी भाई सुखी रहें।
9. अपना मूल्य समझो और विश्वास करो कि तुम संसार के सबसे महत्वपूर्ण व्यक्ति हो।
10. अपना सुधार ही संसार की सबसे बड़ी सेवा है।
11. अदालत और पुलिस से बच सकते हैं किन्तु ईश्वर से नहीं।
12. फजूलखर्ची एक पैसे की भी न करें।
13. अनीति के आगे सर न झुकायें।

14. अन्न की बर्बादी रोकें।
15. अधिकार भूलें, कर्त्तव्य याद रखें।
16. अपना सुख दूसरों में बांटें।
17. अगर रोकनी है बर्बादी, बंद करो खर्चीली शादी।
18. ईमानदारी और परिश्रम की कमाई ही हितकारी है।
19. उन्नति का असली आधार–सादा जीवन उच्च विचार।
20. एक बनेंगे, नेक बनेंगे।
21. एक ही पिता के पुत्र, मनुष्य सब भाई–भाई हैं।
22. क्रोध साक्षात यमराज है।
23. गायत्री और यज्ञ भारतीय संस्कृति के माता–पिता हैं।
24. करो सदा ऐसे ही काम, जिनका हो सुन्दर परिणाम।
25. करो नहीं ऐसा व्यवहार, जो न हो स्वयं को स्वीकार।
26. क्या है सतयुग की पहचान– सदगुण, सदाचार और उत्थान।
27. गायत्री साक्षात कामधेनु है।
28. गौ का पूजन नहीं, संरक्षण एवं सेवा करें।
29. जो जैसा सोचता है और करता है वह वैसा ही बन जाता है।
30. जैसी करनी वैसा फल– आज नहीं तो निश्चय कल।
31. जागो भारत की माताओ, मानव में देवत्व जगाओ।

32. जो अधिक जानता है वह कम बोलता है, जो कम जानता है वह अधिक बोलता है।
33. जहां काम करने की इच्छा होती है वहां रास्ता निकल ही जाता है।
34. परिवार का पालन ही नहीं निर्माण भी करें।
35. बचत ही आप की कमाई है।
36. भागो मत बदलो संसार– वेदमंत्र की यही पुकार।

– वेद प्रकाश सद्दी

सुखी रहने का सुगम साधन

सत्य पुरुषों का कथन है कि

''जैसे जल महि कमलु निरालमु मुरगाई नैसा रो,
सुरति सबदि भव सागरु तरीऐ नानक नाम बखाणो'' – गुरवाणी, रामकली म01

अर्थ : जिस प्रकार कमल का फूल पानी में रहकर भी पानी से विलग और अलिप्त रहता है तथा जिस प्रकार मुर्गाबी पानी में गोता लगाकर भी अपने पंखों को शुष्क रखती है, सत्यपुरुष गुरु नानक देव जी फरमाते हैं कि उसी प्रकार मनुष्य अपनी सुरति को सद्गुरु के साथ जोड़कर भवसागर से पार हो सकता है।

कमल का पुष्प पानी में ही उत्त्पन्न होता है, पानी में ही सदैव रहता है तथा पानी से ही अपना आहार पाता है, परन्तु रहता पानी से असंग तथा निर्लिप्त है। पानी उस पर अपना प्रभाव नहीं डाल सकता। सरोवर में पानी ज्यों–ज्यों बढ़ता है और ज्यों–ज्यों पानी का स्तर ऊँचा होता जाता है त्यों–त्यों कमल भी ऊपर उठता जाता है। उसकी पत्तियों और पंखड़ियों में यह विशेष गुण होता है कि उन पर पानी ठहरता ही नहीं। पानी उसको तर नहीं कर सकता। यदि कमल पर पानी की बूंद पड़ भी जाये तो वह अलग ही दिखाई देती है।

अभिप्रायः यह कि पानी में रहते हुये भी कमल का फूल पानी से अलिप्त तथा न्यारा होता है। संतों का कथन है कि मनुष्य को भी संसार में कमल के फूल की तरह रहना चाहिये। यानि संसार में इस तरह रहो जैसे कमल का पुष्प सरोवर में रहता है। यद्यपि उसका जीवन पानी के आधार पर स्थिर है परन्तु फिर भी वह पानी को अपने ऊपर ठहरने नहीं देता।

यह संसार में सुख–आनन्द से जीवन व्यतीत करने का सर्वोत्म एवं सुगम साधन है। संसार में रहो, परन्तु संसार के होकर न रहो। संसार में रहते हुये निःसंदेह कार्य–व्यवहार करो, परन्तु संसार से अलग बने रहो। उसमें आसक्त न होवो। संसार को चित्त में न बसाओ। कमल की भांति संसार में रहते हुये भी न्यारे रहो।

–वेद प्रकाश सद्दी

प्रेरणाप्रद दोहे

चलती चक्की देख के दिया कबीरा रोय।
दो पाटन के बीच में साबुत बचा न कोय।।

नाम बड़ा किस काम का, जो किसी के काम न आय।
सागर से नदियां भली, जो सबकी प्यास बुझायें।।

दो बातन को भूल मत, जो चाहत कल्याण।
नारायण इक मौत को, दूजे श्री भगवान।।

हमें रोक सके ये जमाने में दम नहीं।
हमसे है जमाना, जमाने से हम नहीं।।

कर्म प्रधान विस्व करि राखा।
जो जस करई सो तेई फल चाखा।

उमा कहूँ मैं अनुभव अपना।
सत्य हरि भजन जगत सब सपना।।

सुख देवें दुख को हरें, दूर करें अपराध।
कह कबीर वह कब मिले परम स्नेही साध।।

जहां दया वहां धर्म है, जहां लोभ तहां पाप।
जहां क्रोध तहां काल है जहां क्षमा वहां आप।।

तन पवित्र सेवा किये, धन पवित्र दिये दान।
मन पवित्र हरि भजन से इस विध होत कल्याण।।

सांच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप।
जाके हृदय सांच है ताके हृदय आप।।

चिन्ता से चतुराई घटे, दुख से घटे शरीर।
पाप से लक्ष्मी घटे, कह गये भगत कबीर।।

तीर्थ नहावे एक फल, साधु मिले फल चार।
सतगुरु मिले अनेक फल कहें कबीर विचार।।

बड़ा बड़ाई न करे बड़ा न बोले बोल।
हीरा मुख से न कहे लाख टका है मोल।।

संग सखा सब तज गये, कोई न निभायो साथ।
कह नानक यह विपत में एक टेक रघुनाथ।।

कबीरा खड़ा बाजार में सबकी मांगे खैर।
न काहु से दोस्ती न काहु से वैर।।

वृद्ध भयो सूझे नहीं, काल पहुँचयो आन।
कह नानक नर वाँवरे क्यों न भजे भगवान।।

सुख से बहु संगी भये, दुख में संग न कोय।
कह नानक हर भजन मना अंत सहाई होये।।

राम गयो रावण गयो जाकों बहु परिवार।
कह नानक थिर कछु नहीं सुपन ज्यों संसार।।

– संग्रहकर्त्ता : गोल्डी सद्दी

शरणागति

भगवान सबको शरण देने वाले हैं। भगवान का शरणागति देने का गुण स्वाभाविक भी है क्योंकि भगवान परम सामर्थ्यशाली तथा सबके आधार हैं। रामायण में जब विभीषण ने रावण को माता सीता श्रीराम को लौटाने के लिए समझाया तथा बहुत प्रकार से रावण की अनुनय विनय भी की तो रावण ने विभीषण की बात नहीं मानी। रावण ने विभीषण का त्याग कर दिया जो कि विनयपूर्वक उसके गलत कार्य का विरोध कर रहे थे। इसके बाद विभीषण श्रीराम की शरण में चले गये। जब विभीषण रामजी के शिविर में पहुंचे तो सुग्रीव आदि ने श्रीराम को विभीषण के आने की सूचना दी। श्रीराम ने पूछा कि अब हमें क्या करना चाहिए। सुग्रीव बोले कि प्रभु! वह राक्षस तथा मायावी शत्रु का भाई है। वह अवश्य ही अपनी माया चलाकर हमारा भेद लेने आया है। मेरा मत तो यह है कि उसे बांधकर रख लिया जाये। तब श्रीराम बोले कि जो भी हो, वह मेरी शरण में आया है। उसका त्याग करना मेरे लिए उचित नहीं है। शरण में आये हुये पर कृपा करना ही मेरा स्वभाव है। उसे आदरसहित मेरे सम्मुख ले आओ। शरणागतवत्सल श्रीराम की ऐसी बात सुनकर हनुमान आदि सब कपि अत्यन्त प्रसन्न हुये तथा कृपाबरुथ यानि कृपा के समूह श्रीराम की जयकार करने लगे। प्रभु ने विभीषण को अपनी शरण में ही नहीं लिया अपितु अपने परम भक्तों की श्रेणी में उन्हें जगह दी। रामजी ने मिलते ही विभीषण को लंका का राज्य

दे दिया। जो राज्य रावण ने दस सिरों की भेंट चढ़ाकर बड़ी कठिनाई से प्राप्त किया था वही राज्य प्रभु ने सकुचाते हुये विभीषण को दे दिया। उस समय प्रभु ने कहा था कि हे सखा! यद्यपि तुम्हे राज्य का कोई लोभ नहीं है और न ही तुम राज्य प्राप्त करना चाहते हो लेकिन फिर भी मेरे लिए इस राज्य को स्वीकार करो। क्योंकि तुम मेरी शरण में आये हो और तुमने भक्तिपूर्वक मेरा दर्शन किया है सो उसी दर्शन का फल यह राज्य स्वीकार करो।

जो कोई भी भगवान की शरण ग्रहण करता है भगवान उसे अभय कर देते हैं। चाहे कोई भगवान से विरोध ही क्यों न करता हो लेकिन जब वह समस्त दुराग्रहों को छोड़कर भगवान की शरण में जाता है तो भगवान उसे प्रेमपूर्वक स्वीकार कर लेते हैं। रामायण में इन्द्रपुत्र जयन्त का प्रसंग आता है। एक समय श्रीराम को वन में घूमते देखकर जयन्त को संदेह हुआ कि श्रीराम परमपुरुष परमेश्वर नहीं हो सकते, न ही मां सीता जगजननी जगदम्बा का रुप हो सकती है। मन में यह संदेह लिए जयन्त ने कौए का रुप धारण कर मां सीता के चरणों में चोंच मारकर रक्त निकाल दिया तथा उड़ गया। श्रीराम तो सब कुछ जानने वाले थे। जयन्त की यह धृष्ठता देखकर उन्होंने एक तिनके को अभिमंत्रित करके कौए रुपी जयन्त के पीछे छोड़ दिया। वह तिनका ब्रह्मास्त्र की भांति जयन्त के पीछे लग गया। शस्त्रधारियों में सबसे उत्तम श्रीराम को माना जाता है। भगवद्गीता के विभूतियोग अध्याय में श्रीकृष्ण कहते भी हैं कि शस्त्रधारियों

में मैं राम हूं। ऐसे रामजी के सरकंडे रुपी बाण से बचता हुआ जयन्त अपने पिता इन्द्र के पास पहुंच गया तथा रक्षा के लिए प्रार्थना की। लेकिन इन्द्र ने अपने पुत्र की रक्षा करने में असमर्थता व्यक्त की। तब जयन्त ब्रह्म, विष्णु, शिव सबके पास गया, लेकिन कहीं भी जयन्त की रक्षा न हो सकी। सबने उसे श्रीराम की शरण में ही जाने को कहा। तब कोई और रास्ता न देखकर जयन्त प्रभु की शरण में आ गया। प्रभु ने शरण मांगने पर जयन्त को प्राणदान दे दिया। श्रीराम के प्रति अपराध करके कहीं और शरण न मिलने पर ही जयन्त भयभीत होकर श्रीराम की शरण में गया था। लेकिन फिर भी श्रीराम ने हल्का दंड देकर ही उसे क्षमा कर दिया। अगर हम प्रेमपूर्वक विनयभाव से प्रभु की शरण में जायें तो प्रभु हम पर कितनी कृपा करेंगे।

शरण उसी की लेना उचित है जो समर्थ हो तथा दयालु भी हो। भगवान में ये दोनों गुण हैं। विभीषण ने रावण को समझाया तथा इस तरह उसकी शरण ही मांगी। लेकिन दयाहीनता तथा अभिमान के कारण रावण ने विभीषण को ठुकरा दिया। बाली भी बहुत सामर्थ्यशाली था लेकिन उसने भी अपने भाई सुग्रीव को शरण नहीं दी। इन दोनों मामलों में शरण लेने वाले तो शरण में लिए जाने योग्य थे लेकिन शरण देने वालों में पात्रता नहीं थी।

शरणागति तो भरत ने भी श्रीराम की ली थी। जब रामजी वन को चले गये तो भरत उनको वापिस अयोध्या ले जाने के लिए वन में उनके पास आये।

भरत ने भगवान की शरण लेकर प्रार्थना की कि आप वापिस अयोध्या चलें। उस समय पिता के वचनों का पालन करते हुये श्रीराम ने अयोध्या जाना स्वीकार नहीं किया। तो क्या भरत की शरणागति निष्फल हुई। कदापि नहीं। भरत की शरणागति की भावना का फल यह हुआ कि भगवान ने उनको अपना परम प्रिय माना। हम सभी भगवान को अपना परम प्रिय मानते हैं लेकिन जिसको स्वयं भगवान अपना प्रिय मानें उसके लिए शेष ही क्या रह जाता है!

भगवान की शरण लेने का भी नियम है। इसके लिए संशय का त्याग करना पड़ता है। भगवान की शरण लेकर कभी यह नहीं सोचना कि भगवान मेरा ध्यान रखते भी हैं या नहीं। अगर ऐसा सोच लिया तो नियमों का उल्लघंन हो जाएगा। इससे यह प्रकट होगा कि हमनें पूरी तरह अपने सामर्थ्य का अहंकार छोड़कर भगवान की शरण नहीं ली। 'अगर हम यह सोच लें कि प्रभु मेरा तो कोई सामर्थ्य ही नहीं है, मेरे द्वारा जो कुछ भी शुभ होता है वह तो वास्तव में आप ही कर रहे हैं। मेरा भला क्या है, बुरा क्या है, मुझे नहीं मालूम। मैं तो सर्वथा आपकी शरण में हूं। जैसे आप रखेंगे वैसा रह लूंगा, जैसे आप करवायेंगे, वैसे कर लूंगा। क्योंकि आप भलीभांति जानते हैं कि मेरे हित में क्या है।'

ऐसा विचार करने से ही अपने सामर्थ्य का अहंकार समाप्त होता है। अगर हम ऐसा विचार नहीं करते तो मन में स्वाभाविक रुप से यह विचार आयेगा कि जब मेरे को जैसी जरुरत होगी, वैसा मैं स्वयं ही कर लूंगा। यह 'मैं' ही तो

भगवान की कृपा प्राप्ति में बाधा बनी रहती है। इसलिए एक बार भगवान की शरण ले ली तो कभी भी संशय नहीं करना। क्योंकि संशय से अहंकार पहले सूक्ष्म तथा फिर वृहत्त रुप में प्रकट होता है। भगवान की कृपा पर दृढ़ विश्वास रखें। भगवान ने जो कर दिया, सही ही किया। अगर कोई फायदे का काम हो गया तो भी और अगर नुक्सान का काम हो गया तो भी भगवान की कृपा से ही हुआ, ऐसा मानें। नुक्सान में कृपा क्यों माने? क्योंकि भगवान ने किसी बड़े नुक्सान को टालने के लिए अथवा हमें चेताने के लिए उस नुक्सान को प्रेरित किया। भगवान हमेशा हमारा भला ही करते हैं, इसमें संशय नहीं। सबसे बड़ी बात एक न एक दिन तो भगवान की शरण लेनी ही है, तो अभी क्यों नहीं?

—महेश बातिश, संपादक धर्म विचार

इन्सान

आज मैं अन्जान हूँ, कहते सभी अन्जान हैं।
बदलती इस दुनिया में कौन से इन्सान हैं।।
हर तरफ ही फूट है फरेब बढ़ता जा रहा।
शैतानियत का देख सूरज और चढ़ता जा रहा।।
इज्जत नहीं इक दूसरे की मतलब है अपना हर तरफ।
कौन किसकी सोचता है, किस्सा है अपना हर तरफ।।
आज दुश्मन भाई का भाई होता जा रहा।
देखता हूँ खून को सफेद होता जा रहा।।
आज की पूजा को देख, सब दिखावा हो रही।
धर्म की ये सीख क्यों सब छलावा हो रही।।
क्या सिखाता धर्म ये, दुश्मन बनें इक दूसरे के।
क्या यही इन्सानियत दुश्मन बनें इक दूसरे के।।
फिर क्यों तू फूट के पौधे उगाता जा रहा।
फिर क्यों तू नफरत के फितने जगाता जा रहा।।
क्यों लगाता आग तू, ये तुम्हारा देश है।
कर इन्सान नेकी के काम, गीता का ये उपदेश है।।
याद रख इन्सान ये, इसकी सज़ा तू पायेगा।

लेखा सब देना पड़ेगा, जब वक्त आखर आयेगा।।
उस वक्त न ये बुराईयां काम तेरे आयेंगी।
नेकीयां ही तेरी तुझको स्वर्ग तक ले जायेंगी।।
प्यार हो सबसे तेरा, इसमें ही तेरी शान है।
गर नहीं भगवान हममें, फिर कहां भगवान है।।
तौबा करें हम आज से, सब बुराईयां छोड़ दें।
सद्दी चाहे कुछ कहे, सब से रिश्ता जोड़ दे।।

– वेद प्रकाश सद्दी

नोट : यह कविता 19.12.1977 को मैनें सऊदी अरब में लिखी थी। आज की एकता को देख मुझे इस कविता की याद आ गई।

गज़ल

वे मुरब्बत बन क्यों आंखें चुरा लेते हैं लोग।
दर्द देते हैं तो फिर – दामन छुड़ा लेते हैं लोग।।
ये कहां की दोस्ती है – ये कहां का प्यार है।
लूट कर औरों का घर – अपना सजा लेते हैं लोग।।
किस तरह इन्सानियत – पामाल होती है यहां।
किस तरह से खून – इन्सान का बहा लेते हैं लोग।।
यूँ वजाहर दोस्ती का – है इन्हे दावा जरुर।
साजिशें पर्दे के पीछे – क्यों बना लेते हैं लोग।।
फितना परवाजों ने – जीना दूभर कर दिया यहां।
एक फितने पर – कई फितने जगा लेते हैं लोग।।
जानते हैं खूब हम – तेवर जमाने के मगर।
कुछ नहीं कहते फिर भी – क्यों खफा होते हैं लोग।।
क्या मोहब्बत को हवा– और खून इसको खा गया।
दोस्तों को भी यहां – दुश्मन बना लेते हैं लोग।।
क्या करुँ किससे करुँ – इनकी शिकायत ऐ खुदा।
मैं वफा करता हूँ फिर भी – क्यों खफा होते हैं लोग।।

–फिदा कस्तवाड़ी

मेरा देश

देश मेरा है भारत यारो मैं हां भारत वासी।
शान ऐस दी सब तों ऊँची मेतों कही न जासी।।
इस दे गबरु छैल छबीले, दुनियाँ ते सरदारी।
अल्लड़ नाराँ देश मेरे दियाँ, कैंहदी दुनिया सारी।।
देश मेरा है सब तो सोहना, दुनिया विच निराला।
इस दे अगे लड़ नीं सकदा रानी खाँ दा साला।।
जो कोई अख उठावे इस ते, अख तोड़ के रखीये।
जेकर हथ उठावे इस ते हथ तोड़ के रखीये।।
जीयो अते जीने दो, ऐ है नाआरा साडा।
जेकर जीन न देवे दुश्मन लाइये रगड़ा डाडा।।
साडा देश है प्यारा सानू, इस ते वारे जाइये।
इस दी खातर जान देन नूँ मूलों न घबराइये।।
देश अजादी खातर असां, लखां गवरु वारे।
भगत शिवा जी और लाजपत जान वार गये सारे।।
सरदी गरमी रहे बराबर, मौसम देन नजारे।
हिन्दु, मुसलम, सिख, ईसाई राखी करदे सारे।।

फर्क रहे न देश मेरे विच, मिल के हथ बटाइये।
नाल मशीनां खेती करके अन्न दे ढेर लगाइये।।
पिंडा विच आई खुशहाली, थां थां बिजली जगे।
हो गये सारे दूर अंधेरे, रोज दीवाली लगे।।
घर घर लगे टैलीविज़न, नवीं अजादी आई।
सन्ती पूछे बन्ती नूं अज केहड़ी पिक्चर आई।।
थां थां खुले विद्या केन्द्र पड़दे बालक सारे।
अनपढ़ रहे न देश मेरे विच कहन्दे लीडर सारे।।
पिंड पिंड नू बसां लगीयां, सड़कां जाल बछाये।
देख नजारे जन्नत वाले, धरती उते आये।।
हस्पतालां दा अंत न कोई, रोगी न रह जाये।
बिना इलाजों देश मेरे विच कोई न मर जाये।।
रख नींवा छोटे धंधिया दी, बड़े काम चलाईये।
राकट, टैंक, हवाई जहाज ते एटम बंब बनाईये।।
मालक ते मजदूर बराबर, फर्क रहे न कोई।
जात पात दे बन्धन छड के बनीये भाई भाई।।
देश मेरे दी नार भी हुन, पिछे न रह जावे।
देश उसारी खातर ओ भी मिलके हाथ बटावे।।

सद्दी देश उसारी ते, इक कविता नई बनादे।
विच कतावां लिखियां जेहड़ा राम राज ओ लादे।।

—वेद प्रकाश सद्दी

गोमूत्र

गौ मूत्र का हमारे देश में सदैव विभिन्न तरह से प्रयोग होता रहा है। इसे सतोगुणी रस माना गया है जिससे मन में सात्विक वृत्ति पैदा होती है। इसी कारण यह ऋषि–मुनियों का प्रिय भी रहा है। औषधि के रुप में इसके गुणों से सब परिचित हैं। प्रसव के पश्चात माता को कम से कम दस दिन तक गोमूत्र पिलाने की हमारी परम्परा है जो कि इसके औषधीय गुणों को प्रकट करती है। अनेक शोधों से ज्ञात हुआ है कि गोमूत्र कई असाध्य बीमारियों को दूर करने की सामर्थ्य रखता है।

मात्र 20 मिलीग्राम गोमूत्र प्रातः सांय पीने से अनेक रोगों से मुक्ति मिल जाती है। आयुर्वेद में गोमूत्र को स्वास्थयरक्षक एवम् उदर विकारों को दूर करने वाला बताया गया है। गोमूत्र में पोटाशियम, कैल्शियम, मैग्नेशियम, क्लोराइड, यूरिया, फास्फेट, अमोनिया, क्रिएटिन आदि खनिजों के अतिरिक्त विटामिन एवं स्वर्णाक्षर भी पाया जाता है जिससे इसके औषधीय गुणों में वृद्धि होती है।

गोमूत्र सेवन विधि : जहां तक हो सके जंगल में घास चरने वाली, स्वस्थ एवं देसी गाय का मूत्र प्रयोग में लाना चाहिए। रोगी एवम् गर्भवती गाय का मूत्र प्रयोग में नहीं लाना चाहिए। यथासंभव ताजा गोमूत्र ही प्रयोग करना चाहिए। गोमूत्र कई दिनों तक खराब नहीं होता। इसे मिट्टी, कांच एवम् स्टील के बर्तन

में ही रखना चाहिए।

रोगों का उपचार :

पेट के रोग : 3 ग्राम बड़ी हरड़ के चूर्ण को 50 ग्राम गोमूत्र के साथ लेने से पेट के रोग दूर हो जाते हैं।

वातरोग : सौंठ का चूर्ण 3 ग्राम और 50 ग्राम गोमूत्र के सेवन से सभी वात रोग दूर हो जाते हैं।

बवासीर : 2 रत्ती (250 मिलीग्राम) हींग के साथ गोमूत्र को लेना चाहिये।

टी.बी. : गोमूत्र का नियमित सेवन करने से यह रोग चला जाता है।

मोटापा : प्रातः 50 ग्राम गोमूत्र शहद मिलाकर पीने से मोटापा कम हो जाता है।

नेत्ररोग : तांबे के बर्तन में काली बछिया का मूत्र एकत्र कर लें। यह आंखों की एक अच्छी दवा है। इसे सुबह शाम आंखों में डालें। आंखों की खुजली, धुंधलापन, रतौंधी एवम् आंखों की कमजोरी दूर हो जायेगी।

इसके अतिरिक्त पुराना जुकाम, दमा, उच्च रक्तचाप, एसीडिटी, मधुमेह, पीलिया आदि रोगों में गोमूत्र लाभदायक होता है। गोमूत्र की मालिश से सभी चर्मरोग दूर हो जाते हैं।

—वेद प्रकाश सद्दी

ब्रह्मा ब्राह्मण्ड ब्राह्मण

एक जोत महाशक्ति से प्रकट हुई जिससे ब्रह्मा, विष्णु तथा महेश प्रकट हुये। ब्रह्मा ने सृष्टि को पैदा करने, विष्णु ने सृष्टि को संभालने और महेश ने विनाश का काम संभाला। मगर सृष्टि को अज्ञान से ज्ञान की ओर ले जाने वाली महत्वपूर्ण जिम्मेवारी ब्राह्मण ने संभाली। पृथ्वी पर जब–जब जुल्म हुआ तब तब भगवान ने अवतार लिया। भगवान परशुराम का अवतार मानव रक्षा, दुष्टों का संहार करने और पापी राजाओं को दंड देने के लिए हुआ। शस्त्र उठाकर पापियों को मारकर भगवान ने मानव को ज्ञान और भक्ति का मार्ग दिखलाया। उन्होंने पृथ्वी को 21 बार पापियों से मुक्त किया।

ब्राह्मण ने कभी किसी से लिया नहीं अपितु उसने संसार को दिया ही है। जैसे भगवान परशुराम जी ने श्रीरामचन्द्र को उनका दायित्व संभालते हुये वन में जाने से पहले सीता स्वयंवर में शिवजी द्वारा दिया हुआ धनुषबाण दिया। भगवान श्रीकृष्ण को सुदर्शन चक्र देकर पापियों का नाश करवाया। भगवान परशुराम ने अपने पास कुछ भी न रखते हुये जीती हुई सारी पृथ्वी अपने गुरु कश्यप ऋषि को दान कर दी तथा स्वयं मन्दराचल पर्वत पर तप करने चले गये। इस तरह वे सदा के लिए अमर हो गये।

भगवान परशुराम सर्वव्यापी हैं। यदि कोई सच्चे मन से याद करता है तो

उसके सभी कार्य पूर्ण होते हैं। मुझे लिखते हुये प्रसन्नता हो रही है कि भगवान परशुराम मंडी गोबिन्दगढ़ में बसे हुये हैं। नगर में परशुराम मन्दिर भगवान परशुराम की अनुकम्पा से ब्राह्मण समाज तथा श्री देवी दयाल, जो कि हमारे प्रधान भी हैं, के सहयोग से पूर्णता की ओर अग्रसर है। श्री देवी दयाल ने अपना तन–मन–धन सब कुछ परशुराम मन्दिर को अर्पित कर दिया है। जिससे मन्दिर का काम पूरा होने को ही है। इसके लिए सभी सहयोगियों को साधुवाद।

– विनोद वशिष्ट, आदर्श नगर, मंडी गोबिन्दगढ़।

व्रतों से अधिक लाभ कैसे लें?

व्रत धर्मपालन का साधन होने के साथ–साथ शरीर के लिए भी लाभदायक हैं। व्रत करने से पाचन क्रिया को आराम मिलता है तथा जठराग्नि (पेट में भोजन को पचाने वाली आग) तीव्र होती है। पाचन क्रिया के अनियमित होने से उत्पन्न कई तरह की शारीरिक व्याधियों में व्रत करने से शीघ्र लाभ मिलता है। पूर्णरुप से व्रत करने में कुछ नहीं खाया जाता, जबकि ज्यादातर व्रतों में फलाहार की छूट होती है। मात्र दूध या फल या फलों के रस के आश्रित हो भी व्रत रखे जा सकते हैं। ऐसे व्रत शारीरिक दृष्टि से काफी लाभदायक होते हैं। व्रत संयम का ही दूसरा नाम है। इसलिए व्रत करने से मन को संयमित रखने में बहुत सहायता मिलती है। यदि आपका मन बहुत चंचल है तो व्रत वाले दिन मन बहुत कुछ खाने को करेगा। घर में कोई आयोजन हो गया या बाहर किसी आयोजन में चले गए तो पकवानों की खुशबु से ही मन चलायमान हो जाएगा। लेकिन धीरे–धीरे मन में इतनी दृढ़ता आ जाएगी कि आप स्वयं पर नियन्त्रण रखने की योग्यता हासिल कर लेगें। कब क्या खाना है क्या नहीं इस पर नियन्त्रण आ जाएगा। आज के युग में जबकि डाक्टरों ने रोग के कारण किसी का मीठा तो किसी का नमकीन बन्द करवा रखा है ऐसी नियन्त्रण की योग्यता निःसंदेह स्वयं को स्वस्थ रखने के लिए अपरिहार्य है। अगर आप मात्र शारीरिक दृष्टि से ही व्रत रख रहे हैं तो आप पर सिर्फ खाने–पीने के बन्धन ही लागू होते हैं लेकिन यदि आप

आध्यात्मिक उन्नति या किसी विशेष मनोरथ की सिद्धि के लिए व्रत रखते हैं तो आपको इनसे सम्बन्धित नियमों का पूरी तरह से पालन करना होगा तभी अभीष्ट फल की प्राप्ति होगी। व्रत वाले दिन जप करें, आध्यात्मिक साहित्य का अध्ययन करें तथा व्यर्थ वार्तालाप से बचे रहें। आप कोई भी व्रत रख रहे हो सबसे ज्यादा जरुरी है मन का संयम। संयम एक तो इस दृष्टि से हो गया कि खाने–पीने को मन न ललचाये, दूसरे इस दृष्टि से कि आपका अपने मन की वृत्तियों पर भी नियन्त्रण रहे। व्रत वाले दिन स्नान कर व्रत के लिए जिस प्रकार निर्धारित है वैसे पूजा–ध्यान करें तथा सात्विक व्यवहार रखें। बहुत अधिक शारीरिक कार्य या बहुत अधिक बोलने का इस दिन त्याग करें। शांत रहकर भगवान का स्मरण करें। व्रत मात्र भौतिक रुप से आहार का त्याग करने से ही नहीं बल्कि आध्यात्मिक रुप से भी अनुकूल आचरण करते हुये सिद्ध करना चाहिए। काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार आदि वृत्तियों का इस दिन यथासंभव त्याग रखें। इन वृत्तियों पर संयम रखना भी व्रत है। मैथुन व्रत वाले दिन वर्जित है। यदि कोई व्यक्ति आपको अत्यधिक अप्रसन्न करने वाला कार्य भी कर दे तो क्रोध न करें, अपने मन में, वाणी में, कार्यों में क्रोध न आने दें। सब कुछ ईश्वर का ही है, मैं भी और ईश्वर सर्वोपरि हैं ऐसा विचार कर लोभ, मोह, अहंकार से भी यथासंभव बचे रहें। इस तरह आचरण करते हुए आपको स्वयं में विशेष सात्विकता का अनुभव होगा तथा आप जो भी जप, ध्यान, पूजन, दानादि इस मनःस्थिति में करेंगे उसका कई

गुणा फल आपको मिलेगा।

शास्त्रों में विभिन्न मनोरथों की सिद्धि के लिए विभिन्न व्रत निधार्रित किये गये हैं। ग्रह शान्ति के लिए सम्बन्धित ग्रह के दिन व्रत रखें। इसके अतिरिक्त एकादशी, चतुर्थी, त्रयोदशी, नवरात्रों के तथा और भी त्यौहारों के व्रत हैं। जिसकी जैसी श्रद्धा हो तथा जैसे फल की प्राप्ति की आकांक्षा हो, वैसा व्रत रख सकता है। उपनिषद्ों में अन्न को श्रेष्ठ कहा गया है, क्योंकि साधारण बद्धजीव के प्राण अन्न के ही आश्रित हैं। बहुत अधिक समय तक अन्न ग्रहण न करने से शरीर में निर्बलता आती है। इसलिए इतना अवश्य ध्यान रखना चाहिए कि नियमित रुप से सप्ताह में एक से अधिक व्रत न रखा जाये तो अच्छा है। नवरात्रों के समय या प्रथानुसार किसी अन्य समय साल में एक या दो बार इसका अपवाद हो सकता है।

व्रत करने के लिए अपनी शारीरिक योग्यता का भी अवलोकन कर लें। रोगी व्यक्ति को या जिसे रोग से उभरे कुछ ही समय हुआ हो तथा अत्यधिक कमजोर शरीर वाले व्यक्ति को व्रत नहीं रखने चाहिए। ऐसे में लाभ की अपेक्षा हानि की अधिक संभावना रहती है। ऐसे व्यक्तियों को चाहिए कि आध्यात्मिक लाभ या अपनी अभीष्ट सिद्धि के लिए अन्य साधनों का आश्रय लें। शरीर ईश्वरप्राप्ति के लिए साधनस्वरुप है, इसलिए इसकी उचित देखभाल तथा रक्षा करना भी व्रत के समान है।

— महेश बातिश

भगवती माता रेणुका जी

संसार भर में विष्णु के जितने अवतार हुये हैं उन अवतारों की माताओं को देवी का दर्जा प्राप्त नहीं हुआ। महारानी कौशल्या भगवान राम की जननी हैं। देवी देवकी भगवान कृष्ण की माता है। उनके तप की कोई सीमा नहीं, वे महानतम नारियां हैं। तभी तो सृष्टि को रचने वाले विधाता ने इन माताओं की कोख से जन्म लेने का वरदान दिया। यह महिलायें देवी–तुल्य ही हैं, इन्हें बारम्बार प्रणाम है।

ईश्वर के अवतार की माता, रेणुका ही केवल मात्र देवी है, जिनकी सांझ सवेरे आरती उतारी जाती है। जिनके नाम से राम सरोवर अब रेणुका सरोवर (झील) है, जिसमें स्नान करने सहस्त्रों श्रद्धालु जाते हैं। मान्यता है कि झील में सदैव माता रेणुका का वास है, वह पाप नाशिनी हैं। भवगती रेणुका को यह शक्ति तथा पद इसलिए प्राप्त है क्योंकि वह भगवती पार्वती का अंश हैं। महर्षि जगदग्नि में शिवाँश है।

इक्ष्वाकु वंश में एक प्रसिद्ध राजा थे प्रसेन्नजित, इन्हें रेणु नाम से भी जाना जाता था। इनकी अत्यन्त गुणवती कन्या थी, उनका नाम कामली था। रेणु की पुत्री ही रेणुका कहलाती थी। इनका यही नाम प्रसिद्ध है। महर्षि जमदग्नि से इनकी शादी हुई। शादी के पश्चात कुछ दिन वह राजमहल में रहे। रेणुका के साथ अपने गृहस्थ जीवन में पदार्पण करते हुये जमदग्नि ने अवश्य सोचा होगा

कि एक राजकन्या होते हुये क्या वह माता सत्यवती तथा पिता ऋचीक की सेवा कर सकेगी? क्या वह राजसी सुखों के अभाव में रह सकेगी? पति की चिन्ता देखकर रेणुका ने कहा कि मैं आपसे शादी करके धन्य हो गई। मैं आपको विश्वास दिलवाती हूं कि मैं आपके द्वारा दिखाये गये मार्ग पर चलकर सुखी जीवन व्यतीत करुँगी तथा आपको कोई शिकायत नहीं होगी।

उस समय देश क्षत्रियों के आतंक से पीड़ित था। उस समय बड़ा प्रबल नक्षत्र था। जगत् का हितकारी व्यक्तित्व जन्मने का संयोग था। यह सौभाग्य माता रेणुका को प्राप्त हुआ। माता ने एक दिव्य पुत्र को जन्म दिया। जिसका नाम राम रखा गया। आगे चलकर वही बालक भगवान परशुराम के नाम से विख्यात हुआ।

—वेद प्रकाश सद्दी

मंडी गोबिन्दगढ़ इतिहास की नजर में

मंडी गोबिन्दगढ़ जिसे लोहा नगरी भी कहते हैं, में इतनी स्टील रोलिंग मिलें हैं जितनी सारे एशिया में किसी दूसरे स्थान पर नहीं। इसके पूर्व इतिहास पर नज़र डालें तो पता लगेगा कि इस नगरी को बनाने में किसका महत्वपूर्ण योगदान है।

छठी पातशाही श्री गुरु हरगोविन्द राय जी ने यहां आकर इस स्थान को पवित्र किया। 1902 में महाराजा नाभा सरदार हीरा सिंह जी ने उनकी आमद को एतिहासिक बनाने के लिए इस स्थान को चुना। यहां एक शहर बनाने की योजना बनाई। शहर का नाम गुरु जी के नाम पर गोबिन्दगढ़ रखा गया। इसके लिए उन्होंने एक अंग्रेज आर्कीटैक्ट को बुलाया जिसने आकर जगह की पहचान की। पानी के सैंपल लिये और ऐसा स्थान चुना जो बाढ़ आदि से बचा रहे। जब हर तरह से उसकी तस्सली हो गई तो उसने एक बढ़िया नक्शा तैयार करके राजा को दिया और नये शहर की बुनियाद रखी। राजा ने एक हस्पताल और बढ़िया रैस्ट हाऊस बनवाया जो उस जमाने में मशहूर था। रैस्ट हाऊस में तरह–तरह के फलदार वृक्ष लगवाये। शहर को इस ढ़ंग से बनवाया कि वह चारों ओर से सुरक्षित हो। शहर में चार बड़े और चार छोटे गेट बनवाये गये। इनके ऊपर लैंप लगवाये गये। गेटों पर चौकीदार नियुक्त किये गये। एक लेडी

पार्क और स्कूल के लिए स्थान छोड़ा गया जो आजकल लड़कियों का स्कूल है।

महाराजा नाभा हाथी पर आकर लोगों की फरियाद सुना करते थे। इसके बाद अधिकारियों को उनके दुःख दूर करने के लिए कहते थे।

इस शहर का पानी इतना बढ़िया था कि महाराजा नाभा अपने पीने के लिये हर रोज पानी घोड़ा गाड़ी से मंगवाया करते थे। इस शहर में उस समय चार चौधरी थे जिनकी बात खुद महाराजा भी नहीं टालते थे। ये चौधरी लोगों में बहुत लोकप्रिय थे तथा लोग इनका बहुत सम्मान भी करते थे। ये चौधरी थेः चौधरी शान्ति स्वरुप, चौधरी जगन्नाथ, चौधरी मोहम्मद बख़्श, चौधरी सालिग राम।

लेडी पार्क लोगों में बहुत मशहूर था। उसमें एक पीपल और पीपली का वृक्ष था। उस समय लोगों ने पीपल और पीपली की शादी की जो बहुत चर्चा का विषय बनी। इस पार्क में एक बोहड़ का 100 साल पुराना वृक्ष भी था जो बाद में नगर कौंसल ने कटवा दिया।

किसी समय यह शहर रुईं की बड़ी मंडी था। उसके बाद यह कपड़े की थोक मंडी रहा। बाद में यह शहर लोहे के लिए मशहूर हुआ। सबसे पहले यहां गंगा राम आसा राम रोलिंग मिल लगी। आज तो यहां 500 के करीब रोलिंग मिलें हैं। यहां से माल तैयार हो पूरे भारत में भेजा जाता है। भगवान करे यह नगरी बसती रहे और पूरे भारत के साथ ही पूरे विश्व में अपना नाम रोशन

करती रहे।

—वेद प्रकाश सद्दी
(उपरोक्त विवरण लोगों से सुनने के आधार पर)

गाँव भैरोंपुर (भगवान परशुराम मन्दिर)

धन्य धन्य भगवान परशुराम जी

भगवान परशुराम जी का एक मन्दिर गांव भैरोंपुर में है। यह गाँव सरहिन्द–चुन्नी सड़क जो चंडीगढ़ को जाती है उस पर तीन मील के फासले पर स्थित है। इस मन्दिर की सेवा भगत प्रकाश जी कर रहे हैं। इस गांव के निवासी भाई जोती राम जी बाबा जी के सेवक थे। उन्होंने कुलू (हिमाचल) वाले बाबा के मन्दिर में जाकर विनती करी कि मेरी जमीन मुझे मिल जाये तो यहां महापुरुषों का मन्दिर बनवाऊँगा। बाबा जोती में मंदिर बनाने की हिम्मत नहीं थी तो उन्होंने कहा कि पाँच ईंटे रख दे। मन्दिर निर्माण आराम से होगा। भाई जोती राम ने ऐसा ही किया तो उसे उसकी जमीन मिल गई। आज से 12 साल पहले भगत प्रकाश ने एक कमरा बनवाया। रविवार के दिन भगवान परशुराम की संगत आती है और सोमवार को सुबह भगत प्रकाश सिंह से बात करके जाती है। जो व्यक्ति इस मंदिर में श्रद्धापूर्वक आता है उसकी सभी मनोकामनायें पूर्ण होती हैं।

रविवार को आई संगत जो सोमवार को जाती है को बाबा भगवान परशुराम द्वारा प्रसाद मिलता है। प्रसाद में इलायची, बादाम, सौगी, लौंग आदि होते हैं। इस मन्दिर में भगवान परशुराम द्वारा दिया गया कोहाड़ा, चिमटा, पअै आदि अब भी मौजूद हैं। भगवान परशुराम द्वारा भेजा गया चित्र अब भी मंदिर

में मौजूद है। इस मन्दिर में संत हंसाली वालों की ओर से 20 जनवरी 2005 को अखंड पाठ, रामायण, भगवतकथा आदि का भोग डाला गया। भगवान परशुराम की जयन्ती यहां धूमधाम से मनाई जाती है।

जय भगवान परशुराम

भक्त प्रकाश चन्द जी
सेवादार
गाँव भैरों पुर
अनुवादक : वेद प्रकाश सद्दी

ब्राह्मण कौन?

ब्राह्मण को सर्वश्रेष्ठ माना गया है। लेकिन ब्राह्मण कौन है, इसका निर्धारण भी परमावश्यक है। क्या प्राणी ब्राह्मण है या फिर जाति ब्राह्मण है या देह ब्राह्मण है या फिर ज्ञान ब्राह्मण है या कर्म अथवा धार्मिकता ब्राह्मणत्व का निर्धारण करते हैं?

प्राणी अथवा जीव ब्राह्मण नहीं हो सकता। क्योंकि पहले हो चुके, वर्तमान के तथा भविष्य के सब जीव समान हैं। सब अपने बन्धनों में बंधे हुये देह धारण करते रहते हैं इससे जीव ब्राह्मण नहीं हो सकता।

तो क्या देह ब्राह्मण है? सब जीवों की देह समान होती है। वही आंख, कान, नाक, मुंह, हाथ, पैर आदि होते हैं। जब शरीर से प्राण निकल जाते हैं तो पुत्र पिता के शरीर को अग्नि देता है। ऐसा करने से शरीर को जलाने पर पुत्र को ब्रह्महत्या का दोष नहीं लगता। इसलिए शरीर के आधार पर भी ब्राह्मणत्व का निर्धारण नहीं किया जा सकता।

तो क्या रंग से ब्राह्मण की पहचान होती है? ब्राह्मण सदैव गोरे, क्षत्रिय सदैव लाल, वैश्य सदैव पीले ही हों, ऐसा तो निश्चित नहीं हो सकता। इसलिए रंग भी ब्राह्मण नहीं है।

तो क्या विभिन्न जातियां ब्राह्मण हैं? अलग–अलग जातियों से ऋषियों का

जन्म हुआ है। इससे जाति को भी ब्राह्मण नहीं कहा जा सकता।

तो क्या ज्ञान ब्राह्मण हो सकता है? ब्राह्मणों के अतिरिक्त अन्य वर्णों में भी परम ज्ञानी हुये हैं। इससे ज्ञान को भी ब्राह्मण नहीं कह सकते।

तो क्या कर्म ब्राह्मण है? सभी प्राणियों के कर्मों में समानता है। संचित, प्रारब्ध तथा क्रियमाण कर्मों के सिद्धान्त सभी पर समान रुप से लागू होते हैं। जैसे कर्म कोई करता है वैसा ही फल भोगता है। इससे कर्म के आधार पर ब्राह्मणत्व की व्याख्या नहीं की जा सकती।

तो क्या धर्म का आचरण करना ब्राह्मणत्व है? धर्म का आचरण तो अन्य जातियों वाले भी करते हैं। वे भी दान–पुण्य आदि करते रहते हैं। इसलिए धर्म से भी ब्राह्मणत्व का निर्धारण नहीं हो सकता।

तो ब्राह्मण कौन है? ब्राह्मण वह है जिसमें अद्वैत भावना का विकास हो गया हो। अद्वैत यानि भेद–बुद्धि शेष न रह गई हो। जो जाति–गुण–क्रिया के बन्धन से मुक्त हो चुका हो यानि जिसमें अपनी जाति का अभिमान न बचा हो, सत्व–रज–तम गुण जिसे बांध न सके तथा कर्मों के प्रति जिसमें आसक्ति मिट गई हो, वह ब्राह्मण है। जो सत्य, ज्ञान, आनन्द से युक्त हो, काम, राग–द्वेष से मुक्त हो, अहंकार का जिसने त्याग कर दिया हो, वह ब्राह्मण है। जो आत्मा के सत–चित्त–आनन्द स्वरुप को जान गया हो, वह ब्राह्मण हैं। यहां तक वज्रसूचिका उपनिषद् का आधार पूर्ण हुआ।

अब अगर ब्राह्मण को श्रेष्ठ माना गया है तो शास्त्रों में ब्राह्मण के लिए बहुत कड़े नियमों को भी बताया गया है। ब्राह्मण को अगर भूदेव यानि पृथ्वी का देवता कहा जाता है तो उसके लिए नियम भी उसी के अनुसार कठिन हैं। ब्राह्मणों के लिए छः मुख्य कर्म बताये गये हैं, ये हैं: यज्ञ करना, यज्ञ करवाना, विद्या पढ़ना, विद्या पढ़ाना, दान लेना तथा दान देना। ब्राह्मणों के लिए जीविका के साधनों में भी बहुत कड़ाई है। शास्त्रों में ब्राह्मणों को जीविका के लिए पाँच तरह की वृत्तियों की आज्ञा है, ये हैं – ऋत, अमृत, मृत, सत्यानृत और प्रमृत।

1. ऋत : यह वृत्ति सबसे उत्तम है, इसको कपोत वृत्ति भी कहते हैं। इसके अनुसार खेतों में फसल काटने तथा मंडियों में उसको तोलने के बाद जो अन्न पृथ्वी पर पड़ा हो वह ब्राह्मण का है। यह अत्यधिक कठिन वृत्ति है तथा अनुभव किया जाये तो आज के समय में बहुत व्यवहारिक भी नहीं है।

2. अमृत : इसके अनुसार न किसी से मांगना है और न ही किसी वस्तु के लिए किसी से कोई इशारा करना है। जो कुछ स्वयं प्राप्त होता जाये उसमें से भी निर्वाहमात्र के साधन ही ग्रहण करने हैं।

3. मृत–वृत्ति : लोगों को तिथि, मुहुर्त्त आदि बताकर जो कुछ मिल जाये उसी से निर्वाह करना मृतवृत्ति है।

4. सत्यानृत्त : व्यापार करके जीविका कमाना सत्यानृत्त वृत्ति है।

5. प्रमृत्त : ब्राह्मण खेती भी कर सकता है लेकिन इसके लिए उसे कठिन नियमों

का पालन करना पड़ेगा।

संक्षेप में कहें तो दूसरों के मार्गदर्शन तथा अपने दोषों को दूर करने की सामर्थ्य ही श्रेष्ठ ब्राह्मण के लक्षण हैं।

– महेश बातिश, संपादक धर्म विचार

भक्ति–शक्ति के प्रतीक भगवान् श्री परशुराम

जमदग्नि सुतो भूत्वा रामः शस्त्रभृतां वरः।
महीं सुक्षत्रियाज्ञक्रे तस्मै रामात्मने नमः।।

अर्थात् जिन शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ जमदग्नि पुत्र श्री परशुराम ने पृथ्वी को श्रेष्ठ क्षत्रियों (शासकों) से सम्पन्न किया–उन्हें नमस्कार है।

नाब्रह्मक्षत्रमृध्नाति नाक्षत्रं ब्रह्मवर्धते।
ब्राह्म–क्षात्रज्ञ सम्पृळमिहायुज च वर्धते।।

ब्राह्म तेज के बिना क्षात्र तेज तथा क्षात्र तेज के बिना ब्राह्म तेज की वृद्धि नहीं होती। इसलिए ब्राह्म तथा क्षत्रिय दोनों तेजों के संयोग से ही वृद्धि संभव है।

ब्राह्म तेज अध्यात्म प्रधान होने से भक्ति तथा क्षात्र तेज बाह्य बल प्रधान होने से शक्ति का प्रतीक है। इन दोनों के सम्यक प्रयोग से ही सामाजिक समरसता तथा सुशासन संभव है। भगवान परशुराम इन दोनों अर्थात् भक्ति तथा शक्ति की साकार प्रतिमा हैं।

तेज पुंज महर्षि ऋचीक के वरद प्रसाद के फलस्वरुप उत्त्पन्न महर्षि जमदग्नि के पुत्रों में कनिष्ठ पुत्र परशुराम आशुतोष भगवान शिव के परम भक्त, पितृभक्त, अतुल बल–बुद्धि से सम्पन्न परम त्यागी विप्रवंशावतंस अस्त्र–शस्त्र

विद्या निष्णात् परम तपस्वी प्रवेशावतार के रुप में विख्यात हैं। उनका शैशव का नाम केवल 'राम' था परन्तु भगवान शिव द्वारा प्राप्त परशु के साथ परशुराम पड़ा। 'परशु' विशेष प्रतीक का द्योतक है। यह वह शस्त्र है जो निकटतम शत्रुओं के संहार हेतु हाथ में धारण किये हुये ही प्रयोग किया जाता है। बाहरी शत्रुओं के हरण हेतु शक्ति प्रतीक परशु नाम का शस्त्र परशु तथा आंतरिक शत्रुओं (काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद्, मात्सर्य आदि) के दमन हेतु ज्ञान–विज्ञानाधारित जिस भावभक्ति का प्रयोग किया है– वह भी परशु ही है। भगवान परशुराम इन दोनों भावों (भक्ति तथा शक्ति) से ओतप्रोत महान व्यक्तित्व के धनी हैं। व्यक्तित्व की पूर्णता, समाज की समरसता, सुशासन की सुव्यवस्था तथा वास्तविक सुख की उपलब्धि हेतु इन दोनों गुणों का विकास अनिवार्य भी है।

भगवान परशुराम भगवान शंकर के अनन्य भक्त होने के साथ पितृभक्ति की अप्रतिम मिसाल हैं। महर्षि जमदग्नि इनके पिता भी थे तथा गुरु भी। उनकी आलोकिक शक्ति को परशुराम पहचान चुके थे, इसलिए उनके हर आदेश के पालन को वे अपना धर्म मानते थे, क्योंकि वे जानते थे कि उस आदेश में मर्यादा के किसी अंश का संरक्षण ही निहित रहता है।

जलक्रीड़ारत चित्ररथ पर दृष्टि पड़ने से विकृतमानस माता रेणुका को निष्पाप करने के लक्ष्य से पिता द्वारा मातृवध हेतु आदेश का जब अन्य भाईयों ने पालन नहीं किया तो परशुराम ने अविलम्ब उस आदेश का पालन कर दिया

क्योंकि वे पिता की आध्यात्मिक शक्ति से परिचित थे। वैसा हुआ भी, जब पिता ने पुत्र की भावना से द्रवित होकर वर मांगने को कहा तो परशुराम ने मातृभक्ति तथा भ्रातृप्रेम का परिचय देते हुये माता के पुनर्जीवित होने, घटित घटनाओं की विस्मृति तथा भ्राताओं की जड़ता निवृत्तिपूर्वक पूर्वस्थिति की उपलब्धि का वर मांगा कर अपने मर्यादारक्षक सर्वहितकारी स्वरुप का ही परिचय दिया।

मूलतः भगवान परशुराम ऋषि परम्परा के मूर्धन्य पूरोधा हैं परन्तु सामयिक विषम परिस्थितियों में संत्रस्त जन–जीवन में पुनः धर्माधारित शासन व्यवस्था को स्थापित करने हेतु भगवान विष्णु के छठे प्रवेशावतार के रुप में विख्यात हैं। तभी तो रामावतार के समय परीक्षोपरान्त अपना वैष्णव धनुष राम को सौंप कर स्वयं तपस्या हेतु प्रस्थान कर जाते हैं और चिरंजीवी रह कर आज भी तपस्यारत हैं।

त्रेतायुग में महर्षि जमदग्नि के समय निरंकुश आततायी राजा सहस्रार्जुन कार्तवीर्य का शासन था। दत्तात्रेय महाराज से अलौकिक वर प्राप्त करके वह महान अहंकारी आततायी बन बैठा। महर्षि जमदग्नि के आश्रम में अपनी सेना समेत ठहरने के अवसर पर कपिला गौ की कृपा से चमत्कारी अद्‌भुत आतिथ्य को प्राप्त करके लोभग्रस्त हो उस गाय का ही हरण करने का निश्चय कर लेने, आश्रमवासियों पर अत्याचार करने, नारी जाति की अवमानना करने, ऋषिवध तक का कुकृत्य करके जब वह दुष्टता की सब हदों को पार कर गया तब भगवान परशुराम ने अकेले ही उसका तथा अन्य आततायी क्षत्रियों का संहार

कर करके जीती गई पृथ्वी को महर्षि कश्यप को प्रदान करके जिस अलौकिक शक्ति तथा त्यागभाव का परिचय दिया है, वह निःसंदेह अप्रतिम है। केरल में सागर को प्रतिबन्धित करके स्थलनिर्माण, राजस्थान में उच्चतर शिखिर स्थापन आदि कला कौशल में भगवान परशुराम जी की अलौकिक शक्ति का स्पष्ट परिचय मिल जाता है। भगवान परशुराम का कण्टकशोधनात्मक कार्य कितना विपुल था, यह महाभारत आदि पुराणों में वर्णित है। वे शक्ति के अप्रतिम भंडार थे। इसका परिचय हमें अधोलिखित कतिपय प्रसंगों के तुलनात्मक विवरण से मिल जाता है :–

क) भगवान राम ने ताड़का, सुबाहु, मरीच, विराध, बाली, खर–दूषण, त्रिशरीरा, कुम्भकर्ण, रावण आदि राक्षसों का वध समरांगण मं किया। श्रीकृष्ण ने बाललीलाओं में अलौकिक शक्ति चमत्कार से पूतना, शकटासुर आदि को सैन्य समूह में न मारकर विचित्र परिस्थितियों में उनका वध किया। अन्य अवतारों में वाराह ने हिरण्याक्ष, नृसिंह ने हिरण्यकशिपु तथा मतस्य ने शंखासुर को अपनी लीला से मारकर मर्यादा स्थापित की। परन्तु एकमात्र भगवान परशुराम ही ऐसे अवतार हैं जिन्होंने अकेले ही विशाल सेनाओं वाले आततायी राजाओं का इक्कीस बार आमने–सामने के संग्राम में संहार किया और धर्म की मर्यादा स्थापित की।

ख) भगवान राम का सबसे बड़ा प्रतिद्वन्दी रावण था जो कि अत्यन्त बलशाली

राक्षसराज था जिसका वध करने के लिए राम को असंख्य वानरों, भालुओं की सेना तैयार करके छियासी दिनों तक लम्बा युद्ध, चौदह दिनों तक विश्रामपूर्वक युद्ध, बहत्तर दिनों तक मारकाट करते हुये आठ दिनों तक लगातार संग्राम में जूझना पड़ा। यह वही रावण था जिसे सहस्रार्जुन कार्तवीर्य ने अपनी हयशाला में लम्बी अवधि तक कैद करके रखा था और जिसे पोलस्तय ने दया करके छुड़वाया था। उस कार्तवीर्य को उसकी सेना समेत भगवान परशुराम ने दो घड़ी की अल्प अवधि में ही धराशायी कर दिया। यही तो उनकी अपार शक्ति का प्रमाण है।

ग) भगवान परशुराम में एक अन्य गुण के प्रमाण मिलते हैं कि उन्होंने अपनी शक्ति का प्रदर्शन न केवल निज पितृहन्ता कार्तवीर्य को मारने में ही किया बल्कि निज अपराध न करने वाले लोकपीड़क दुष्ट राजाओं का इक्कीस बार संहार करके पुनः समस्त पृथ्वी को दानस्वरुप कश्यप ऋषि को देकर तपसाधना में रहने का संकल्प किया। अन्य अवतार जहां निजकार्य निष्पत्ति के बाद निजधाम सिधार गये, भगवान परशुराम आज भी भारत भूमि पर तपस्यारत विराजमान हैं।

इन कुछ प्रसंगों से भगवान परशुरामजी महाराज की भक्ति तथा शक्ति का कुछ आभास मिल जाता है। भगवान परशुरामजी ब्राह्मण समाज के आराध्य इष्टदेव हैं। ब्राह्मण समाज का कर्त्तव्य बन जाता है कि उनके चारित्रिक, अध यात्मिक, मर्यादित आदर्शों पर चलने का संकल्प लेकर अपनी खोई हुई अस्मिता

तथा प्रतिष्ठा को प्राप्त करें जिसका उल्लेख इस प्रकार से हुआ है

एतद्देश प्रसूतस्य सकाशादग्र जन्मनः।
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथ्व्यां सर्वमानवाः।।

– चरणदास शास्त्री